लोकतन्त्र विशेषांक

अपराजिता

अंक 18 2018-19

संरक्षिका

डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

मुख्य सम्पादिका

डा० अनुपमा गर्ग

सह सम्पादिका

डा० अलका आर्य

सम्पादन सहयोग

डा० अस्मा सिद्दीकी

आवरण एवं अंतः सज्जा

डा० अलका आर्य

छात्र सम्पादिका

कु० कौसर जहाँ, बी.ए., VI सेम० **कु० अदीबा, बी.एससी., VI सेम०**

NAAC Accredited - B

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (स्थापित 1966)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक मण्डल की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कार्यालय सहयोगी
श्री अनुज सिंघल
श्री निशांत पंडित

कम्प्यूटर कार्य
श्रीमति नीतू तायल

प्रकाशक
एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स पी. जी. कॉलेज,
रुड़की - 247 667
दूरभाष : 01332-262705
ई-मेल : ssd.degree@gmail.com

मुद्रक :- श्री आदीनाथ एन्टरप्राइज़ेज, 240/2, पूर्वा दीन दयाल, रुड़की मो० 9927536168

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

नवोत्थान की प्रणेताः वर्तमान प्रबंध समिति

श्री अजय कुमार गर्ग अध्यक्ष, व्यापारिक परिवार से सम्बन्धित, 01.07.2012 से प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष निर्वाचित, कुशल प्रशासक एवं अनुशासन प्रिय।

श्री दिनेश गुप्ता उपाध्यक्ष, जून 2003 से मई 2008 तक उपसचिव रहे, जून 2008 से उपाध्यक्ष पद पर आसीन, मृदुभाषी सरल स्वभाव, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण हेतु सदैव तत्पर।

श्री सुनील तायल सचिव, जून 2003 से मई 2008 तक सदस्य प्रबन्धसमिति, जून 2008 से उपसचिव पद पर निर्वाचित, पेशे से इंजीनियर व व्यवहार कुशल

श्री सौरभ भूषण कोषाध्यक्ष, जून 2004 से कोषाध्यक्ष के पद पर आसीन, सरल स्वभाव एवं अनुशासन प्रिय युवा कोषाध्यक्ष महाविद्यालय के विकास के साथ ही वह अन्य शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों में रहते हुये सामाजिक हितों में कार्य कर रहे हैं।

श्री अंकित सिंघल सदस्य, जुलाई 2012 से सचिव प्रबन्धसमिति के पद पर निर्वाचित हुए युवा सचिव पेशे से कम्प्यूटर इन्जीनियर, कुशल प्रशासक आधुनिक सोच एवं महाविद्यालय को उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर ले जाने हेतु सदैव तत्पर।

श्री तेज बहादुर सदस्य, मई 1983 से सदस्य प्रबन्धसमिति, अनुभवी कुशल प्रशासक एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनके सुझाव हमेशा प्रबन्धसमिति के लिए उपयोगी रहे हैं।

श्री अरविन्द गुप्ता सदस्य, मार्च 1997 से सदस्य कार्यकारिणी, व्यावसायिक पृष्ठभूमि, कुशल प्रशासक, अनुशासन प्रिय।

श्री गोपाल गुप्ता सदस्य, जून 2008 से सदस्य कार्यकारिणी के रूप में निर्वाचित हुए। प्रबन्धसमिति को इनका सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है।

श्री सुशील गर्ग सदस्य, जून 2012 से सदस्य प्रबन्धसमिति के रूप में निर्वाचित हुए। संरक्षक सदस्य के नाते विशिष्ट भूमिका निभा रहे हैं।

श्री योगेश सिंघल, सदस्य जौलाई 2016 से सदस्य प्रबन्धसमिति के रूप में महाविद्यालय के विकास सक्रिय योगदान दे रहे है और नगर की कई संस्थाओं से जुड़े हुए है।

डा० अर्चना मिश्रा – प्राचार्या
श्री अनुज कुमार – गैर शिक्षक प्रतिनिधि
डा० अनुपमा गर्ग – शिक्षक प्रतिनिधि
डा० कामना जैन – शिक्षक प्रतिनिधि

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sri Sanatan Dharam Prakash Chand Kanya Snatkottar Mahavidyalaya
Roorkee, affiliated to Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University, Uttarakhand as

Accredited

with CGPA of 2.53 on four point scale
at B grade
valid up to January 18, 2021

Date : January 19, 2016

Director

श्रीमती बेबी रानी मौर्य
राज्यपाल, उत्तराखण्ड

राजभवन
देहरादून - 248 003
दूरभाष : 0135-2757400
0135-2757403

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूड़की द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता-2018-19' का प्रकाशन 'लोकतंत्र' विशेषांक के रूप में किया जा रहा है।

महाविद्यालयों में छात्राओं को निरंतर सीखने, ज्ञान प्राप्त करने, विकास करने, आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं ताकि वे सशक्त नागरिक बन सकें । शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है तथा उनमें आत्मविश्वास बढ़ाती है। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय एवं वैश्विक विकास में सहायक है। हमें नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा ताकि सशक्त समाज व आधुनिक भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सके। मुझे आशा है कि महाविद्यालय की पत्रिका के माध्यम से छात्राओं को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों हेतु उचित मंच प्राप्त होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

बेबी रानी

(बेबी रानी मौर्य)

डा. धन सिंह रावत
राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकाल,
दुग्ध विकास

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष सं. : 23
फोन : (0135) 2666410 (का.)
फैक्स : (0135) 2666411

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूड़की, जनपद हरिद्वार उत्तराखण्ड की वार्षिक पत्रिका **"अपराजिता"** वर्ष 2018–19 का प्रकाशन लोकतंत्र विशेषांक के रूप में कर रहा है, जिसमें विद्यार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को एक मंच पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी तथा उसमें उत्कृष्ट लेखों का समावेश होगा, जो निश्चित रूप से विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिरूचियों एवं उनकी उपलब्धियों के लिए प्रेरणादायक तथा जन सामान्य के लिए मार्ग दर्शक का कार्य करेगी।

अतः महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"अपराजिता"** के सफल प्रकाशन हेतु प्रकाशक मण्डल को हार्दिक शुभकामनायें।

(डॉ0 धन सिंह रावत)

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

फोन नं0 : 05946–240555,240666,240777
Mail-highereducation.director@gmail.com

डा0 (एस0सी0पन्त)
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 13399 / 2018–19
दिनांक 29 मार्च 2019

संदेश

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपका महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका '**लोकतंत्र**' वर्ष 2018–2019 का प्रकाशन करने जा रहा है ।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण , ज्ञानवर्धक एव सारगर्भित पाठ्य सामाग्री प्रकाशित की जायेगी जिसमें छात्र–छात्राओं का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन–दर्शन , कार्य –संस्कृति और अध्ययन –रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा । छात्र–छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

' **लोकतंत्र**' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य , सम्पादक मण्डल , प्राध्यापक, कर्मचारियों और छात्र–छात्राओं को मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

मंगलकामनाओं सहित,

डा0 (एस0सी0पन्त)

सेवा में,

प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र,
कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूडकी,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY, SRINAGAR (GARHWAL)-246174, UTTARAKHAND, INDIA
(A Central University)
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)–246174, उत्तराखण्ड, भारत
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Prof. Annpurna Nautiyal
Vice-Chancellor
कुलपति

Ph. No. : 01346-250260
Fax No. : 01346-252174

Ref. No. : VC/HNBGU/84/2019

Dated :31/08/2019

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूड़की, उत्तराखण्ड** अपनी वार्षिक पत्रिका **"अपराजिता"** का प्रकाशन **'लोकतंत्र'** विशेषांक के रूप में करने जा रहा है, इस हेतु समस्त प्रकाशन मण्डल को हार्दिक शुभ कामनायें प्रेषित करती हूँ। किसी भी संस्थान की पत्रिका में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों या क्रिया कलापों का समावेश हो तो निसंदेह शिक्षा की सार्थकता बढ़ जाती है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय पत्रिका में छात्रोपयोगी महत्वपूर्ण एवं रोचक पाठ्य–सामग्री की प्रचुरता रहेगी तथा छात्र–छात्राओं के लिये मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

पत्रिकाएं किसी भी शैक्षणिक संस्था के छात्र–छात्राओं की रचनात्मक क्षमता को सार्थक मंच प्रदान करती है और आशा करती हूँ कि महाविद्यालय पत्रिका **"अपराजिता"** में उच्चकोटि के आलेखों एवं रचनाओं का समावेश करेगा, जिससे छात्र–छात्राओं की सृजनशीलता एवं प्रतिभाग को प्रदर्शित करने का सुदृढ़ मंच प्रदान हो सके।

मैं पत्रिका **"अपराजिता"** के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(अन्नपूर्णा नौटियाल)

डॉ. अर्चना मिश्रा
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूड़की – 247 667, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Website : www.hnbgu.ac.in E-mail : vc@hnbgu.ac.in

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali

डॉ. महावीर अग्रवाल
प्रति-कुलपति

Established by Uttarakhand State Legislature Under the University Of Patanjali Act No. 4, Year 2006 & Recognized by UGC

दिनांक- 31.07.2019

शुभाशंसा

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला देवभूमि उत्तराखण्ड का प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान 'श्री सनातन धर्म प्रकाशचन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय' रूड़की, गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

'लोकतन्त्र' शीर्षक से प्रकाश्यमान यह विशेषांक पाठकों के लिये और विशेष रूप से होनहार छात्राओं के लिए विशेषरूप से उपयोगी सिद्ध होगा। भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। इस देश में लोकतन्त्र की जड़े इतनी गहरी हैं कि किसी भी प्रकार की आन्धी लोकतन्त्र के इस वृक्ष को उखाड़ नहीं सकती। हमारी प्रशासन व्यवस्था लोकतन्त्र की आधारशिला पर खड़ी है। अत: देश के युवकों/युवतियों को लोकतन्त्र के स्वरूप को ठीक से जान लेना आवश्यक है। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति महान् दर्शनिक डॉ. राधाकृष्णन् ने लोकतन्त्र के विषय में कहा था-

''लोकतन्त्र केवल एक राजनैतिक व्यवस्था नहीं वरन् जीने का एक ढंग है, जिसमें जाति, धर्म, वंश आर्थिक स्तर आदि में अन्तरों के होते हुए भी सबको समान अधिकार प्राप्त होते हैं।''

लोकतन्त्र की पवित्रता, सर्वजन कल्याणकारिता पर हमारी स्वतन्त्रता प्रतिष्ठित है। इस अंक में विदुषी प्राध्यापिकाओं एवं मेधाविनी छात्राओं के विशिष्ट शोध-पत्र प्रकाशित होंगे। लोकतन्त्र के इस विशिष्ट विशेषांक के लिये मैं महाविद्यालय की विदुषी प्राचार्या आदरणीया डॉ. अर्चना मिश्रा जी, सम्पादक मण्डल की सदस्याओं एवं महाविद्यालय के प्रबन्धक वर्ग को हृदय के अन्तस्थल से शत-शत शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित कर रहा हूं।

गम्भीर चिन्तन, अनुसंन्धान एवं लेखन की यह स्वस्थ परम्परा छात्राओं के सर्वांगीण विकास में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

मंगलाभिलाषी

(प्रो. महावीर अग्रवाल)
प्रति-कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

Camp Office: Patanjali Yogpeeth-1, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar, Pin-249405, Uttarakhand
Res. : Vedalok, 22, Nand Vihar, P.O.-Gurukul Kangri, Haridwar, Pin-249404, Uttarakhand
Ph. : 01334-273000, **Mob. :** +91-9719004452, 9412918949, **E-mail :** mahavir_gkv@yahoo.co.in, provc@uop.edu.in, **Website :** www.uop.edu.in

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

सन्देश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष महाविद्यालय पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन 'लोकतंत्र विशेषांक' के रुप में हो रहा है। आजादी के बाद देश में समता, स्वतंत्रता और बंधुता के सिद्धान्तों पर निर्मित संविधान को अपनाया गया। आज सात दशकों की विकास यात्रा में देश ने लोकतांत्रिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए विश्व में एक मिसाल कायम की है लेकिन कहीं इसमें निहित श्रेष्ठ मूल्यों में क्षरण भी दृष्टिगोचर हो रहा है। आशा है प्रस्तुत अंक हमारी बालिकाओं की रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें लोकतंत्र के विविध पहलुओं पर विचार–मंथन का भी सुअवसर प्रदान करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या व संपादक–मंडल को मेरी अग्रिम शुभकामनायें।

दिनांक 20–01–2019

अजय गर्ग
(अध्यक्ष प्रबंध समिति)

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

आशीर्वचन

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि महाविद्यालय पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन 'लोकतंत्र विशेषांक' के रुप में हो रहा है।

महाविद्यालय पत्रिका छात्राओं की सृजनशीलता को अभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करने के साथ-साथ समकालीन परिप्रेक्ष्य में देश व समाज की ज्वलंत-समस्याओं पर सार्थक विमर्श का सराहनीय कार्य भी कर रही है।

आशा है हमारी छात्रायें शिक्षा, खेलकूद व अन्य गतिविधियों का निरन्तर विशिष्ट प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगी। मैं प्राचार्या, सम्पादिका मंडल व समस्त महाविद्यालय परिवार को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

दिनांक 05-02-2019

दिनेश गुप्ता
(उपाध्यक्ष प्रबंध समिति)

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष महाविद्यालय पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन 'लोकतंत्र विशेषांक' के रुप में हो रहा है। पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय में अध्ययनरत नई पीढ़ी को लोकतंत्र जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विचार व्यक्त करने का अवसर मिलेगा। यही युवा पीढ़ी देश की भावी कर्णधार हैं।

पत्रिका निरंतर विविध ज्वलंत सामाजिक–राजनीतिक महत्व के विषयों का चयन कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों के प्रति जागरुक करने का सराहनीय कार्य कर रही है।

पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो और हमारी बालिकायें सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर एक नवीन भारत के निर्माण में सार्थक योगदान दें यही कामना है। सार्थक विषय चयन व पत्रिका सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या व संपादिका मंडल को साधुवाद व शुभकामनायें।

दिनांक 20–01–2019

सुनील कुमार तायल
(सचिव प्रबंध समिति)

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

सन्देश

मुझे जानकर हर्ष हुआ कि इस वर्ष भी हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन 'लोकतंत्र' विशेषांक के रुप में होने जा रहा है। लोकतंत्र शब्द सुनने में जितना छोटा प्रतीत होता है उतना है नहीं। इसका विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। लोकतंत्र 'सबका साथ और सबका विकास' की भावना से ही मजबूत होता है। जब–जब सामाजिक एकता पर प्रहार हुआ तब–तब लोकतंत्र कमजोर हुआ है। लोकतंत्र दो शब्दों से मिलकर बना है लोक+तन्त्र। लोक का अर्थ है लोग और तंत्र का अर्थ है शासन अर्थात एक ऐसी शासन प्रणाली जिसमें सत्ता जनता के पास हो, सरकार लोगों की हो, जनता द्वारा निर्वाचित हो और जनता के हित के लिए काम करती हो। लोकतंत्र में हर व्यक्ति की भागीदारी होती है इसलिए लोकतंत्र प्रणाली एक महान प्रणाली है।

अन्त में अधिक ने कहते हुए मैं इतना ही कहूँगा कि अपने देश के लोकतंत्र को सुरक्षित व मजबूत बनाये रखने के लिए देश के ऊपर सर्वोच्च न्यौछावर करने की भावना को जीवित रखना होगा।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और महाविद्यालय की प्राचार्य एवं संपादक मण्डल को शुभकामनायें देता हूँ।

S. Bh

सौरभ भूषण
(कोषाध्यक्ष)

शुभकामना – संदेश

आसेतु हिमालय अनेक धर्मों, भाषाओं, वर्णों, रीति-रिवाजों की बहुरंगी विरासत सहेजे भारत की एक समृद्ध लोकतांत्रिक परंपरा है। हमारी संस्कृति में समाहित शांति, समन्वय और एकात्मता के सनातन मूल्यों ने इसे विविधता को आत्मसात् करने की अन्तर्निहित शक्ति दी है। स्वतंत्र भारत के स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्शों पर निर्मित संविधान ने देश के प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार देने के साथ ही उसके मूलभूत अधिकारों व कर्तव्यों को भी परिभाषित किया है। संविधान निर्माताओं का स्वप्न एक अखंड, श्री संपन्न व शक्तिसंपन्न राष्ट्र की स्थापना करना था।

विश्व को जोड़ने का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का स्वर्णिम सूत्र भारत ने ही दिया था। आज उसी भारत में अलगाववाद की दरारें दुर्भाग्यपूर्ण हैं। लोकतंत्र की सात दशकीय यात्रा का वर्तमान पड़ाव आत्मावलोकन का है। हमें स्वयं से पूछना है कि इस दौरान क्या हम एक संप्रभु राष्ट्र के नागरिक के रूप में संविधान में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों को हृदय से आत्मसात् कर पायें हैं? क्या हमने अपने नागरिक कर्तव्यों का जिसके अन्तर्गत एक बेहद महत्वपूर्ण कर्तव्य एक उत्तरदायी व योग्य सरकार के चयन का भी है, सम्यक् निर्वहन कर सके है? क्या एक अखण्ड भारत गणराज्य के नागरिक के रूप में हम अपनी प्रादेशिक, जातीय और धार्मिक पहचान के ऊपर एक 'सच्चा भारतीय' होने की पहचान को वरीयता देते हैं?

वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में ये प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है और पत्रिका के प्रस्तुत अंक की केन्द्रीय विषयवस्तु के रूप में 'लोकतंत्र' का क्रम-चयन इन्हीं प्रश्नों के समाधान की ओर एक कदम है।

समाज में किसी भी बदलाव को लाने में युवा पीढ़ी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने दो दशकों के निर्बाध प्रकाशनकाल में 'अपराजिता' ने देश-समाज के अनेक ज्वलंत मुद्दों पर प्रकाशित विशेषाकों के माध्यम से नई-पीढ़ी को समाज व राष्ट्र के सरोकारों से जोड़नें की दिशा में सराहनीय कार्य किया है। किसी पत्रिका का सतत् प्रकाशित होते रहना तो महत्वपूर्ण है ही पर उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है उसका सार्थक बने रहना और 'अपराजिता' इस कसौटी पर सदैव खरी उतरी है। साधनों की कमी के बावजूद 'साधना' के प्राचुर्य ने इसे इसका वर्तमान स्वरूप प्रदान किया है। महाविद्यालय के प्रगतिकामी प्रबधतंत्र के सुयोग्य मार्गदर्शन, प्रबुद्ध शिक्षिका वर्ग व उत्साही छात्रावृंद का इसमें अनवरत् योगदान रहा है।

आशा है वर्तमान 'लोकतंत्र विशेषाक' महाविद्यालय में अध्ययनरत नई पीढ़ी को भारतीय लोकतंत्र की समृद्ध परंपराओं व वैश्विक गौरव से परिचित कराने के साथ ही वर्तमान में इसके समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के प्रति भी जागरुक कर समाधान की दिशा तय करने की प्रेरणा देगा। लोकतंत्र संबंधी लेखों के साथ ही ज्ञान विज्ञान की विविध विषयक रचनाओं से सज्जित इस गुलदस्ते की महक लम्बे समय तक पाठकों के साथ रहेगी और उनका स्नेह, सहयोग व शुभेच्छा हमारे प्रयासों को लगातार नवीन ऊर्जा प्रदान करते रहेंगें।

सार्थक विषय चयन और कुशल संपादन के लिए संपादिका मंडल को हार्दिक शुभकामनायें।

डा० अर्चना मिश्रा
प्राचार्या

अपनी बात

इस वर्ष हम सभी लोकतन्त्र का महापर्व मना कर चुके हैं और इतनी बड़ी लोकतान्त्रिक व्यवस्था को बनाने में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी हम सब भारतीयों के लिये गर्व की बात है।

भारतीय दृष्टिकोण हमेशा से लोकतन्त्रवादी रहा है। इसके साक्ष्य हमें प्राचीन सहित्य, सिक्कों और अभिलेखों से प्राप्त होते हैं। आज इस शब्द का प्रयोग हम राजनीतिक संदर्भ में करते हैं लेकिन व्यापक रूप से लोकतन्त्र का सिद्धान्त समूहों एवं संगठनों के लिये भी संगत है। लोकतन्त्र विचारों के मन्थन की ऐसी प्रक्रिया है जहाँ पक्ष-विपक्ष दोनों खुली बहस के बाद अमृत रूपी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, जो सभी के लिये हितकर है।

संविधान की पहली पंक्ति 'हम भारत के लोग'..... हमारी समावेशी प्रकृति की साक्षी है। 'हम' में सर्व का भाव है जो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की ओर इंगित करता है। लोकतन्त्र में प्रत्येक नागरिक की भूमिका एक जागरुक प्रहरी की है क्योंकि 'लोक' की जागरुकता से 'तंत्र' गलत निर्णय नहीं ले सकता, मनमानी नहीं कर सकता। इस पत्रिका के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं से भी उम्मीद की जाती है कि वह भी अपने आचार-व्यवहार, विचार एवं कर्म से आपसी एकता और बंधुता को अक्षुण्ण रखते हुये लोकतन्त्र के सजग प्रहरी बनेंगे।

इस आशय को दृष्टिगत रखते हुये अपराजिता पत्रिका के इस अंक को 'लोकतन्त्र' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। प्रस्तुत अंक महाविद्याल परिवार की उच्चाकांक्षाओं, शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर उपलब्धियों को समेटे हुये उत्साही छात्राओं एवं प्रबुद्ध प्राध्यापिकाओं की मौलिक एवं रचनात्मक सामग्री का समावेश करता है। विगत वर्षो में राष्ट्रभाषा हिंदी, पर्यावरण, प्रजातंत्र, विज्ञान, भारतीय संस्कृति, नारी सशक्तीकरण, उत्तराखण्ड, शिक्षा, विश्वशान्ति, स्वर्ण जयंती, कला एवं संस्कृति, एक भारत श्रेष्ठ भारत आदि सम-सामयिक विषयों पर आधारित विशेषांकों का प्रकाशन हो चुका है।

महाविद्यालय का विवेकशील एवं प्रगतिशील प्रबंधतंत्र, प्रबुद्ध प्राचार्या, ज्ञानी एवं कर्तव्यनिष्ठ प्राध्यापिका वर्ग के सहयोग तथा श्रेष्ठतम कार्य निष्पादन के लिये पूर्णरूपेण कटिबद्ध संपादक मंडल के समर्पित प्रयासों और युवा छात्राओं के सृजनात्मक विचारों से जीवंत अपराजिता निरंतर उच्च शिखर का आरोहण कर रही है।

आशा है प्रस्तुत अंक पाठकवृंद की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। पत्रिका के कलेवर और विषयवस्तु के परिमार्जन हेतु सुविद् एवं स्नेही पाठकगणों के सुझावों का संपादक मंडल सदैव एवं सहर्ष स्वागत करेगा।

धन्यवाद।

Anupma Garg

डा० अनुपमा गर्ग

THE CONSTITUTION OF INDIA

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a **SOVEREIGN DEMOCRATIC REPUBLIC** and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity;

and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

अनुक्रम

संदेश	पृष्ठ संख्या
सम्पादकीय	
1. महाविद्यालय की प्रगति आख्या	डा॰ अर्चना मिश्रा
1. 'हम भारत के लोग .....'	डा॰ अर्चना मिश्रा
2. युगपुरुष – अटल	डा० अलका आर्य
3. लोकतंत्र और हिन्दी साहित्य	डा० अंजू शर्मा
4. हमारा लोकतंत्र	
5. भारतीय प्रजातन्त्र में महिलाओं की भूमिका	कु० मनीषा राठौर
6. धर्म बनाम राजनीति	कु॰ आफरीन
7. भारतीय संविधान की मूलप्रति के सज्जाकार : नंदलाल बोस	डा० अलका आर्य
8. आर्थिक लोकतंत्र की अनूठी यात्रा	कु0 अवनी सैनी
9. हिंदी काव्यधारा में राष्ट्रवाद की भावना	डा० सीमा राय
10. निबंध प्रतियोगिता के संपादित अंश	कु० शाहिमा, कु० नजमा
11. हाथ बढ़ायें, धरा को रहने योग्य बनायें विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता के चयनित अंश	कु0 कहकशा मलिक
12. भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी	कु0 बोहती सैनी
13. डिजिटलीकरण एवं भारत	कु॰ इलम
14. परीक्षा पर चर्चा	कु० मनीष, क०अल्पना, कु० रितिका
15. मैं हूँ एक चित्रकार/बेटी जन्म (कविता)	डा० भारती शर्मा, सुश्री अंजली प्रसाद
16. हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर	कु० साक्षी
17. लोकतन्त्र की चुनौतियाँ	कु० अल्पना
18. लोकतन्त्र	कु० आफरीन
19. आर्थिक लोकतन्त्र का आगाज	कु० हेमा नारंग
20. बापू के नाम पत्र	डा० कामना जैन
21. गाँधी के सपनों का देश/दुर्दशा....। (कविता)	डा० अलका आर्य
22. वर्तमान दौर में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता	कु० जेबा, कु० आफरीन
23. मनुज धर्म धरा का मर्म	कु० रिचा, कु० सबिया
24. गाँधी जी का आर्थिक चिंतन	कु० अवनि सैनी
25. बसुधंरा पुकारती केवल इंसान को	कु॰ सोनल राना
26. हिमालयी कुम्भ–नन्दा राजजात सांस्कृतिक यात्रा	डा0 किरन बाला
27. वर्तमान चुनौतियाँ और ललित कला	डा0 अर्चना चौहान
28. जीवन की परिभाषा हिंदी	कु॰ प्रगति सिंह
29. यह लोकतन्त्र है (कविता)	डा० अर्चना मिश्रा
30. Freedom of Expression in Domecratic India	Ms. Deepa Mahala
31. Contribution of Dr. A.P.J. Abdul Kalam	Ms. Vaishnavi Sharma
32. Economic Thoughts of Gandhiji	Ms. Hema Narang
33. Balance for Better	Ms. Noor-e-Daraksha, Ms. Rushda
34. Don't Create Limitations	Ms. Ayushi, Ms. Vanshika
35. Role of Women in Democratic India	Ms. Kavita
36. सुनहरे भविशय की ओर	
37. समाचारों में महाविद्यालय	

महाविद्यालय की गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय मेरिटलिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएँ

क्र. सं.	नाम	कक्षा	वर्ष	अंक प्रतिशत	विश्वविद्यालय मेरिट लिस्ट में स्थान
1.	कु० कामिनी	एम०ए० चित्रकला	2018	84.3	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
2.	कु० चन्दा	एम०ए० चित्रकला	2017	87.2	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
3.	कु० सायरा	एम०ए० राज० विज्ञान	2017	87.1	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
4.	कु० दीपमाला	एम०ए० चित्रकला	2017	86.5	**द्वितीय**
5.	कु० निशा	एम०ए० चित्रकला	2017	82.8	**पंचम**
6.	कु० रितु गोस्वामी	बी०एस०सी०	2017	77.94	**दशम**
7.	कु0 छाया त्यागी	बी0ए0	2016	78.00	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
8.	कु0 रीतू रानी	बी0ए0	2016	76.00	तृतीय
9.	कु0 अर्चना	एम०ए० चित्रकला	2016	85.97	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
10.	कु0 आंचल कुमारी	एम०ए० चित्रकला	2016	84.50	तृतीय
11.	कु0 शिल्पा राय	बी0एस0सी0	2016	81.33	पंचम
12.	कु0 मीनाक्षी त्यागी	एम0ए0 राज0विज्ञान	2014	73.00	चतुर्थ
13.	कु० परवीन	एम०ए० राज0विज्ञान	2013	73.67	द्वितीय
14.	कु० मीनाक्षी	एम०ए० चित्रकला	2013	86.00	द्वितीय
15.	कु० दिव्या	एम०ए० चित्रकला	2013	85.71	तृतीय
16.	कु० शिवानी	एम0ए0 चित्रकला	2013	85.13	चतुर्थ
17.	कु० प्रिया प्रधान	एम०ए० चित्रकला	2012	80.80	द्वितीय
18.	कु० अन्जुम आरा	एम०ए० चित्रकला	2012	79.30	चतुर्थ
19.	कु० ललिता देवी	एम०ए० चित्रकला	2012	79.10	पंचम
20.	कु० निभा राठी	एम०ए० राज०विज्ञान	2011	68.78	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
21.	कु० प्रीति रानी	एम०ए० चित्रकला	2011	77.60	द्वितीय
22.	कु० शिवानी सैनी	एम०ए० चित्रकला	2010	83.60	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
23.	कु० मीनाक्षी सिन्धु	एम०ए० चित्रकला	2010	80.10	द्वितीय
24.	कु० उपासना	एम०ए० चित्रकला	2010	77.30	चतुर्थ
25.	कु० प्रीति शर्मा	बी०एससी०	2009	79.78	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
26.	कु० चीनू त्यागी	एम०ए० चित्रकला	2009	79.10	द्वितीय
27.	कु० शिखा कैंथ	एम०ए० चित्रकला	2009	77.50	पंचम
28.	कु० शकुन सिंह	एम०ए० चित्रकला	2008	83.63	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
29.	कु० नीतू	एम०ए० चित्रकला	2008	81.63	तृतीय
30.	कु० मोनिका पंवार	बी०एससी०	2007	79.89	द्वितीय

महाविद्यालय की प्रगति आख्या (2018-2019)

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की नगर के अग्रणी शैक्षणिक संस्थान के रुप में छात्राओं के शैक्षणिक भविष्य हेतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान अभिवृद्धि, सन्तुलित एवं समन्वित व्यक्तित्व विकास, आधुनिक वैज्ञानिक युग के साथ राष्ट्र निर्माण में योगदान देते हुए महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कला संकाय (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) तथा विज्ञान संकाय में लगभग 1476 छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के साथ पाठ्येत्तर कोर्सेज के लिए भी निरन्तर संस्था प्रयासरत है।

कला संकाय में सन् 1966 से स्नातक स्तर पर सात विषय हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत साहित्य, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, चित्रकला, राजनीति विज्ञान है। विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित) में 1998 से रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा सन् 2002 से कम्प्यूटर साइंस तथा 2012 से माइक्रोबायलॉजी विषयों में स्नातक शिक्षा का प्रबन्ध है।

प्रतिवर्ष की भांति गत सत्र 2018-2019 में भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उच्च कोटि का रहा है-

बी०ए० प्रथम वर्ष (I, II Sem)	82.4%	बी०एससी ० प्रथम वर्ष (I, II Sem)	66.48%
बी०ए० द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	76.49%	बी०एससी ० द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	68.75%
बी०ए० तृतीय वर्ष (V, VI Sem)	99.25%	बी०एससी ० तृतीय वर्ष (V, VI Sem)	80.44%
एम०ए० चित्रकला प्रथम वर्ष (I, II Sem)	100%	एम०ए० राजनीति विज्ञान प्रथम वर्ष (I, II Sem)	100%
एम०ए० चित्रकला द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	100%	एम०ए० राजनीति द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	100%

(अंक सुधार परीक्षाफल प्रतीक्षित)

छात्रा संघ चुनाव / विषय परिषद गठन (2018-2019)

दिनाँक 8-09-2018 को महाविद्यालय परिसर में प्रशासन द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक श्रीमती रीतू सैनी (समाज कल्याण अधिकारी, रुड़की) तथा मुख्य चुनाव अधिकारी डा० अनुपमा गर्ग, अनुशासन समिति प्रभारी डा० कामना जैन सदस्य, डा० अर्चना चौहान, सुश्री अन्जलि प्रसाद, डा० उमारानी, श्रीमती शैली सिंघल, श्रीमती पल्लवी सिंह एवं समस्त प्रवक्तावृन्द के कुशल दिशा निर्देशन में छात्रा संघ चुनाव शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुए।

छात्रा संघ चुनाव में अध्यक्ष पद हेतु 4, उपाध्यक्ष एवं सचिव पद हेतु नामांकित 2 प्रत्याशियों के मध्य कड़ा मुकाबला हुआ। जिसमें 192 मत प्राप्त कर कु० कौसर जहाँ (B.A. V Sem) अध्यक्ष, 270 मत पाकर कु० नूर-ए-दरक्शाँ (B.Sc. V Sem) उपाध्यक्ष, तथा 341 मत पाकर कु० चेतना (B.A. V Sem) सचिव पद पर निर्वाचित हुई। कु० प्रज्ञा (B.Sc. V Sem) सह-सचिव तथा कु० शमा (B.A. V Sem) कोषाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुई। छात्रा कार्यकारिणी सदस्य के रुप में कु० सना (B.A. V Sem) तथा कु० मेघा राठी (B.Sc. III Sem) का चयन किया गया।

छात्रा संघ चुनाव में निर्वाचित/विजयी समस्त पदाधिकारियों को दिनांक 08-09-2018 को आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण जी की अध्यक्षता में प्राचार्या डा० अर्चना मिश्रा द्वारा पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

विषय परिषद गठन - छात्रा संघ चुनाव के उपरांत समस्त विभागों के विषय परिषद का गठन कर सत्र पर्यन्त चलने वाली विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार की। तदुपरांत विषय परिषद पदाधिकारियों को उनका कार्यभार सौंपा गया।

विषय-परिषद, कक्षा एवं विभागीय गतिविधियाँ

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

महाविद्यालय की विभिन्न विषय परिषदों द्वारा निम्न विषयों पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई- Freedom of Experssion in Democratic India (अंग्रेजी विभाग) हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना (हिन्दी विभाग), लोकतंत्र की चुनौतियाँ (समाजशास्त्र विभाग), लोकतंत्रः सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था (राजनीति शास्त्र विभाग), आर्थिक लोकतंत्र का आगाज (अर्थशास्त्र विभाग), भारत में कला का बदलता स्वरुप (चित्रकला विभाग) तथा लोकतंत्र में धर्म निरपेक्षता (संस्कृत विभाग)। उक्त लोकतंत्र विषय पर आधारित निबंध प्रतियोगिता में छात्राओं की सक्रिय प्रतिभागिता रही तथा छात्राओं की उत्कृष्ट एवं चयनित रचनाओं को इस पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है।

- 26 जुलाई 2018 को **राजनीति शास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग** की ओर से '**कारगिल विजय दिवस**' मनाया गया। जिसमें छात्राओं ने दिशाभित्ति पत्रिका के माध्यम से कारगिल शहीदों की गाथा एवं कारगिल युद्ध से सम्बंधित मुख्य घटनाओं पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त छात्राओं ने कविता पाठ, देशभक्ति गीत एवं विचार प्रस्तुति द्वारा यह बताने का प्रयास किया कि हमारे सुरक्षाकर्मी/सैन्यदल जाति, धर्म और भाषा जैसी व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा राष्ट्र की सुरक्षा, एकता और अखण्डता को सर्वोपरि रखते है।
- दिनांक 14 सितम्बर 2018 को **हिन्दी दिवस** के उपलक्ष में **हिन्दी विभाग** द्वारा हिन्दी साहित्य में लोकतांत्रिक स्वर विषय पर '**विचार प्रतियोगिता**' एवं हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की स्मृति में उनकी कविताओं का पाठ कराया गया।
- दिनांक 2 नवम्बर 2018 को हिन्दी विभाग द्वारा महात्मा गांधी स्मरणोत्सव वर्ष के उपलक्ष में '**पत्र लेखन प्रतियोगिता**' का आयोजन किया गया। इसके साथ ही गांधी जी 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर विभिन्न कवियों और साहित्यकारों द्वारा गांधी जी पर रचित **कविताओं का पाठ** भी कराया गया।
- **समाज शास्त्र विभाग** द्वारा बी.ए. VI Sem की छात्राओं हेतु 'धर्म और समाज' तथा बी.ए. IV Sem की छात्राओं हेतु 'सामाजिक सिद्धान्त' विषय पर डा॰ किरन बाला के दिशा निर्देशन में **विचार प्रस्तुति** कराई गई।
- पर्यावरण सरंक्षण कार्यक्रम में अन्तर्गत डा॰ किरन बाला के दिशा निर्देशन में '**मेरा पेड़ हमारा पर्यावरण**' गतिविधि का सफल संचालन हुआ।
- **राजनीति विज्ञान विभाग** द्वारा SEC पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निम्न लिखित विषयों पर **सर्वेक्षण** कराया गया- (1) घरेलू हिंसा एवं रोकथाम (2) मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक जागरुकता (रुड़की नगरीय क्षेत्र में) (3) कन्या भ्रूण हत्या के कारण एवं निवारण कानून (4) शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता (5) तीन तलाक कानून एवं मुस्लिम ग्रामीण समाज का दृष्टिकोण (6) विवाह की अनिवार्यता के संदर्भ में प्रशिक्षित बालिकाओं का दृष्टिकोण इत्यादि।
- **राजनीतिशास्त्र विभाग** की ओर से बी.ए. V Sem की छात्राओं द्वारा 15 अगस्त 2018 को एक **नाट्य प्रस्तुति** के माध्यम से शहीद ऊधम सिंह के जीवन एवं चरित्र की कुछ मुख्य घटनाओं को उजागर करने का प्रयास किया। उक्त प्रस्तुति डा॰ कामना जैन के दिशा-निर्देशन में सम्पन्न हुई।
- दिनाँक 2 नवम्बर 2018 को आयोजित **गांधी स्मृति चित्रशाला** में गांधी जी के जीवन के विविध महत्वपूर्ण और यादगार पहलुओं को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

- दिनाँक 27 से 29 सितम्बर 2018 के मध्य बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं हेतु **त्रिदिवसीय गांधी अध्ययन सत्र** महाविद्यालय के पुस्तकालय में चलाया गया।
- **राजनीति विज्ञान विभाग** (एम.ए.) द्वारा आयोजित **विचार प्रस्तुति** में छात्राओं ने विविध समसामयिक विषयों जैसे आरक्षण की राजनीति, असम नागरिकता संशोधन विधेयक एवं किसानों की समस्याएं इत्यादि पर अपनी प्रस्तुति **PPT Presentation** के द्वारा दी।
- डा॰ शालिनी वर्मा तथा सुश्री परवीन (अंशकालिक प्रवक्ता-राजनीति विज्ञान विभाग) के दिशा निर्देशन में एम.ए. राजनीति शास्त्र की छात्राओं को विभिन्न सम-सामयिक विषयों जैसे अपराधों की श्रेणी में हरिद्वार जनपद-एक अध्ययन, बदलते सामाजिक वातावरण के महिलाओं की स्थिति-एक विश्लेषण, भारत में अन्तर्राज्य जल विवाद इत्यादि पर **लघु शोध प्रबंध** कराये गये।

अर्थशास्त्र विभाग द्वारा दिनाँक 4 अक्टूम्बर 2018 को छात्राओं ने 'ब्लैकमनी' तथा 'नकदहीन अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ते कदम' विषय पर **PPT Presentation** के माध्यम से प्रस्तुति दी।

- दिनाँक 28 अक्टूबर 2018 को महात्मा गाँधी का आर्थिक चिंतन विषय पर **लघु निबंध लेखन प्रतियोगिता** आयोजित की।
- दिनाँक 2 मार्च 2019 को "The Rise of Nationalism in America" विषय पर अर्थशास्त्र की छात्राओं ने **PPT Presentation** किया।
- दिनाँक 14 मार्च 2019 को कु॰ नेहा पॉल ने BSI में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार "Futuristic Global Scenario in the Perspective of United States National Economic Policy" में प्रतिभागिता की।

संस्कृत विभाग द्वारा दिनाँक 18 सितम्बर 2018 से 02 अक्टूबर 2018 के मध्य संस्कृत भारती एवं दिव्य भारतम् रुड़की की ओर से महाविद्यालय में संस्कृत भाषा के प्रचार व प्रसार के शुभ संकल्प के साथ **पन्द्रह दिवसीय सरल संस्कृत सम्भाषण शिविर** का आयोजन हुआ। जिसमें 59 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

- दिनाँक 25 अक्टूबर 2018 को संस्कृत विभाग की छात्राओं द्वारा बाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर **विचार प्रस्तुति** की गई।
- **चित्रकला विभाग** द्वारा दिनाँक 13 सितम्बर 2018 को चित्रकला विभाग द्वारा विषय परिषद का गठन कर पदाधिकारियों को उनके उत्तरदायित्वों से अवगत कराते हुए शपथ ग्रहण कराई गई। सत्र 2018-2019 में चित्रकला विषय परिषद के अन्तर्गत निम्न गतिविधियाँ संचालित की गई-
- दिनाँक 6 अक्टूबर 2018 को आंमत्रित कलाकार श्रीमती पूजा सैनी के कुशल दिशा निर्देशन में आयोजित '**न्यूज पेपर क्राफ्ट वर्क**' पर '**एक दिवसीय कार्यशाला**' में चित्रकला विषय की लगभग 100 छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए वेस्ट न्यूजपेपर द्वारा विभिन्न आकर्षक एवं कलात्मक वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

  दिनाँक 22 अक्टूबर 2018 को दीपावली के शुभ अवसर पर **पूजा की थाली, वन्दनवार तथा मंगल कलश प्रतियोगिता** आयोजित की गई।

- दिनाँक 30 अक्टूबर 2018 को स्व॰ श्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में उनके **व्यक्ति चित्रों की प्रतियोगिता** कराई गई। जिसमें एम.ए. चित्रकला की 30 छात्राओं ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता के उपरांत सृजित व्यक्ति चित्रों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।
- दिनाँक 10 दिसम्बर 2018 को आयोजित भारतीय लघु चित्र शैलियों पर आधारित **'रचनात्मक लघु चित्र कला प्रतियोगिता'** में छात्राओं ने भारतीय कला परम्परा को नवीन रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत किया।
- इसी के साथ बंगाल की सुप्रसिद्ध लोक कला **काली घाट पेंटिंग और पट चित्रों पर आधारित पेन्टिंग प्रतियोगिता** में एम.ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं ने अपनी विलक्षण कला प्रतिभा का प्रदर्शन किया। हे.नं.ब. विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग के अध्यक्ष प्रो. डी.एस. बिष्ट तथा असि. प्रो. डा॰ एकता विष्ट ने निर्णायक मण्डल के रुप में उपस्थित होकर छात्राओं का उत्साह वर्द्धन किया।
- दिनाँक 14 फरवरी 2019 को **'Paint your Umbrella'** प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता की।
- **कॉमिक्स मेकिंग वर्कशाप:**– दिनाँक 1 फरवरी 2019 से 6 फरवरी 2019 तक TBS Planet IIT Roorkee के सौजन्य से 6 दिन की कॉमिक्स मेकिंग वर्कशाप का आयोजन हुआ, जिसमें एक स्क्रीनिंग टेस्ट के उपरांत चित्रकला विषय की चयनित 10 छात्राओं को कॉमिक्स मेंकिंग का विधिवत प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षित छात्राओं को शैक्षिक सत्र समाप्त होने के उपरांत कम्पनी द्वारा कार्य का अवसर प्रदान किया जायेगा।
- **कॉफी पेन्टिंग वर्कशाप:**– दिनाँक 8 तथा 9 फरवरी 2019 को श्रीमती मीनाक्षी कश्यप (प्रवक्ता चित्रकला) द्वारा छात्राओं को कॉफी द्वारा आकर्षक पेन्टिंग बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में 25 छात्राओं के साथ प्राध्यापिकाओं ने भी काफी द्वारा सुन्दर कलाकृतियां सृजित की।
- दिनाँक 7 मार्च 2019 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष में चित्रकला विभाग तथा परवाज सोशल फाउन्डेशन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **'महिला सशक्तिकरण विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता'** का आयोजन हुआ, जिसमें 55 छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए नारी की शक्ति, ऊर्जा, क्षमता महत्वाकांक्षा तथा उसकी उपलब्धियों को चित्र रुप में उकेरा। इस अवसर पर प्रबंध समिति के सचिव श्री सुनील तायल जी तथा कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण जी ने मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित होकर विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया।
- महात्मा गांधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत दिनाँक 7 मार्च 2019 को महात्मा गांधी के प्रेरक वचनों पर आधारित **'सुलिपि प्रतियोगिता'** में 22 छात्राओं ने भाग लिया।
- दिनाँक 2 अप्रैल 2019 को **क्रिएटिव कम्पोजीशन प्रतियोगिता** में बी.ए. की 25 तथा एम.ए. की 30 छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए कैनवास पर अपनी कला–कल्पना के रंगों से मनमोहक कलाकृतियाँ सृजित की।
- दिनाँक 22 अप्रैल 2019 को एम.ए. चित्रकला की छात्राओं हेतु **स्क्रीन प्रिंटिंग प्रतियोगिता** सम्पन्न हुई।

वार्षिक चित्र एवं हस्तकला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति'

सत्र के अंत में दिनांक 1 मई 2019 को चित्रकला विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक चित्र एवं हस्तकला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' का शुभारम्भ माननीया मुख्य अतिथि श्रीमती नितिका खण्डेलवाल (ज्वाइंट मजिस्ट्रेट,

रुड़की) तथा विशिष्ट अतिथि डा॰ दिनेश चंद्र अग्रवाल (पूर्व अध्यक्ष चित्रकला विभाग, जे.वी.जैन कालेज, सहारनपुर) के कर-कमलों द्वारा हुआ। तीन दिन तक चली इस भव्य कला प्रदर्शनी में बी.ए. तथा एम.ए. चित्रकला विषय की लगभग 200 छात्राओं द्वारा वर्षपर्यन्त किये गये विभिन्न कला-कार्यो का प्रदर्शन किया गया। इसके साथ-साथ 10 पूर्व छात्राओं व विभाग की समस्त प्राध्यापिकाओं की कलाकृतियाँ भी प्रदर्शित की गई। महाविद्यालय के पाँच कक्षों तथा बरामदों में लगाई गई इस प्रदर्शनी में विभिन्न विषयों, शैलियों और कला तकनीकों से सृजित कलाकृतियों का कला प्रेमी दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया। प्रबंध समिति के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति में प्रदर्शनी के रंगीन केटेलॉग का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित श्रेष्ठ कलाकृतियों को सृजित करने वाली छात्राओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष बी.ए. VI सेमेस्टर की कु॰ कौसर जहाँ तथा एम.ए. IV सेमेस्टर की कु॰ वैशाली को सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रुप में चुना गया। उक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन चित्रकला विभाग प्रभारी डा॰ अलका आर्य एवं उनके सहयोगी डा॰ अर्चना चौहान, श्रीमती मीनाक्षी कश्यप, सुश्री सीमा रानी तथा सुश्री चन्दा के दिशा निर्देशन में हुआ।

स्वावलम्बन प्रकोष्ठ

छात्राओं को कला के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से गठित 'स्वावलम्बन प्रकोष्ठ' के अन्तर्गत इस वर्ष भी छात्राओं को विभिन्न हस्तशिल्प एवं साज-सज्जा की वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण तथा दर्शकों की रुचि तथा मांग के अनुरुप कलाकृतियां निर्मित करने हेतु दिशा-निर्देश भी दिये गये। छात्राओं की कला प्रतिभा को उजागर करने के उद्देश्य से समय समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यशालाएं भी आयोजित की गई। छात्राओं द्वारा निर्मित विभिन्न कलाकृतियों एवं हस्तशिल्प की वस्तुओं को दिनाँक 24-10-2018 को महिला संस्कृति क्लब, आई.आई.टी. रुड़की द्वारा आयोजित दीपावली मेले में बिक्री हेतु प्रदर्शित किया गया। इस मेले में बी.ए. तथा एम.ए. चित्रकला विषय की लगभग 70 छात्राओं की हस्तनिर्मित कला सामग्री जैसे:- गणपति पेन्टिंग्स, बन्दनवार, पूजा की थाली, हैडंमेड ज्वैलरी, फ्लॉवर पॉटस तथा रंगोली कट आउट्स इत्यादि प्रदर्शित किये गये। छात्राओं की इन मनमोहक कलाकृतियों की दर्शकों ने भरपूर सराहना करने के साथ उनका क्रय भी किया। इस अवसर पर आयोजित मेंहदी प्रतियोगिता में महाविद्यालय की कु॰ अमीन फातिमा प्रथम, कु॰ शगुन सिंह द्वितीय तथा कु॰ वैशाली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्लब की ओर से सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

Faculty of Science – Activities

Following activities were conducted by different departments during session 2018-19.

Chemistry Department –

- 17-10-2018 Mrs. Anshu Goyal (Lecturer Chemistry Department) attended a workshop on faculty development program organized by Chemistry Dept. I.I.T. Roorkee.
- 3-12-2018 **Quiz Competition** for B.Sc. III Sem, based on different topics from syllabus.
- 14-12-2018 **Poster making competition** on the Topic "Energy Conservation".
- **Project Writing** Assignments were given on the Topic "Glassware used in laboratory"
- Mrs. Anshu Goyal and Mrs. Pallavi Singh (Lecturers, Chemistry Department) attended a **workshop** organized by N.I.H. Roorkee.

Physics Department –

- The Department of Physics organized **'Electroptum-19'** on 9-02-2019, in which students from Methodist (P.G.) College visited the Physics Lab.

- A departmental **Seminar** was held on 25-02-2019 by Space Development Nexus SDMx. The Seminar aimed at introducing cosmology to the students.
- On 28-02-2019, '**National Science Day**' was celebrated on the theme **"Science for People and People for Science."**

Mathematics Department –

- Teacher's day was celebrated by **wall magazine display** with the theme – "Role of teachers in our Life" on 5 September 2018.
- A wall magazine displayed on **'International Mother's Language Day'** with the theme 'Indigenous Languages Mother for Development of Peace building and Reconcilliation on 25-02-2019.
- A **workshop** was organized on **'International Mother's Language Day'** on the theme Uses of Scientific Dictionary in Hindi for Optimization and Co-relation of Mathematical Problems on 25-02-2019.

Botany Department

- Conducted **three day science camp** in collaboration with N.G.O. 'Eunoia Science Hub' from 30-10-2018 to 01-11-2018. In the above camp various competitions were organized to commemorate the birth Anniversary of Dr. A.P.J. Abdul Kalam. It included Essay Writing Competition, Seminar, Presentation and Speeches. The topics of various competitions were as follows -

(i) Co-relation between science and religion

(ii) How to develop passion for science.

(iii) Role of science in Developing Global peace and Harmony.

(iv) How to make earth a liveable planet and reforms needed in science education at higher level.

At the End of the Camp, the certificate and prizes were provided by Eunoia Global Education and Research Foundation.

Zoology Department

Celebrated Earth day on 22 April 2019 by conducting various academic and informative activities, like **Poster Making Competition** and PPT Presentation.

Guest Lecture by Prof. Satyendra Mittal, Prof. Civil Engineering Department IIT Roorkee on the topic "Save Earth Save Species" on Earth day 22nd April 2019.

Dr. Sangeeta Singh (Lecturer Zoology Department) delivered a lecture on "Nutrition and Health" at Institute of Hospitality. Management and Science, Kotdwar, on 22nd Oct. 2018.

Microbiology Department

On the occasion of National Science day Microbiology Department, organized a **poster presentation** on the theme entitled 'Meet Microbes'

Computer Department

- Conducted **'e-learning program'** for students from 1st to 3rd Oct 2018.

- **'Front Page Designing Competition'** was held on 29th Dec. 2018 from B.Sc. I Sem.
- A workshop on **Quick Excel** was organized in Quantum Institute Roorkee, on 20th Feb. 2019 for B.A. & B.Sc. VI Sem.
- Organized an **'Article Writing Competition'** on Cyber Security and Robotics on 15th March 2019 for B.Sc. IV and VI Sem.
- A **'Wall Magazine Competition'** was organized on the theme Computer Awareness on 25th March 2019.
- A **'Seminar with PPT Presentation'** was held on the topic 'Computer Network' for B.Sc. VI Sem. on 25-03-2019

Educational Visit

- C.B.R.I Roorkee conducted a students awareness programme on "International Ozone day" which was attended by 57 students under the guidance of Mrs. Anshu Goyal (Chemistry Department) and Dr. Sangeeta Singh (Zoology Department) on 5th Oct 2018 with the theme 'Keep Cool and Carry on'. On the same day students also attended a workshop in which Dr. R.S. Chimote, Chief Scientist of CSIR-CBRI, Roorkee delivered a lecture on "Preservation of Ozone layer Problems, causes and protection measures.
- 30 students of B.Sc, VI Sem took part in a workshop on Design Innovation Awareness Programme, (DIA) organized by MHRD Govt. of India at Design Innovation Centre (DIC) IIT Roorkee on 15th May 2019 under the guidance of Dr. Uma Rani, Dr. Sangeeta Singh, Ms. Sazia Tabassum and Dr. Uma Rani

ज्ञान कुम्भ (3-4 नवम्बर 2018)

महाविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड के तत्वावधान में पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार के सहयोग से दिनांक 3 व 4 नवम्बर 2018 को आयोजित ज्ञान कुम्भ में प्रतिभागिता की गई।

गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का देश के सामाजिक आर्थिक विकास से सीधा व गहरा सम्बन्ध होता है जिसके लिए पूरे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उच्चस्तरीय शोध तथा शिक्षण कार्यो का आदान प्रदान आवश्यक होता है। अतः इसी उद्देश्य को सार्थक करने हेतु देवभूमि उत्तराखण्ड में इस **'ज्ञान कुम्भ'** का आयोजन दिनांक 3 व 4 नवम्बर 2018 को किया गया जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों से उच्च शिक्षा मंत्रीगण, शिक्षा सचिव, कुलपति, शिक्षाविद् एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुये।

इस ज्ञान कुम्भ से उद्गमित ज्ञान गंगा का रसपान करने हेतु प्राचार्या डा॰ अर्चना मिश्रा जी के दिशा निर्देशन में एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स कॉलेज रुड़की से बी.ए. एवं बी.एस.सी. की लगभग 70 छात्राओं के साथ डा॰ अनुपमा गर्ग, डा॰ अलका आर्य, डा॰ कामना जैन, डा॰ किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, डा॰ अस्मा सिद्दीकी, एवं डा॰ उमा रानी ने कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। गुणवत्तापरक शिक्षा, सकारात्मक सोच एवं समुचित मार्गदर्शन ही युवा पीढ़ी के सपनों के भारत का निर्माण कर सकता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मूल्याधारित परम्परागत शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी कौशल युक्त शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया जाता चाहिए और इस शुभ संकल्प की सिद्धि सभी के सामूहिक प्रयास द्वारा ही सम्भव हो सकती है। यही वृहद् स्तर पर आयोजित ज्ञान कुम्भ 2018 का लक्ष्य एवं दृढ़ संकल्प है।

गाँधी स्मरणोत्सव 150 वी जन्मशती वर्ष - 2018-19

दिशा निर्देशन : डा॰ अर्चना मिश्रा, **समन्वयक:** डा॰ कामना जैन, **सह समन्वयक:** डा॰ किरन बाला

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी 150 वीं जन्मशती स्मरणोत्सव के रुप में मनाए जाने के सम्बन्ध में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के उच्च शिक्षा विभाग को कार्यक्रमों के वृहद् आयोजन हेतु प्राप्त निर्देश के अनुपालन में महाविद्यालय में सत्र-पर्यन्त निम्न गतिविधियाँ आयोजित की गई तथा कुछ गतिविधियाँ आगामी सत्र हेतु सुनिश्चित की गई हैं। जिनका विवरण निम्नवत् है:-`

दिनाँक	आयोजक	गतिविधि का विवरण
22 सित॰ 2018 24 सित॰ 2018 29 सित॰ 2018	ग्रीन ब्रिगेड N.S.S.	**स्वच्छता पखवाड़ा** (15 सित॰ से 2 अक्टू॰ 2018) संयोजिका -डा॰ अनुपमा गर्ग डा॰ भारती शर्मा, डा॰ किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, श्रीमती अंशु गोयल
27 से 29 सित॰ 2018	Reading Gandhi	**Library session** संयोजिका - डा॰ कामना जैन, राजनीति विज्ञान विभाग
2 अक्टू 2018	N.S.S.	**स्वच्छता रैली, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम** संयोजिका - डा॰ कामना जैन
30 अक्टू 2018	समाजशास्त्र विभाग	**दिशा भित्ति पत्रिका: Remembering Gandhi** संयोजिका - डा॰ किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद
2 नवम्बर 2018	हिन्दी विभाग	**पत्र लेखन- बापू आप मेरे प्रेरणा स्रोत है।** संयोजिका - डा॰ सीमा रॉय, डा॰ अंजू शर्मा
2 नवम्बर 2018	राजनीति विभाग	**चित्र प्रदर्शनी Memories of Gandhi** संयोजिका - सुश्री प्रवीन, डा॰ मधुलिका मिश्रा
4 दिस॰ 2018	हिंदी विभाग	**कविता पाठ: गाँधी पर संकलित कविताऐं** संयोजिका - डा॰ अंजू शर्मा
10 दिस॰ 2018	राजनीति विभाग अर्थशास्त्र विभाग	**फिल्म प्रदर्शन: रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित - गाँधी** **PPT Presentation - Gandhi & this Life** संयोजिका - डा॰ कामना जैन, श्रीमती नेहा शर्मा
30 जन॰ 2019	--	**हस्ताक्षर अभियान-'अहिंसा परमो धर्म:'** संयोजिका - डा॰ सीमा रॉय, डा॰ शिखा शर्मा, श्रीमती नेहा शर्मा, श्रीमती प्रीति शर्मा
7 मार्च 2019	चित्रकला विभाग	**Calligraphy- गाँधी के प्रेरक कथन** संयोजिका - डा॰ अलका आर्य
2 अप्रैल 2019	सामाजिक विज्ञान परिषद्	**Inter University Debate Competition (Topic-Relevance of Gandhian Ideology in Present Scenorio)** संयोजिका - डा॰ कामना जैन, डा॰ किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, श्रीमती नेहा शर्मा, डा॰ मधुलिका मिश्रा

आगामी सत्र (2019-20) में प्रस्तावित गतिविधियाँ:-

Walk for Unity and peace	संयोजिका - डा॰ कामना जैन, डा॰ किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, डा॰ सीमा रॉय डा॰ शालिनी वर्मा
निबन्ध लेखन प्रतियोगिता	संयोजिका - डा॰ अनुपमा गर्ग, सुश्री महनाज
पोस्टर प्रतियोगिता-हमारे प्रिय बाबू	संयोजिका - डा॰ अर्चना चौहान, श्रीमती मीनाक्षी कश्यप
वृक्षारोपण	संयोजिका - डा॰ संगीता सिंह, सुश्री शाजिया
Quiz- गाँधी जीवन दर्शन	संयोजिका - डा॰ ज्योतिका, श्रीमती प्रीति
नाट्य प्रस्तुतियाँ	संयोजिका - डा॰ अस्मा सिद्दीकी, डा॰ उमा रानी

महाविद्यालय स्तरीय गतिविधियाँ

भाषण/वाद विवाद प्रतियोगिताएं

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय जिला हरिद्वार के तत्वावधान में सामाजिक विभाग विषय परिषद की ओर से **विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभागिता की।

विषय - PC-PNDT Act 1994 (लिंग चयन प्रतिषेध)

निर्णायक मण्डल - डा॰ एच॰डी॰ शाक्य (ACMO हरिद्वार)
डा॰ शिखा जंगपांगी (CMS, महिला चिकित्सालय, हरिद्वार)
सुश्री सरिता भट्ट (सचिव, सेतु फाउण्डेशन, NGO)

प्रतियोगिता परिणाम -

कु॰ मेघा राठी	(B.Sc. IV Sem)	प्रथम स्थान	1500/- नकद पुरस्कार
कु॰ साक्षी	(B.A. VI Sem)	द्वितीय स्थान	1100/- नकद पुरस्कार
कु॰ दीपा	(B.A. VI Sem)	तृतीय स्थान	700/- नकद पुरस्कार
कु॰ आफरीन	(B.A. VI Sem)	सांत्वना पुरस्कार	500/- नकद पुरस्कार
कु॰ जेबा	(B.A. IV Sem)	सांत्वना पुरस्कार	500/- नकद पुरस्कार

अंतर्विश्वविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 02-04-2019 को गाँधी स्मरणोत्सव वर्ष में कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत महाविद्यालय की सामाजिक विज्ञान विषय परिषद द्वारा '**अंतर्विश्वविद्यालयी वाद विवाद प्रतियोगिता**' का आयोजन किया गया जिसका विषय 'वर्तमान परिदृश्य में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता' था। इसमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय, पंतजलि विश्वविद्यालय, चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा (श्री देव सुमन विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध), एस.एम. जे.एन (पी.जी.) कॉलेज हरिद्वार तथा के.एल.डी.ए.वी. (पी.जी) कॉलेज, रुड़की (हेमवती नन्दन बहुगुण विश्वविद्यालय से सम्बद्ध) द्वारा प्रतिभागिता की गई।

निर्णायक मण्डल - श्रीमती रश्मि चौधरी (सदस्य उत्तराखण्ड महिला आयोग),
श्रीमती स्नेह नागयान (प्रबन्धक स्कालर्स एकेडमी, रुड़की),
डा॰ तीर्थ प्रकाश (असि. प्रो. राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर, रुड़की)

प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम स्थान	कु॰ आफरीन B.A. VI Sem, एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, रुड़की
द्वितीय स्थान	कु॰ जेबा B.A. IV Sem, एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, रुड़की
तृतीय स्थान	कु॰ नेहा चौधरी B.Ed, के.एल.डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, रुड़की
सांत्वना पुरस्कार	कु॰ तान्या B.A. JMC, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अतिथि व्याख्यान:- दिनाँक 12.02.2019 को डा॰ भारती शर्मा के निर्देशन में अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत की विषय परिषद के सहयोग से चर्चित नाट्य कलाकार श्री नरेन्द्र आहूजा ने Theatre and Performing Arts विषय पर व्याख्यान दिया।

- दिनाँक 10 दिसम्बर 2018 को श्री यतीन्द्र कुमार चौधरी ने छात्राओं को 'स्वच्छ भारत अभियान पर' व्याख्यान दिया।

वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता 2018-2019

Health is Wealth इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली खेल-कूद प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। क्रीड़ा समिति द्वारा सत्र-पर्यन्त आयोजित की गई गतिविधियों का विवरण निम्नवत है-

- दिनांक 05-09-2018 से 15-02-2019 तक नि:शुल्क **त्रैमासिक ताइक्वांडो प्रशिक्षण** श्री याकूब खान जी (ताइक्वांडो प्रशिक्षक) के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

- दिनांक 18-02-2019 से 20-02-2019 तक वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता समन्वयक डा॰ अनुपमा गर्ग एवं सह-समन्वयक डा॰ किरन बाला व श्रीमती पल्लवी, श्रीमती नेहा शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुई, जिसका शुभारम्भ स्थानीय नेहरु स्टेडियम में प्राचार्या डा॰ अर्चना मिश्रा के कर कमलों द्वारा किया गया। इस श्रृंखला में 100 मी., 200 मी., 400 मी., स्लो साइकिल, शॉटपुट, रिलेरेस, कबड्डी, रस्साकसी, तथा इन्डोर खेलों के अन्तर्गत केरम, शतरंज, डार्ट गेम प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई।

- **कु॰ महिमा चौधरी** (बी॰ए॰) ने खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके **चैम्पियन ट्राफी** प्राप्त की।

दिनांक 20-02-2019 को **समापन समारोह** के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो॰ नरेन्द्र सिंह जी, माननीय मुख्यमंत्री सलाहकार एवं प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष श्री दिनेश कुमार, सचिव श्री सुनील कुमार तायल, कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण, श्री गोपाल गुप्ता इत्यादि उपस्थित रहे। इस अवसर पर छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय सस्कृति के प्रतीक राजस्थानी, लावनी, वीहू, गढ़वाली, गुजराती, पंजाबी आदि लोकनृत्यों की छटा बिखेर कर दर्शकों की खूब तालियाँ बटोरी।

वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता में विजयी छात्राएँ-

100 मी॰ रेस	कु॰ महिमा चौधरी	(B.A. II Sem)	प्रथम स्थान
	कु॰ रुखसार	(B.A. IV Sem)	द्वितीय स्थान
	कु॰ शालू नौटियाल	(B.Sc. IV Sem)	तृतीय स्थान
200 मी॰ रेस	कु॰ महिमा चौधरी	(B.A. II Sem)	प्रथम स्थान
	कु॰ रुखसार	(B.A. IV Sem)	द्वितीय स्थान
	कु॰ गुड़िया	(B.A. VI Sem)	तृतीय स्थान

300 मी॰ रेस	कु॰ रुखसार	(B.A. IV Sem)	प्रथम स्थान
	कु॰ गुड़िया	(B.A. VI Sem)	द्वितीय स्थान
	कु॰ तमन्ना रोहेला	(B.Sc. VI Sem)	तृतीय स्थान
स्लो साइकिल	कु॰ शाहिन खातून	(M.A. IV Sem)	प्रथम स्थान
	कु॰ भावना मिश्रा	(B.Sc. VI Sem)	द्वितीय स्थान
	कु॰ मनीषा	(B.Sc. IV Sem)	तृतीय स्थान
शॉट पुट	कु॰ छाया	(B.A. IV Sem)	प्रथम स्थान
	कु॰ शालू नौटियाल	(B.Sc. IV Sem)	द्वितीय स्थान
	कु॰ मधु कश्यप	(B.Sc. IV Sem)	तृतीय स्थान
रिले रेस	कु॰ महिमा चौधरी	(B.A. II Sem)	विजेता
	कु॰ शिवांशी त्यागी	(B.Sc. II Sem)	विजेता
	कु॰ तेजश्री धीमान	(B.Sc. II Sem)	विजेता
	कु॰ आयुषी सैनी	(B.Sc. II Sem)	विजेता

कबड्डी प्रतियोगिता में बी.ए. एवं बी.एस.सी. VI Sem की छात्राएं विजयी रही– कु॰ सिमरन, अदिबा, भावना, शालिनी, तबस्सुम, आफरीन, सृष्टि, नूर–ए–दरख्शा, अनन्या, नेहा नारंग, तरन्नुम, कविता, नगमा, रजिया, सबिया सुल्तान।

रस्साकसी प्रतियोगिता में बी.ए. एवं बी.एस.सी. VI Sem की छात्राएं विजयी रही– कु॰ रजिया प्रवीन, आयशा प्रवीन, इरम जहाँ, साक्षी, गुड़िया, रुबी, भावना, शालिनी सैनी, नीतू, अदिति, अनन्या, नूर–ए–दरख्शा, नेहा नारंग, सृष्टि, राखी।

इन्डोर गेम्स

कैरम	कु॰ आयशा	(B.A. VI Sem)	विजेता
	कु॰ जेबा	(B.A. IV Sem)	उपविजेता
शतरंज	कु॰ हेमा नारंग	(B.A. VI Sem)	विजेता
	कु॰ चाँदनी त्यागी	(M.A. IV Sem)	उपविजेता
डाट बोर्ड	कु॰ अतिका	(B.A. VI Sem)	विजेता
	कु॰ कविता	(M.A. VI Sem)	उपविजेता

हे.न.ब. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयी महिला कबड्डी टूर्नामेंट में महाविद्यालय की निम्नवत् छात्राओं ने दिनांक 4–10–2018 को श्री आकाश चौधरी (कोच) एवं श्री अवतार सिंह जी के मार्गदर्शन में महिला कबड्डी टीम में Intercollegiate Sports में प्रतिभागिता की–

1. कु॰ भावना मिश्रा (Capatin)
2. कु॰ मेघा (Vice Captain)
3. कु॰ शालू नौटियाल
4. कु॰ वंशिका शर्मा
5. कु॰ शिल्पी
6. कु॰ रजिया प्रवीन
7. कु॰ गुड़िया
8. कु॰ मधु देवी
9. कु॰ रिचा चौधरी
10. कु॰ दीपा सैनी
11. कु॰ नगमा
12. कु॰ दीपा
13. कु॰ शालिनी सैनी
14. कु॰ नेहा कनौजिया

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय में दिनांक 29, 30 मार्च 2019 को सांस्कृतिक समिति प्रभारी डा॰ अर्चना चौहान एवं सदस्य सुश्री अंजलि प्रसाद, डा॰ उमा, डा॰ सीमा राय, श्रीमती अंशु गोयल तथा श्रीमती प्रीति वर्मा के निर्देशन में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की हर्षोल्लास के साथ प्रस्तुति हुई। छात्राओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत है–

- लोक गीतों पर आधारित **एकल एवं समूह गायन प्रतियोगिता** में प्रतिभागियों की मोहक प्रस्तुति।
- लोक गीतों पर आधारित **एकल एवं समूह नृत्य** प्रस्तुति।
- **वाद्य यंत्र प्रतियोगिता** में ढोलक, गिटार, प्यानों इत्यादि पर छात्राओं की सुरमय प्रस्तुति।
- **प्रादेशिक भारतीय परिधान प्रतियोगिता** में छात्राओं ने विभिन्न राज्यों की अनूठी वेशभूषा एवं वहाँ की भाषा व बोली को एक अनोखे अंदाज में प्रस्तुत किया
- **मूक अभिनय प्रतियोगिता** में छात्राओं ने वर्तमान राजनेताओं पर आधारित मूक अभिनय कर वाह वाही लूटी।

सांस्कृतिक प्रतियोगिता के परिणाम

लोक गायन प्रतियोगिता –	कु॰ प्रिया	B.A. II Sem	प्रथम
	कु॰ शिवानी सैनी	B.A. IV Sem	द्वितीय
	कु॰ अदीबा	B.Sc. IV Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा॰ अनुपमा गर्ग, डा॰ अलका आर्य

भारतीय परिधान प्रतियोगिता–	कु॰ शीबा	B.A. II Sem	प्रथम
	कु॰ अदीबा	B.Sc. IV Sem	द्वितीय
	कु॰ कौसर जहाँ	B.A. IV Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा॰ भारती शर्मा, डा॰ कामना जैन, श्रीमती अंशु गोयल

लोक नृत्य प्रतियोगिता (एकल)–	कु॰ श्वेता आर्य	B.A. II Sem	प्रथम
	कु॰ नेहा	B.A. IV Sem	द्वितीय
	कु॰ मनीषा सैनी	B.A. IV Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा॰ भारती शर्मा, डा॰ कामना जैन, श्रीमती शैली सिंघल

लोक नृत्य प्रतियोगिता (समूह) –	कु॰ सबिया	M.A. II Sem	प्रथम
	कु॰ महमुना	B.A. IV Sem	प्रथम
	कु॰ गुडिया	B.A. VI Sem	द्वितीय
	कु॰ साक्षी	B.A. VI Sem	द्वितीय
	कु॰ रिचा	B.A. II Sem	तृतीय
	कु॰ हरजीत	B.A. II Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा॰ भारती शर्मा, डा॰ कामना जैन, श्रीमती शैली सिंघल

वाद्ययंत्र वादन प्रतियोगिता –	कु॰ वैशाली (ढोलक)	B.A.	प्रथम
	कु॰ आफरीन (पियानो)	B.A. VI Sem	द्वितीय
	कु॰ माहिम (गिटार)	B.Sc. II Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा॰ भारती शर्मा, डा॰ उमा रानी

मूक अभिनय प्रतियोगिता -

कु॰ मनू सैनी	B.Sc. VI Sem	प्रथम
कु॰ आयुषी	B.Sc. VI Sem	द्वितीय
कु॰ दीप्ती चौहान	B.Sc. VI Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल - डा॰ किरन बाला, डा॰ सीमा राय

दिनांक 2 अप्रैल 2019 को सामाजिक विज्ञान परिषद की ओर से आयोजित अतर्विश्वविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर छात्राओं द्वारा दर्शकों के सम्मुख ''आजारे बापू, आजारे'' गीत पर **समूह नृत्य** की प्रस्तुति की गई।

श्रेष्ठता पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ छात्रा	कु॰ कविता	B.A. VI Sem
	कु॰ प्रज्ञा शर्मा	B.Sc. VI Sem Bio
	कु॰ निशि गोस्वामी	B.Sc. VI Sem Maths
सर्वश्रेष्ठ कलाकार	स्नातक - कौसर जहाँ	B.A. VI Sem
	स्नातकोत्तर - कु॰ वैशाली	M.A. IV Sem
अधिकतम उपस्थिति	कु॰ निधि गुप्ता (एम.ए. चित्रकला)	
	कु॰ मनीषा राठौर (एम.ए. राजनीतिशास्त्र)	

Career Guidance and Placement Cell

Following activities were organized by the Career Guidance and Placement Cell under the supervision of Dr. Kiranbala, Dr. Uma Rani, Mrs. Shelly Singhal and Ms. Mehnaz.

27-08-2018	Organized an **orientation programme** regarding Career Planning for the students of B.A. / B.Sc.
26-08-2018	**A motivational workshop** was held by Sh. Om Kanojia and Kulveer Singh from M.M. University Mullana, Haryana
31-08-2018	Appointed Mentors for Career Guidance and Schedule displayed on college notice board.
05-09-2018	Organized a workshop on **'Career in Sports'** in collaboration with Sports Committee and Mr. Avtar Singh (Sports Coach on Director Shourya Sports Academy, Roorkee).
13-09-2018	A seminar was organized by TIME Institute on **'Career in Banking'** by Speaker – Mr. Vishal and Ms. Ritika.
01-10-2018	An informative lecture was given on the topic **'Job opportunities in 'Sanskrit'** by Ms. Karuna Gupta from Sanskrit Bharati.
01-10-2018 To 03-10-2018	Organized three days **Basic Computer Training** Programme with the co-operation of Computer Department. Trainer Student batches also prepared. (Mentors – Ms. Bhavna, Ms. Shilpi, Ms. Preeti, Pilkhwal, Ms. Shalini Saini, Ms. Priyanka Verma).

22-11-2018 A Series of Lectures were organized by Dr. Jyotika, Dr. Parul Chaddha, Mrs. Shelly Singhal and Mrs. Pallavi Singh on the topic **"Future Perspective in science After Graduation".**

28-11-2018 Dr. Uma and Dr. Sangeeta delivered a lecture on the topic **"Career in Bio-Science".**

01-02-2019 A seminar was organized on the topic **"Career opportunities in Banking"** by Mahendras Team members – Shri Yogesh Yadav, Mr. Piyush Sharma, Mr. Manjeet Singh and Mr. Tarun Dhiman.

12-02-2019 A workshop was held on the topic **'Career in Theatre and Performing Arts** by Mr. Narendra Ahuja.

23-02-2019 An **Interactive Session on career planning** was organized by Mahendras team members - Mr. Piyush Sharma, Mr. Yogesh Yadav.

05-03-2019 A workshop on **'Career in Civil Services'** by Mr. Gaurav Chauhan and Dr. Deepmala from Vivakanand Institute, Roorkee.

07-03-2019 Participation in **One day Quick Excel Certification training Programme** at Quantam University, Roorkee under the supervision of Dr. Uma Rani and Mrs. Shelly Singhal.

27-03-2019 An orientation Program was held on the topic **'Career in Civil Services'**, Speaker – Mr. Abhishek from NIRMAN IAS, Institute, New Delhi.

छात्रा कल्याण परिषद

सत्र 2018–19 में निर्धन छात्रा कोष के द्वारा महाविद्यालय की बी.ए. में अध्ययनरत 17 छात्राओं को रु. 500/– प्रति छात्रा प्रदान किये गये।

पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण, बुक बैंक एवं यूनिफार्म बैंक का शुभारम्भ –

महाविद्यालय के पुस्तकालय में प्रबंध समिति के सौजन्य से प्रारंभ पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण तथा छात्रा कल्याण समिति के सहयोग से निर्धन छात्राओं को विभिन्न विषयों की पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्थापित बुक बैंक व महाविद्यालय में शिक्षा पूर्ण करने वाली छात्राओं कों उनकी साफ–सुथरी यूनिफार्म को निर्धन छात्राओं के उपयोग हेतु दान करने के उद्देश्य से संचालित यूनिफार्म बैंक के उपयोग का प्रबंध समिति में श्री अजय गर्ग जी (अध्यक्ष) श्री दिनेश कुमार गुप्ता जी (उपाध्यक्ष) श्री सुनील कुमार तायल (सचिव) तथा श्री सौरभ भूषण (कोषाध्यक्ष) एवं अन्य सम्मानित सदस्यों द्वारा दिनांक 25–08–2018 को शुभारंभ किया गया।

गत सत्रों में प्राप्त पुस्तकों एवं महाविद्यालयी वेशभूषा का विवरण निम्नवत है–

सत्र	पुस्तक संख्या	कुल मूल्य
2017–18	132	21,860/–
2018–19	107	15,797/–

महाविद्यालय यूनिफार्म

कुल एकत्रित	–	20
लाभान्वित छात्राएं	–	16

आडियो/विजुअल कक्ष का उद्घाटन -

दिनांक 04-06-2019 को महाविद्यालय के नवीन आडियो/विजुअल कक्ष का प्रबंध समिति के अध्यक्ष माननीय श्री अजय गर्ग एवं कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण द्वारा उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर प्रबंध समिति के अन्य माननीय सदस्य भी उपस्थित रहे।

दिशा भित्ति पत्रिका -

छात्राओं के सम-सामयिक और सामान्य ज्ञान के सम्बर्द्धन के उद्देश्य से महाविद्यालय की दिशा भित्ति पत्रिका का विभिन्न विभागों द्वारा अंकित स्तम्भों -विशिष्ट व्यक्तित्व, भाषा ज्ञान, कला-संस्कृति, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य इत्यादि के माध्यम से छात्राएँ अपनी बौद्धिक और रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करती हैं। प्रत्येक विभाग द्वारा प्रदर्शित की गई पाठ्य सामग्री के आधार पर एक लिखित प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई तथा श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

छात्रा सशक्तीकरण एवं सुरक्षा प्रकोष्ठ-

- सत्र के आरंभ में दिनाँक 28-08-2018 को डा॰ नियति श्रीवास्तव (प्रसूति विशेषज्ञ, रुड़की) द्वारा छात्राओं को Menstrual Hygiene and Breast Feeding विषय पर व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 10 जनवरी 2019 को इनरव्हील क्लब रुड़की सौजन्य से महाविद्यालय में छात्राओं हेतु सैनेटरी नेपकिन वैंडिंग मशीन का इन्स्टालेशन कराया गया।
- ''जानकारी ही बचाव है'' के अन्तर्गत महाविद्यालय प्राध्यापिका वर्ग, समस्त छात्राओं एवं कर्मचारी वृन्द हेतु अग्निशमन विभाग द्वारा दिनांक 8-02-2019 को अग्निशमन यंत्र को प्रयोग करने का प्रशिक्षण एवं जानकारी प्रदान कराई गई।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिनांक 8-03-2019 को छात्राओं में महिला सशक्तीकरण की भावना का संचार करने हेतु एक **निबंध लेखन** प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसके प्रमुख विषय निम्नवत थे-

  (i) श्रेष्ठता के लिये संतुलन (Balance for Better) (ii) सीमाओं से परे (Beyond the Limitations)

  श्रेष्ठ प्रस्तुतियों को पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है।

मानवाधिकार दिवस एवं महात्मा गाँधी -

दिनांक 10 दिसम्बर 2018 को मानवाधिकार दिवस पर छात्राओं को 1982 में रिचर्ड एटनवरों द्वारा निर्देशित फिल्म 'गाँधी' दिखाई गई। इसके साथ-साथ राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में छात्राओं ने गाँधी जी के सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को PPT Presentation के माध्यम से प्रस्तुत किया।

ग्रीन ब्रिगेड-

'हमारी धरा हमारी धरोहर' सूत्रवाक्य के साथ पर्यावरण संरक्षण को समर्पित ग्रीन ब्रिगेड ने गत वर्षों की भाँति स्वच्छ भारत अभियान एवं पर्यावरण जागरुकता हेतु सक्रिय योगदान दिया। दिनांक 28 अगस्त 2018 को एक ओरिएन्टेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें छात्राओं को पर्यावरण-जागरुकता अभियान को जन-जन तक पहुँचाने हेतु आगामी कार्य योजना से अवगत कराया गया। सत्रपर्यन्त स्वच्छता अभियान एवं वृक्षारोपण के प्रति लोगों में चेतना का संचार करने हेतु छात्राओं की पाँच टोलियाँ बनाई गई, जिन्होंने निर्धारित कार्य क्रमानुसार महाविद्यालय परिसर एवं आस-पास की गंदगी का निस्तारण करने के साथ लोगों को स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरुक किया।

नगर निगम रुड़की द्वारा महाविद्यालय का **स्वच्छता सर्वेक्षण** कराया गया। औचक निरीक्षण में महाविद्यालय की स्वच्छता समिति के कार्यो का अवलोकन तथा स्वच्छता व्यवस्था को मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन के आधार पर **नगर निगम द्वारा महाविद्यालय को लगातार दूसरी बार प्रथम स्थान प्रदान कर सम्मानित किया गया।**

विस्तार –

'आइये लाइब्रेरी चलें' सूत्र वाक्य के साथ प्रारम्भ विस्तार प्रकोष्ठ के अन्तर्गत गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। विस्तार प्रकोष्ठ का उद्देश्य छात्राओं में पढ़ने की आदत विकसित कर उनकी बौद्धिक, वैचारिक एवं मानसिक क्षमताओं को विस्तार देना है, जिससे उनमें एक समग्रतावादी दृष्टिकोण विकसित हो और शिक्षा के मूल उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। इस सत्र में विस्तार प्रकोष्ठ के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ संचलित हुई–

- 15 अगस्त 2018 को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर **'हमारा लोकतंत्र'** विषय पर विचार प्रस्तुति हुई।
- दिनांक 07–09–2018 से 14–09–2018 तक **'कितने प्रासंगिक हैं कबीर?'** विषय पर **लाइब्रेरी सेशन** आयोजित किया गया।
- हिन्दी पखवाड़े के तहत दिनांक 20 सितम्बर 2018 आई.आई.टी के महात्मा गाँधी पुस्तकालय में आयोजित **पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन** करने हेतु छात्राएं डा॰ सीमा राय के निर्देशन में गई।
- 06–10–2018 को गाँधी जयंती के अवसर पर आयोजित आई.आई.टी रुड़की के पुस्तकालय में **गाँधी से सम्बन्धित दुर्लभ साहित्य का अवलोकन** किया।
- 04–12–2018 को गणमान्य कवियों की गाँधी जी पर आधारित संकलित **कविताओं का पाठ** कराया गया।

स्वच्छ भारत समर इंर्टनशिप 2019–2019 –

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सम्पूर्ण भारतवर्ष में संचालित 'स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप प्रोग्राम' महाविद्यालय परिसर एवं निकटवर्ती स्थलों में सुश्री अंजली प्रसाद (नोडल अधिकारी) के दिशा निर्देशन में पंजीकृत छ: छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए 100 घंटे पूर्ण किए। जिसके अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता, सफाई अभियान, पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी, प्लास्टिक रोकथाम एवं जनजागरुकता कार्यक्रम, पर्यावरण स्वच्छता एवं जागरुकता शपथ इत्यादि गतिविधियों के साथ M.H.R.D. द्वारा आयोजित online quiz में प्रतियोगिता की गई एवं उसके उपरान्त M.H.R.D. द्वारा महाविद्यालय एवं छात्राओं को स्वच्छता समर इंर्टनशिप के प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

भूतपूर्व छात्रा संघ –

भूतपूर्व छात्र संघ की गतिविधियों को विस्तार देते हुए पंजीकरण प्रक्रिया में तेजी लाई गई तथा विभिन्न स्तरों पर महाविद्यालय गतिविधियों में उनका सहयोग प्राप्त करने के प्रयास किये गये।

सत्र 2018–19 में महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्रा संघ के सौजन्य से निम्न गतिविधियाँ सम्पन्न हुई–

- महाविद्यालय की पूर्व छात्रा कु॰ करुणा गुप्ता (शोध छात्रा संस्कृत विश्वविद्यालय) हरिद्वार, द्वारा दिनांक 18 सितम्बर 2018 से 2 अक्टूबर 2018 तक 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का महाविद्यालय में संचालन किया गया, जिसमें लगभग 45 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।
- श्रीमती गरिमा गुप्ता (पूर्व छात्रा, बी.एससी., 2002) द्वारा विज्ञान संकाय की छात्राओं हेतु तीन दिवसीय विज्ञान शिविर में पावर पाइंट पर जानकारी प्रदान की।

- चित्रकला विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक हस्त एवं चित्रकला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' में भूतपूर्व छात्राओं को प्रतिभागिता हेतु आमंत्रित किया गया तथा दिनांक 1 से 3 मई 2019 तक संचालित उक्त चित्रकला प्रदर्शनी में 15 भतपूर्व छात्राओं ने प्रतिभागिता करने के साथ-साथ प्रदर्शनी व्यवस्था में अपना यथासंभव सहयोग दिया।

सत्र 2018-19 में निम्नलिखित भूतपूर्व छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता तथा भारत सरकार के शिक्षा विभाग में स्थायी नियुक्तियाँ प्राप्त की-

JAM - कु॰ शैलजा, कु॰ हिमानी, कु॰ निशि गोस्वामी, कु॰ प्रज्ञा शर्मा
NET - कु॰ ऑचल (चित्रकला)

Appointment in L.T. Grade 306-(State Government) (1) कु॰ अर्चना रानी (2) मोनी देवी (3) रुबी देवी (4) अनुराधा रानी (5) ऑचल (6) माधुरी (7) अर्चना

शिक्षक अभिभावक समिति -

महाविद्यालय में गठित शिक्षक अभिभावक समिति के अन्तर्गत छात्रा उपस्थिति बढ़ाने के उद्देश्य के दृष्टिगत निम्नलिखित बैठकें आहूत की गई-

प्रथम बैठक - दिनाँक 12 जुलाई 2018 को सम्पन्न हुई बैठक में न्यूनतम उपस्थिति वाली छात्राओं के अभिभावकों को सूचना प्रेषित करने तथा छात्राओं की अधिकतम उपस्थिति हेतु प्रेरित करने पर विचार विमर्श किया गया।

द्वितीय बैठक - दिनाँक 20-09-2018 को निश्चित मानक से कम उपस्थिति वाली छात्राओं की सूची तैयार कर उनके अभिभावकों को सूचनार्थ पत्र प्रेषित किये गये।

तृतीय बैठक - दिनाँक 03-10-2018 न्यूनतम उपस्थिति हेतु सूचनार्थ अभिभावकों के साथ बैठक हुई।

चतुर्थ बैठक - दिनाँक 22-10-2018 को आंतरिक परीक्षा में अनुपस्थित छात्राओं के अभिभावकों के साथ पुनः परीक्षा हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये।

पंचम बैठक - दिनाँक 06-03-2019 को सत्र-सेमेस्टर में न्यूनतम उपस्थिति वाली छात्राओं की सूची से कार्यालय को अवगत कराया गया तथा आगामी बैठक में अभिभावकों द्वारा स्वहस्ताक्षरित शपथपत्र जमा कराने का निर्णय भी लिया गया।

छठी बैठक - दिनाँक 01-04-2019 को न्यूनतम उपस्थिति वाली छात्राओं के अभिभावकों को स्वहस्ताक्षरित शपथपत्र के साथ पुनः परीक्षा हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये।

शिक्षक अभिभावक समिति द्वारा छात्राओं की अधिकतम उपस्थिति हेतु किये गये अनवरत प्रयास अंततः फलीभूत हुए और न्यूनतम उपस्थिति वाली छात्राओं की संख्या में क्रमशः कमी आई।

अन्य उपलब्धियाँ

स्वर्णिम उपलब्धिः

- दिनाँक 12 दिसम्बर 2018 को हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय गढ़वाल के दीक्षांत समारोह में महाविद्यालय की एम.ए. चित्रकला की छात्रा कु॰ कामिनी को 84.3% अंकों के साथ **विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने हेतु स्वर्ण पदक** प्रदान कर सम्मानित किया गया।
- दिनाँक 6 अक्टूबर 2018 को दर्पण एवं भास्कर संस्कृति ज्ञान परीक्षा में महाविद्यालय की 66 छात्राओं ने प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता में निम्न छात्राओं ने विशिष्ट स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया-

कु॰ सानिया	बी.ए. III सेम.	जिला स्तर पर तृतीय स्थान

कु॰ मीनू	बी.ए. III सेम.	स्वर्ण पदक
कु॰ शिवानी सैनी	बी.ए. I सेम.	रजत पदक
कु॰ कविता	बी.ए. V सेम.	रजत पदक
कु॰ हिमानी	बी.ए. III सेम.	कांस्य पदक
कु॰ हेमा नारंग	बी.ए. V सेम.	कांस्य पदक

- संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र भारत एवं भूटान तथा श्री रामचंद्र मिशन एवं हार्टफुलनेस इंस्टीटयूट द्वारा ''सिर्फ तर्क करने वाला दिमाग एक ऐसे चाकू की तरह है जिसमें सिर्फ धार हैं, वह प्रयोग करने वाले का हाथ रक्तमय कर देता है'' विषय पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में कु॰ अनिता (बी.ए. II Sem) तथा कु॰ शिवानी धीमान (बी.ए. II Sem) को **श्रेष्ठ निबंध लेखन** हेतु पुरस्कृत किया गया।
- दिनाँक 29 जनवरी 2019 को के.एल.डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज रुड़की द्वारा 'महिला सशक्तीकरण विषय पर आयोजित **अंतर्महाविद्यालय पोस्टर प्रतियोगिता** में प्रतिभाग करने वाली कु॰ वैशाली (एम.ए. IV Sem) ने द्वितीय तथा कु॰ कौसर जहाँ (बी.ए. VI Sem) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- दिसम्बर 2018 में ग्यारहवी **अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता** (चारु केसल फाउंन्डेशन द्वारा आयोजित) में बी.ए. VI सेम. की 12 छात्राओं ने कलाकृतियाँ भेजकर प्रतिभागिता की। उक्त प्रतियोगिता में कु॰ खुशनसीब (बी.ए. VI सेम.) को सांत्वना पुरस्कार तथा अन्य चार छात्राओं कु॰ जीनत, कु॰ वन्दना, कु॰ राखी तथा कु॰ गुलरेज को संस्था द्वारा मेडल तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किये गये।
- उद्धव भारती संस्था रुड़की द्वारा दिनाँक 28 अप्रैल 2019 का हर मिलाप धर्मशाला रुड़की में '**भारतीय संस्कृति के विविध रंग**' विषय पर एक **अंतर्महाविद्यालय चित्रकला प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसमें चित्रकला विभाग की लगभग 30 छात्राओं ने प्रतिभागिता की। उक्त प्रतियोगिता में महाविद्यालय की कु॰ वन्दना (बी.ए. VI सेम.) को द्वितीय तथा कु॰ वैशाली (एम.ए. IV सेम.) को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 'संस्कृत भारती' नई दिल्ली द्वारा दिनांक 1 से 14 जुलाई 2019 तक आयोजित होने वाले 'संस्कृत संवाद शाला'' में प्रतिभगिता हेतु पूरे उत्तराखण्ड से कु॰ गायत्री (बी.ए. III सेम.) का चयन किया गया।

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

सत्र 2018–19 के लिये महाविद्यालय में गठित आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन समिति (IQAC) में प्रबंध समिति के सचिव श्री सुनील कुमार तायल जी (प्रतिनिधि–प्रबंध समिति), प्राचार्य डा॰ अर्चना मिश्रा (चेयरपर्सन) डा॰ एस.के. गुप्ता, पूर्व प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश (कम्यूनिटी मेम्बर), प्रो॰ स्मिता झा, प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग, आई.आई.टी. रुड़की (कम्यूनिटी मेम्बर), डा॰ अनुपमा गर्ग, एसो॰ प्रो॰ अंग्रेजी (समन्वयक) डा॰ अलका आर्य, एसो॰ प्रो॰ चित्रकला (सचिव) डा॰ कामना जैन, असि॰ प्रो॰ राजनीति विज्ञान, सुश्री अंजलि प्रसाद, असि॰ प्रो॰ समाजशास्त्र, श्रीमती शैली सिंघल, प्रवक्ता कम्प्यूटर साइंस (शिक्षक सदस्य) तथा कु॰ जेबा, बी.ए. अंतिम वर्ष, व कु॰ नूर–ए–दरक्शां, बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (छात्र सदस्य) ने अपना अपना कार्यभार संभालते हुए सक्रिय भूमिका निभाई।

इस सत्र में कुल 9 बैठकें आहूत की गई, जिनका विवरण निम्नवत है–

1– दिनाँक 23 जुलाई 2018 को IQAC सदस्यों की प्राचार्या के साथ एक बैठक हुई जिसमें नवीन सत्र में प्रवेश होने वाली छात्राओं के मार्ग दर्शन हेतु दिशा–निर्देशों की रुपरेखा तैयार की गई।

2- दिनाँक 24 जुलाई 2018 को बी.ए. V Sem की छात्राओं के साथ हुई बैठक में CBCS के अन्तर्गत पढ़ाये जाने वाले G.E. पाठ्यक्रम की विस्तार से जानकारी प्रदान की गई।

3- दिनाँक 27 जुलाई 2018 को प्राचार्या द्वारा IQAC सदस्यों के साथ नवीन सत्र की कार्ययोजना एवं नवीन AQAR प्रपत्र पर विचार विमर्श हेतु बैठक आहूत की गई।

4- दिनाँक 21 अगस्त 2018 को महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाली बी.ए. / बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं हेतु IQAC द्वारा एक अभिविन्यास कार्यक्रम हुआ।

5- दिनाँक 22 अगस्त 2018 को बी.ए. तृतीय सेमेस्टर में प्रवेशार्थियों के साथ हुई बैठक में उन्हें नवीन SEC पाठ्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी गई।

6- दिनाँक 5 अक्टूबर 2018 को AQAR के परिवर्तित नवीन प्रपत्र पर प्राचार्या एवं शिक्षिकाओं के साथ विचार विमर्श किया गया।

7- दिनाँक 27 अक्टूबर 2018 को महाविद्यालय की क्रय समिति के साथ सत्र 2018-19 हेतु आवश्यक उपकरण क्रय करने के सम्बंध में एक बैठक हुई।

8- दिनाँक 29 अक्टूबर 2018 को एम.ए. चित्रकला की छात्राओं को उनके पाठ्यक्रम, परीक्षा कार्यक्रम व विविध गतिविधियों इत्यादि से अवगत कराने हेतु एक बैठक गठित की गई।

9- दिनाँक 22 अप्रैल 2019 को IQAC के समस्त पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ एक आंतरिक बैठक आहूत की गई जिसमें सत्र-पर्यन्त सम्पन्न हुए कार्यों का लेखा जोखा प्रस्तुत करने के साथ महाविद्यालय विकास कार्यों की योजना एवं प्राप्त सुझावों पर विचार विमर्श किया गया।

- सत्र 2017-18 की AQAR नैक पोर्टल पर अपलोड की गई।
- कैरियर एडवांसमेंट स्कीम के अन्तर्गत होने वाली प्रोन्नति के लिए अर्ह प्राध्यापिकाओं के A.P.I. प्रपत्रों की IQAC द्वारा प्रामाणिक जांच की गई। तदुपरांत विश्वविद्यालय द्वारा गठित स्क्रीनिंग कमेटी ने स्टेज 2 से स्टेज 3 के लिये दिनाँक 19 दिसम्बर 2018 को डा॰ भारती शर्मा व डा॰ कामना जैन तथा दिनाँक 27 अप्रैल 2019 को डा॰ किरन बाला की प्रोन्नति हेतु सहमति प्रदान की।

राष्ट्रीय सेवा योजना (सत्र 2018-2019)

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ भारती शर्मा के निर्देशन में स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा निम्न गतिविधियाँ संचालित की गई-

नियमित गतिविधियाँ

19-21 जून 2018- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर **त्रिदिवसीय योग शिविर** सम्पन्न हुआ जिसमें योग विषयाधारित योग चित्र एवं व घोष प्रतियोगिता आयोजित की गई।

15-08-2018- ''स्वच्छ भारत, उज्जवल भारत'' विषय पर **रैली का आयोजन।**

21-09-2018- विश्वशान्ति दिवस के अवसर पर Dignity for All विषय पर **पोस्टर एवं निबन्ध प्रतियोगिता**।

01-10-2018- गाँधी जयन्ती के उपलक्ष में ''स्वस्थ-भीतर स्वस्थ बाहर'' **'घोष'** व **'सुन्दर गमला' स्वस्थ पौधा** तथा **निबन्ध प्रतियोगिता** ''मनुज धर्म धरा का मर्म'' का आयोजन।

3 से 9 अक्टूबर 2018- विवेकानन्द सेवा समिति के सौजन्य से **'सप्त दिवससीय योग शिविर'** योगाभ्यास योग, क्विज व घोष प्रतियोगिता।

28 -02-2019- महाविद्यालय स्तर पर सम्पन्न **विवेकानन्द ज्ञान परीक्षा** में कुल 92 प्रतिभागियों ने परीक्षा दी।

8-03-2019- **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस** के अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या व घटते लिंगानुपात विषय पर भाषण प्रतियोगिता, भारतवर्ष की सशक्त महिलाएँ विषय पर नाट्य प्रस्तुति, रेड रिबन क्लब गठन, एड्स जागरुकता, एक त्वरित सर्वेक्षण-स्वच्छ परिसर एवं एड्स विषयाधारित घोष प्रतियोगिता।

18-03-2019- स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा महाविद्यालय परिसर में आयुर्वाटिका/**किचिन गार्डन का शुभारंम्भ**। साथ ही पक्षियों के लिये जल पात्रों को श्रृंखला बद्ध किया गया।

11-04-2019- 17 वीं लोकसभा चुनावों में स्वयं सेवी छात्राओं ने दिव्यांगों को बूथ नं0 120 पर **मतदान करने में सहयोग** दिया।

13-05-2019- स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा स्वावलम्बी बनाने की आकांक्षा के साथ महाविद्यालय की चित्रकला विभाग की परा-स्नातक छात्राओं के सौजन्य से **हस्त कौशल प्रशिक्षण** दिया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के अवसर पर रा०से०यो० के निर्देशन व जागृति ऑल इण्डिया वीमेन्स कॉन्फ्रेन्स के सौजन्य से पर्यावरण जागरुकता हेतु पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित हुई।

रा०से०यो० एक दिवसीय शिविर आख्या

(2018-2019)

- दिनाँक 24-09-2018- राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस के अवसर पर अभिविन्यास कार्यक्रम में श्रमदान, पर्यावरण चेतना विषय पर नृत्य नाटिका ''मत काटो मुझे बड़ा दु:खता है।'' सत्र पर्यन्त की कार्य योजना पर विचार हुआ। पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डा० कामना जैन, डा० अर्चना चौहान, डा० किरन बाला द्वारा व्याख्यान दिया गया।
- दिनाँक 02-10-2018- गाँधी जयन्ती व लाल बहादुर शास्त्री स्मरण दिवस के अवसर पर 'डांडी मार्च' व 'नमक आन्दोलन' थीम पर रैली के दौरान नाट्य प्रस्तुति व स्वच्छ भारत मिशन पर आधारित नुक्कड़ नाटक स्वच्छ परिसर हेतु श्रमदान व 'मनुज धर्म धरा का मर्म' विषय पर डा० आनन्द भारद्वाज जी शिक्षा अधिकारी द्वारा व्याख्यान व स्वयंसेवी छात्राओं की निबन्ध प्रस्तुतियाँ।
- दिनाँक 22-11-2018- एक दिवसीय शिविर कोमी एकता पर रैली, नुक्कड़ नाटक (गाँधी, नेहरु, पटेल का नाटय संवाद) कौमी एकता घोष प्रतियोगिता, परिसर में श्रमदान।
- दिनाँक 07-05-2019- को 07 अप्रैल विश्व स्वास्थ्य दिवस व 8 मई अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास दिवस के उपलक्ष में मुख्य अतिथि डा० डी.एस.चक्रपाणि, (मुख्य चिकित्सा अधिकारी रुड़की) व डा० मुधलिका चौधरी जी का क्रमश: व्याख्यान एवम् स्वयंसेवी छात्राओं की First Aid Training, महर्षि याज्ञवलक्य व विदुषी गार्गी का शास्त्रार्थ, 'बिटिया के कोमल विचारों-उंगली पकड़ के मेरी चलना सिखाया था ना' गीत पर नृत्य, गणेश स्तुति के साथ नृत्य प्रस्तुति व सत्र पर्यन्त प्रतियोगिताओं का पारितोषिक वितरण।
- दिनाँक 11-05-2019- अभिग्रहीत ग्राम ब्रहमपुर में स्वच्छता, पर्यावरण, कौमी एकता का शंखनाद करती रैली 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' विषय पर नुक्कड़ नाटक, स्वयं सेवी छात्राओं का ग्रामीण महिलाओं के लिये साक्षरता अभियान इत्यादि।

अध्यापिका वर्ग की उपलब्धियाँ

Dr. Archana Mishra (Principal)
Published Research Papers

- 'Education in the Era of Globalization' in Aparajita Shodh Patrika, Issue IV, Dec. 2018, ISSN 2454-4810 PP-81-83

- 'Enhancing Employability of Educated Youth : An Indian Perspective in Shodh Samiksha Aur Mulyankan, Issue-123 April 2019, ISSN-0974-2832, Impact factor 5.901, PP 25-26
- 'गाँधी चिन्तन में निहित वैश्विक दृष्टि' in Research Review Journals Vol. -04, Issue-05, May – 2019, ISSN – 2455-3085, Impact factor 5.214, PP-1403-1405
- मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के प्रति हिंसा in Research Review Journals Vol. -4, Issue-04, April – 2019, ISSN – 2455-3085, Impact factor 5.214, PP-721-725
- "Skill Development for Inclusive and Sustainable Growth in India in Research Review Journals Vol. -4, Issue -04, April – 2019, ISSN – 2455-3085, Impact factor 5.214, PP-1243-1246
- ''न्यूनतम आय योजना: आर्थिक विमर्श के केन्द्र में अंतिम आदमी'' in Research Guru Vol. -13, Issue -1, June – 2019, ISSN – 2349-266x, Impact factor 4.081, PP-1239-1242
- 'Universal Basic Income : A case for India' In International Journals of Innovative Knowledge Concepts, Vol.-VII, Issue -6, June – 2019, ISSN – 2454, 2415, Indexed. by – Google.
- Present two papers in **National Seminar**
- **'Recieved Certificate of – Appreciation** for Sensitization activity held under PCPNDT Act on the occasion of International Women's Day from District Health and Family Welfare Society, Haridwar.
- राज्य राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ, उत्तराखण्ड द्वारा सामाजिक सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में जिला स्तर पर उत्कृष्ट कार्य हेतु **प्रशस्ति पत्र।**

Dr. Anupma Gerg (Asso. Prof. English)
Published Research Papers

- The Role of Institutions for the Adherence to Individual and Social Responsibilities through Youth' in International Journal of Research and Analytical Reviews Vol. 6 Issue 1 March 2019 UGC and ISSN Approved
- A Chance Acquaintance Developing into a Relationship in Tagore's stories : The Postmaster and Cabuli Wallah' in International Journal of Innovative knowledge concepts, Vol VII Issue 3 March 2019 UGC and ISSN blind pear reviewed.
- 'Sport Culture in India: A Gateway for excellence in Higher Education in International Journal of Innovative Knowledge Concepts, Vol.VIII Issue 5 May 2019, UGC and ISSN Blind Peer Reviewed.
- 'Effective Communication: A Need of workplace' in Research Guru Vol.12 Issue 4 March 2019, UGC and ISSN Approved
- Published Paper 'Optimism in Romantic Poets: words worth Shelley and Keats' in Research Guru, Vol. 13 Issue 1 June 2019.
- Published paper 'Imparting Human values through literature' in Research Reviewed Vol. 4 Issue 4, International and UGC Approval.

- Published Paper 'Career in English Literature' in Aparajita Shodh Patrika, Vol. 4 Dec. 2018 Presented two papers in **National Seminar.**

Dr. Alka Arya (Associate Prof. Drg./Ptg.)

Published Research Papers

- संस्थापन कला रुप: नवीन दिशा की ओर एक विधा, in the Edited Book भारतीय कला की विविधाँ एवं प्राविधियाँ (डा॰ अर्चना रानी), ISBN: 978-81-923100-4-6 P.No. 57-59
- प्रागैतिहासिक शैलचित्र: मानव जाति की एक अमूल्य धरोहर: in the Recent Researches in Social Sciences & Humanities; An International Refereed, blind Peer – reviewed, multidisciplinary Research Journal – ISSN: 2348-3318 P.No. 49-52
- ''समकालीन कला जगत के महिला कलाकारों की भूमिका, in "Shodh Sameeksha aur Mulyankan, An International Indexed, Peer Reviews, Refereed UGC Listed and Approved Journal (P.No. 79-81) ISSN-0974-2832, Jan-March 19 Issue – 120, 121, 122.
- ''रेखाओं का रचनात्मक संसार और चित्रकार वीरेन्द्र सिंह राही'', in "अपराजिता शोध पत्रिका, An Annual Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal (Vol. IV Jan-Dec 2018) ISSN: 2454-4310; P.No. 17-19)
- ''नवीन प्रयोगों की ओर उन्मुख भारतीय कला एवं कलाकार'', in 'Shodh Sameeksha Aur Mulyankan, An International Indexed, UGC listed Refereed Journal ISSN 0974-2832, Vol. IV, Issue – 123 April – 2019 P.No. 102-104
- ''सामाजिक परिप्रेक्ष्य में कला शिक्षा एवं कलाकार'', in ' Research Review International, U.G.C. Listed E-Journal- e-ISSN – 2455 – 3085, Vol. 4, Issue -05 May-2019, Impact factor – 5
- ''भारतीय कला परम्परा के सच्चे साधक: वीरेन्द्र सिंह 'राही', in Research Review International, U.G.C Listed e-Journal e-ISSN : 2455-3085, Vol. 4, Issue -04 April-2019.
- ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लोक कलाएं'', in Research Analysis and Evaluation, U.G.C Listed and Approved Journal – ISSN – 0975-3486, Impact factor- 6.315, ISSU -115 April-2019, Vol. IV, P.No. 128-29.
- ''सामाजिक परिप्रेक्ष्य परम्परा और प्रयोगवादी आधुनिक कला'', in Research Guru – An online, U.G.C. listed E-Journal, ISSN-2349-266X, Vol. 13, Issue -1, June – 2019 Impact factor- 4.081
- Attended one day workshop organized by National Assessment and Accreditation Council at Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhora (Haridwar) on 31 Dec. 2018.
- Participation in **4 National**, **1** State and 1 college level **Art Exhibition**, attented **1 Painting workshop** and **1 Group Show**
- **Award Certificate** in 11th All India Art Exhibition Organized by D.P.S. Haridwar
- **Certificate of Honour** by Anand Art Mission, Haridwar
- **Honoured as 'Guest Artist'** by Srijanlok Art Foundation Uttar Pradesh, Bareilly Region – March 2019

Dr. Bharati Sharma (Assistant Professor, English)

- Attended U.G.C. Sponsored **short terms course** from HRDC, University of Lucknow from Jan 19 to Jan 2019.
- Presented 2 papers in National and 1 in State level **Seminar**

Dr. Kamna Jain (Assistant Professor, Political Science)

- Published Paper ' Gandhi's Religious & Political Thoughts in Third Concept in International, U.G..C. approved Journal, ISSN No. 0970-7247, P. No. 31-35.
- Published Paper ''गाँधी शिक्षा दर्शन' in Aparajita Research Journal, Vol. 4, 2018, ISSN No. 2454-4310, P. No. 20-23.
- Published Chapter ''कानून एवं महिला हिंसा: एक अवलोकन'' in the Book महिला सुरक्षा मुद्दे एवं चुनौतियाँ Arpit Prakashan, New Delhi P. No. 256-265.
- Presented 1 paper in International, 2 in National level **seminar.**
- Attended **one day workshop** on the theme NAAC, Revised Accreditation Framework (RAF) at H.N.B. Garhwal University (24-04-2019).

Dr. Kiran Bala (Assistant Professor, Sociology)

- **Published Paper** ''वायु प्रदूषण की समस्या के प्रति जन संचेतना एक अध्ययन'' in राधाकमल मुखर्जी:चिन्तन परम्परा; Peer Reviewed National Refreed Journal of Social Science July-Dec 2018, ISSN No. 0974-0074.
- **Published Paper** '' भोटिया जनजाति की महिलाओं में पर्यावरण जागरुकता (रैणी ग्राम पंचायत के सन्दर्भ में) '' in International Research Journal, 'Recent Research in Social Science and Humanities, July - Dec. 2018, ISSN No. 2348-3318
- Presented 1 paper in **International Seminar** and 3 in **National conference**.
- Participated in District Level **One day workshop** of NSS (7 Dec 2018).
- **Received a letter of appreciation** by NSS for Excellent work in different areas of Social Services.

Dr. Archana Chauhan (Assistant Professor, Drg/Ptg)

- **Attended Refresher course** in "First Arts Music" from the University of Lucknow from 11-31 December 2018.
- Published research paper नक्षत्र और हुमॉयु : एक विश्लेषण'' अपराजिता शोध पत्रिका An Annual Peer Reviewed, Multi disciplinary Research Journal, Vol. 4 Jan-Dec 2018, ISSN; 2454-4310, P.No. – 53
- Published Chapter 'भारतीय समाज में नारी अभिव्यक्ति in 'सामाजिक सन्दर्भ में नारी अभिव्यक्ति– ISBN: 978-93-82171, Pratyush Publication Delhi P.No. 1-7
- Present 2 papers in **National Seminar.**
- Participation in 2 State level and 1 College level **Art Exhibition.**
- **Special Award** by Srijanlok Art Foundation Uttar Pradesh Art Festival – Bijnor.

- Participated in the Campaign' Mission of Unity-Guinness Book of World Record on 30 June - 2019

Ms. Anjali Prasad (Assistant Professor, Sociology)

- **Published Chapter** ''वर्तमान में महिलाओं के विकास में परम्परागत तर्कों की बाधाएं एवं महिलाओं का भविष्य'' in the Edited Book entitle ''महिला सुरक्षा मुद्दें एवं चुनौतियाँ; ISBN: 978-81-940315-3-6, नालन्दा प्रकाशन, दिल्ली, P. No. 129-139.
- Presented one paper in **International Seminar.**
- Participated in **One day workshop** on NAAC Revised Accredition Frame Work (RAF) in H.N.B. Garhwal University, Srinagar on 24-04-2019.
- Attended **one day workshop** organized by National Assesment and Accrediation Council at Chaman Lal Mahavidhylaya, Landhora (Haridwar).

Ms. Anju Sharma (Lecturer Hindi Department)

- Published Research Paper ''लोक साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष: पावरी भाषा के सन्दर्भ में'' in अपराजिता शोध पत्रिका; ISSN: 2452-4310 Issue -4, 2017-18, P. No. ____
- Attended Seven day workshop ''शोध एवं शोध प्राविधि पाठ्यक्रम'' at Dr. Pitanbar Dutt Barthwal Hindi Academy, Uttaranchal - Dehradun, (9th to 15th Jan 2019).

Dr. Uma Rani (Lecturer Botany Department)

- Attended 1 International Conference, 2 National Conference and 1 workshop.
- Presented 2 Paper in National Conference.

Dr. Shalini Verma (Lecturer in Political Science)

- Published Research Paper''लिंगमूलक असमानता और महिलाएँ'' in Aprajita Research Journal; ISSN: 2454-4310 (Vol-4, 2018)
- ''भारत–चीन सम्बन्धों में डोकलाम विवाद'' in Aprajita Research Journal ISSN: 2454-4310 (Vol-4,2018)
- Published Chapter ''भूमण्डलीयकरण मीडिया और भारतीय महिलाएँ'' in edited book ''महिला सुरक्षा मुद्दे एवं चुनौतियाँ'' ISBN: 978-93-32185-30-7 (2018)

Miss Parveen (Lecturer in Political Science)

- Published Chapter ''तीन तलाक इस्लामी कानून का मूल हिस्सा है.....' को समान नागरिक संहिता द्वारा चुनौती'' in edited book 'तीन तलाक: एक सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्श; ISBN: 987-93-80565-59-5
- Published Chapter ''भारत में महिलाएँ: एक बदलती तस्वीर'' in edited book 'महिला सुरक्षा मुद्दे एवं चुनौतियाँ; ISBN: 987-93-82186-30-7 2018

- Published Research paper ''भारत में भाषायी संकट एवं राजनीति'' Recent Researches in Social Sciences & Humanities ISSN: 2348-3318 Mar 2019
- Published Research paper ''जाति प्रथा की राजनीति: वैदिक काल से वर्तमान काल तक'' in Aparajita Research Journal ISSN: 24-54-4310 Vol 4, 2018

Dr. Shikha Sharma (Lecturer in Sanskrit)

- Published Research Paper ''काव्यशास्त्रों में रस विमर्श'' in Aprajita Research Journal Vol-4, 2018 ISSN No. 2454-4310
- Presented 2 Research Paper in National seminars.

Ms. Neha Sharma (Lecturer in Economics)

- Published Research Paper " Job Satisfaction of working women" in Aprajita Research Journal Issue-4, Jan-Dec. 2018 ISSN No. 2454-4310
- Paper entitled, " Green Banking Leads Sustainable Development" in an International Journal" Recent Researches in Social Science & Humanities, Issue 1, Vol.-6, Jan-Feb-March 2019, ISSN 2348-3318.
- Presented two research papers in **National seminar.**

महाविद्यालय विकास कार्य

महाविद्यालय में शिक्षण, छात्रा सुरक्षा एवं आधारभूत सुविधाओं की दृष्टिगत रखते हुए प्रबन्ध समिति द्वारा इस वर्ष भी अनेक विकास कार्य कराये गये–

- कक्ष संख्या 2 को आधुनिक आडियो/विजुअल सुविधा से युक्त स्मार्ट क्लासरुम में परिवर्तित किया गया।
- समय सारिणी एवं पाठ्यक्रम के अनुरुप अतिरिक्त 2 कक्षों की व्यवस्था की गई।
- कक्षों में आवश्यक फर्नीचर जैसे कुर्सियाँ, मेज तथा लेक्चर स्टेण्ड इत्यादि उपलब्ध कराये गये।
- आडियो/विजुअल कम में नवीन पर्दो (Blind Curtains) की व्यवस्था की गई।
- महाविद्यालय की पेयजल व्यवस्था के रख–रखाव को सुचारु बनाया गया।
- चित्रकला विभाग की कला प्रदर्शनी हेतु लैब में वीडिंग का कार्य पूर्ण किया गया।
- विज्ञान प्रयोगशालाओं में आवश्यक नवीन उपकरणों एवं सामग्री का क्रय किया गया।

संयोजन–डा० अलका आर्य

डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या)

मेधावी छात्राएं सत्र 2017-18

बी०ए०, तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक

कु० रानी (8.14 CGPA)

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० संध्या मिश्रा

कु० रेशमा

कु० नेहा रानी

कु० काजल

कु० शीखा

कु० नगमा

कु० रुमाना

कु० रूचि सैनी

कु० पूजा

कु० नाजिया हसन

कु० सादिया ज़मा

कु० राबिया

कु० प्रीति देवी

कु० गुलफशा

कु० आरजू

कु० सुरभि सैनी

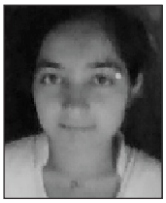

कु० प्राची सिंह

कु० अनन्या सिंह

कु० अनुराधा

कु० हीना

कु० प्रियंका चिनालिया

कु० शालू रानी

कु० बुलगुल जैन

कु० सूचि जयन्त

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० अन्जुम

कु० नाहिद

कु० आयशा प्रवीन

कु० बुशरा रानी

कु० अन्जुम प्रवीन

कु० भारती सैनी

कु० कविता

कु० प्रीति कुमारी

कु० स्वाति

कु० समरीन

कु० अमरीन

कु० आदीबा

कु० अमरीन

कु० आसरा

कु० ज़ेबा

कु० अफरोज़

कु० आकांक्षा उपाध्याय

कु० रुखसार

कु० ऊर्वशी

कु० शैफाली

कु० खुशबु रानी

कु० शाज़मा

कु० नीतू कुमारी

कु० ओजस्वी धीमान

कु० प्रीति

कु० पारुल कश्यप

कु० आस्मा

कु० शिवानी

कु० ज्योति

कु० गज़ाला प्रवीन

कु० नेहा प्रवीन

कु० निशि

कु० ज्योति

कु० मोनिका देवी

कु० नज़मा

कु० शालू

कु० गुलनाज़ खान

कु० बुशरा

कु० रज़िया

कु० नीलम

कु० स्वाति

कु० शिवानी

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० उफक नाज़

कु० टीना

कु० नीशू

कु० शीजा खानम

कु० साहिबा

कु० आमरी खातून

कु० गुलफशा मलिक

कु० साहिबा राव

कु० रुबि

कु० संध्या

कु० सोफिया

कु० प्रियंका कुमारी

कु० प्रियंका

कु० सपना

कु० स्वाति रवि

कु० आमीन फातिमा

कु० रुखसाना

कु० पूजा सैनी

कु०प्रीति

कु० सोनम

कु० आरती

कु० कोमल

कु० रेशमा

कु० निधि रानी

कु० लक्ष्मी देवी

कु० रीतू

कु० आस्मां

कु० सोनम

कु० गज़ाला

कु० दीक्षा

कु० रुपा देवी

कु० रिक्की

कु० पूजा

मेधावी छात्राएं द्वितीय वर्ष (सत्र 2017-18)

चित्रकला में सर्वाधिक अंक

कु० कामिनी देवी (84.30%)
विश्वविद्यालय वरीयता सूची में
प्रथम स्थान (स्वर्ण पदक)

राजनीति विज्ञान में सर्वाधिक अंक

कु० किरन (79.2%)

ए०ए०, द्वितीय वर्ष चित्रकला में प्रथम श्रेणी

कु० वोमिका

कु० आकांक्षा शर्मा

कु० ललिता रानी

कु० अन्तिमा

कु० लिमि देवी

कु० कोमल

कु० मनीषा

कु० नैना शर्मा

कु० गुलफशा

कु० नीतू देवी

कु० रविता

कु० मुस्कुराना

कु० आँचल

कु० शालू

कु० नेहा चौधरी

कु० वर्षा रानी

कु० प्रीति

कु० आयशा प्रवीन

कु० शिल्पी

कु० रितु अष्टवाल

ए०ए०, द्वितीय वर्ष चित्रकला में प्रथम श्रेणी

कु० दामिनी

कु० मीना देवी

कु० तरन्नुम

कु० शर्मिष्ठा

कु० आरती चौहान

कु० कल्पना पाण्डेय

कु० शिवानी

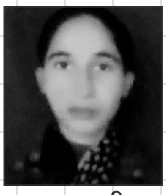
कु० अक्षी

ए०ए०, द्वितीय वर्ष राजनीति विज्ञान में प्रथम श्रेणी

कु० अनुपमा

कु० सुजाता

कु० पिंकी सैनी

कु० मोनिका देवी

कु० प्रिया रानी

कु० पूजा देवी

कु० भावना

कु० मीनू

कु० मानसी त्यागी

कु० रेखा

कु० साहिरा

कु० मुनिया देवी

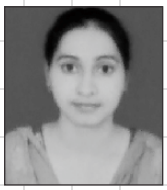
कु० शाहिस्ता

कु० भावना

कु० सुप्रिया

कु० गुलफ्शा

कु० शालू

कु० जोशी

कु० मीनू देवी

कला संकाय शैक्षिक गतिविधियाँ

निर्णायक मंडल : वाद विवाद प्रतियोगिता

अतिथि व्याख्यान

कन्या भ्रूण हत्या पर विचार प्रस्तुतीकरण

संस्कृत सम्भाषण शिविर

कारगिल विजय दिवस

मैन्सटुअल हाईजीन जागरुकता कार्यक्रम

आई.क्यू.ए.सी. द्वारा आयोजित ओरिएन्टेशन प्रोग्राम

हिन्दी दिवस समारोह

संस्कृत सम्भाषण में मंचासीन अतिथि

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

विज्ञान संकाय शैक्षिक गतिविधियाँ

विज्ञान शिविर–पारितोषिक वितरण

पृथ्वी दिवस समारोह

निबंध लेखन प्रतियोगिता

सेमिनार प्रस्तुति

विचार गोष्ठी

इलेक्ट्राप्टम – 19

विज्ञान दिशा भित्ति पत्रिका प्रस्तुति

रसायन विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

विज्ञान शिविर में प्रमाण पत्र के साथ छात्राएँ

क्रीड़ा गतिविधियाँ

माननीय–अतिथिगण एवं प्रबंध समिति द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

क्रीड़ा समापन समारोह शुभारम्भ

इन्डोर गेम्स प्रतियोगिताएँ

ताइक्वांडो प्रदर्शन

आउटडोर गेम्स प्रतियोगिताएँ

प्रादेशिक सामूहिक नृत्य

पुरस्कार वितरण

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

वादन प्रतियोगिता

सामूहिक नृत्य

मूक अभिनय

नाटिका मंचन

सामूहिक नृत्य

सामूहिक नृत्य

भारतीय परिधान प्रतियोगिता

पुरस्कार वितरण

पुरस्कार वितरण

चित्रकला विभाग गतिविधियाँ

कामिक्स मेकिंग वर्कशॉप

कॉफी पेन्टिंग वर्कशॉप

न्यूज पेपर क्राफ्ट वर्क वर्कशॉप

पारम्परिक एवं पटचित्रकला प्रतियोगिता

महिला सशक्तीकरण पोस्टर प्रतियोगिता

स्वावलम्बन द्वारा हस्तकला प्रदर्शनी

छात्राओं द्वारा भित्ति चित्रण

पेन्टिंग प्रतियोगिता

छाता चित्रण प्रतियोगिता

चित्र कला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' (कुछ झलकियाँ)

माननीय मुख्य अतिथि द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन

प्रदर्शनी केटेलॉग विमोचन

प्रदर्शनी का अवलोकन करते मुख्य अतिथि व अन्य दर्शक

प्राचार्या के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन करती ज्वाइंट मजिस्ट्रेट श्रीमती नितिका खण्डेलवाल

चित्रकला प्रदर्शनी की कुछ आकर्षक झलकियाँ

शैक्षिक भ्रमण

आई.आई.टी. रुड़की

सी.बी.आर.आई. रुड़की

क्वांटम विश्वविद्यालय रुड़की

आई.आई.टी. रुड़की

आई.आई.टी. रुड़की

सी.बी.आर.आई. रुड़की

ज्ञान कुंभ पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

कैरियर गाइडेन्स सेल गतिविधियाँ

Sports Career Workshop

Career in Banking - Seminar

One day training Excel Program

Lecture on Future Perspective after Graduation

Workshop Career in Civil Service

Career orientation by Mahendra's

Three Days Computer Training

One day training Excel Program

Interactive session on competitive Exam

Motivational Lecture

गाँधी स्मरणोत्सव

गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित प्रबंध समिति व आयोजक

गाँधी पुस्तक प्रदर्शनी – आई.आई.टी. रुड़की

गाँधी स्मृति चित्रशाला

पुस्तकालय भ्रमण – आई.आई.टी. रुड़की

केलीग्राफी प्रतियोगिता – गाँधी के प्रेरक कथन

हस्ताक्षर अभियान

पत्र लेखन प्रतियोगिता

गाँधी दर्शन–दिशा भित्ति पत्रिका

अन्य गतिविधियाँ

वि.वि. दीक्षान्त समारोह में स्वर्णपदक प्राप्त करती कु. कामिनी

वार्षिक पत्रिका अपराजिता–विमोचन

शोध पत्रिका 'अपराजिता'–विमोचन

उद्घाटन–लाइब्रेरी कम्प्यूटरीकरण

उद्घाटन–पुस्तकादान योजना

छात्रा संघ–शपथ ग्रहण समारोह

छात्रा संघ चुनाव–मतदान एवं मत गणना

अन्य गतिविधियाँ

शपथ – पर्यावरण संरक्षण

स्वच्छता सर्वेक्षण में महाविद्यालय को प्रथम रैंक से सम्मानित करते नगर निगम रुड़की के पदाधिकारी

ग्रीन ब्रिगेड के अन्तर्गत श्रमदान

आई.आई.टी. महिला क्लब द्वारा छात्राओं को मेंहदी प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण

ओडियो विजुअल स्मार्ट बोर्ड डिमोन्स्ट्रेशन

ओडियो विजुअल कक्ष का उद्घाटन

शिक्षक अभिभावक बैठक

अग्निशमन प्रशिक्षण

colored k 10 pages k baad ayenga

'हम भारत के लोग .....'

डा॰ अर्चना मिश्रा
एसो॰ प्रो॰ अर्थशास्त्र

स्वाधीन भारत ने 26 जनवरी 1950 को अपना संविधान लागू कर एक संप्रभु राष्ट्र का दर्जा प्राप्त करने के साथ ही स्वयं को एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया था। देश की तत्कालीन श्रेष्ठतम मनीषा द्वारा स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आधारभूत मूल्यों पर निर्मित संविधान का उद्देश्य था एक ऐसे समाज की स्थापना करना जिसमें देश का प्रत्येक नागरिक अभावों से मुक्त होकर सम्मान के साथ जीवन यापन कर सके और जहाँ सामाजिक समरसता और साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखते हुए राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सके। भारतीय संविधान की गणना विश्व के श्रेष्ठतम संविधानों में होती है। '**हम भारत के लोग .....**' वाक्यांश से प्रारंभ संविधान की उद्देशिका में भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने तथा प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता और अवसर की समानता सुनिश्चित करने के संकल्प के साथ सविधान देश के नागरिक को ही '**अंगीकृत, अधिनियमित व आत्मार्पित**' किया गया है। हमारी लोकतात्रिक व्यवस्था ने हमें मौलिक अधिकार प्रदान किये हैं तो साथ ही हमारे नागरिक कर्तव्य भी सुनिश्चित किये हैं। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देकर विचार पूर्वक उपयुक्त प्रतिनिधि चयन का अधिकार दिया है तो व्यवस्था की खामियों पर प्रश्न उठाने और समस्याओं का हल खोजने का दायित्व भी। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता तभी संभव है जबकि नेतृत्व चयन से लेकर व्यवस्था संचालन में भी 'लोक' अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति तक की भागीदारी सुनिश्चित हो। युगद्रष्टा, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी स्वाधीन भारत में अपने 'रामराज्य' के स्वप्न को ग्रामस्वराज्य के माध्यम से '**अंत्योदय**' से 'सर्वोदय' तक साकार होते देखना चाहते थे। किन्तु स्वतत्रंता के सात दशकों से अधिक की यात्रा के बाद आज हम पाते हैं कि 'लोक' तो कहीं पीछे छूट गया है और 'तंत्र' लोक पर हावी हो गया है।

'हम भारत के लोग.....' जहाँ एक ओर अपने संसदीय लोकतंत्र को अक्षुण्ण बनाये रखकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहे हैं, वहीं इस उपलब्धि का एक चिन्तनीय पक्ष भी है- लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रणालियों का शनैः शनैः होता क्षरण। एक तरफ कृषि, उद्योग विज्ञान-प्रौद्योगिकी, परमाणु शक्ति एवं अंतरिक्ष विज्ञान आदि क्षेत्रों में हमने निरंन्तर नवीन उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। वहीं दूसरी ओर समाज का एक बड़ा हिस्सा अभी भी गरीबी और अशिक्षा के अभिशाप को झेलते हुए विकास प्रक्रिया के हाशिये पर है। आज राजनीति में प्रत्येक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, निरंकुशता, अपराधी तत्वों का प्रवेश, क्षेत्रवाद व जातिवाद की राजनीति का निहित स्वार्थो के लिए प्रयोग और सबसे बढ़कर राजनेताओं में उच्चनैतिक आदर्शों का अभाव, जहाँ एक ओर देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था 'संसद-भवन' की गरिमा क्षीण कर रहा है, वहीं देश के पूर्ण क्षमता के साथ विकास में भी बाधक है। निरंतर बढ़ते राजनीतिक प्रदूषण से प्रशासन व लोकजीवन भी अछूते नहीं रहे हैं। लेकिन वर्तमान समस्याओं का जितना दोष धन एवं सत्ता लोलुप, संगठित व संवेदनशून्य नौकरशाही को दिया जाता है; उसका कुछ अंश तो हमारी अशिक्षित, देश की समस्याओं के प्रति उदासीन व आत्महीनता से ग्रस्त जनता के खाते में भी अवश्य जाता है। जनता स्वयं ही अयोग्य प्रतिनिधियों को अपना नेतृत्व प्रदान कर या नेतृत्व चयन प्रक्रिया से उदासीन रहकर अपने शोषण का मार्ग प्रशस्त करती है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस समस्या का एकमात्र समाधान नागरिकों की सतत जागरुकता ही है। राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व व दूरदर्शी मतदाता ही लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण रोककर देश के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण कर सकते हैं। एक और महत्वपूर्ण सत्य भी ध्यान में रखना होगा कि **विरोध की आवाज भी एक 'जीवन्त लोकतंत्र' का अत्यंत आवश्यक हिस्सा हैं, अतः रचनात्मक विरोध के हर स्वर को सहमति मिलना जरुरी है** वरना कब लोकतंत्र धीरे-धीरे तानाशाही की राह पर बढ़ निकलेगा हम जान भी नहीं पायेंगे।

संविधान सभा की आखिरी बैठक में बाबा साहेब अम्बेडकर ने एक नव-स्वतंत्र और जनतांत्रिक मूल्यों के आधार शासन चलाने को तत्पर राष्ट्र को एक स्पष्ट चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था-'**आज मात्र राजनीतिक जनतंत्र पर्याप्त नहीं है, हमें सामाजिक जनतंत्र भी स्थापित करना होगा जिसके बिना हमारी आजादी अधूरी रहेगी।**' यह सच भी है, भारत जैसे बहुधर्मी, बहुभाषी और विविध सांस्कृतिक परंपराओं से युक्त देश में हम विविधता में एकता की बात तो करते हैं लेकिन आज हम धर्म, भाषा और जाति के नाम पर बँटते जा रहे हैं। यह विभाजन एक राष्ट्र के रुप में हमारे अस्तित्व और अखण्डता को सबसे बड़ी चुनौती है। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रों के उत्थान व पतन में सामाजिक सद्भाव व समरसता एक महत्वपूर्ण तत्व है। अतीत के पन्नों में दर्ज धार्मिक व जातीय संघर्षो की बदरंग गाथाओं को जिन्दा करने की कोशिश नफरत की ऐसी आँधी बहायेगी जिसमें हमारा अस्तित्व ही तिनके की तरह उड़ जायेगा।

सामाजिक समरसता प्राप्त करने की कोशिश प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। हम सबको किसी धर्म, प्रदेश, जाति विशेष का प्रतिनिधि नहीं बल्कि एक सच्चा 'भारतीय' होने का संकल्प लेना होगा। यदि हम वर्तमान परिदृश्य में परिवर्तन चाहते हैं तो इसके लिए राजनीति, प्रशासन और जनमानस तीनों ही स्तरों पर एक राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लिए गहन चिंतन आवश्यक है। राष्ट्रीय चेतना से युक्त एक कर्मनिष्ठ व जागरुक जनशक्ति ही देश के विकास में सार्थक सहयोगी बनने के साथ-साथ विश्वमंच पर भारत को एक शक्तिशाली लोकतांत्रिक गणराज्य के रुप में प्रतिष्ठित कर सकती हैं।

युगपुरुष - अटल

डा0 अलका आर्य, एसो. प्रो. चित्रकला

'अटल' 'अडिग' धीर-गंभीर
सरल-निश्छल
बहता सा निर्मल नीर.....।
'ओजस्वी'- 'तेजस्वी'
शब्दों का जादूगर 'दूरदर्शी' .....।
मातृभाषा प्रेमी, हिन्दी कवि हृदयस्पर्शी।
वाद-विवाद, संवाद तीक्ष्ण पर.....
अन्तर से अति संवेदनशील।
राजनीति का सफल योद्धा
कर्मभूमि पर सदा गतिशील .....।।
वो राष्ट्रहित का सजग प्रहरी .....
ले तिरंगा हाथ में .....
चलता रहा ..... बढ़ता रहा .....
निर्भीक हो उस अग्निपथ पर.....
'अजेय', 'अभेद' और 'दृढ़ संकल्पित'।
क्या हार में, क्या जीत में.....
डिगा नहीं, वह मात्र किंचित।
अपने 'अटल कर्त्तव्य पथ' पर.....
'अटल निश्चय' के विजय रथ पर,
करता रहा राष्ट्र गुणगान .....,

नित-नये भारत का नव -निर्माण....।।
है, 'अटल सत्य'... श्रेष्ठ कृत्य ....,
कभी मिट नहीं सकते.....।
घनघोर प्रलय के बादल
'रवि' को, कभी हर नहीं सकते....।।
यह 'अटल आस्था', 'अखंड ज्योति' सी,
जन-जन में जल गई...।
उनके 'अटल विश्वास' की
गाथा निराली बन गई,
कि जिन्दगी की जंग में...
मौत से भी ठन गई...।
ऐसे 'अटल पुरुषार्थ' की
जग में अमिट छाप सी बन गई।
वो हुआ अमर, यह कहकर....,
कि मैं जी लिया जी भर-
कि अब मन से मरु....।
ऐसे 'अनन्य युगपुरुष' ...
'भारत-रत्न' 'अटल' को
मैं शत्-शत् नमन करु...
मैं शत्-शत् नमन करु॥

लोकतंत्र और हिन्दी साहित्य

डा० अंजू शर्मा
प्रवक्ता, हिन्दी

साहित्य और लोकतंत्र में एक बेजोड़ रिश्ता है। लोकतांत्रिक शक्ति को समझकर ही एक रचनाकार अपने नाटक, कहानी, उपन्यास की रचना करता है। कोई भी नाटक, उपन्यास की रचना एक सामाजिक जीवन से ही निकलकर आती है। इसलिए यदि कह दिया जाय कि समाज, साहित्य और व्यवस्था एक ही कार्य के कई विभिन्न नजरिए हैं इनमें कोई दो राय नहीं। उदाहरणार्थ प्रेमचन्द की कहानियों में लोकतंत्र की सीधी झलक नजर आती है। हम पाते हैं कि जब भी ऐसी परिस्थिति निर्मित हो जाती है; जहाँ लोकतंत्र खतरे में पड़ जाता है, वहाँ साहित्य आगे बढ़कर दायित्व उठाता है। अगर समाज लोकतंत्र की कसौटी है तो लोकतंत्र की कसौटी साहित्य है। केदारनाथ जी के शब्दों में–

देश की राजनीति, बिना आग पानी के, खिचड़ी पकाती है, जनता हवा खाती है।

किस तरह लोग अपने स्वार्थ के लिए लोकतंत्र को हथियार बनाकर प्रयोग में लाते हैं और सामान्य जनता उनके षडयंत्रों से अनभिज्ञ उनका असली चेहरा नहीं देख पाती। केदारनाथ जी की कविता 'सब चलता है लोकतंत्र में' वह इस पर व्यंग्य करते हुए कहते है कि –

सब चलता है लोकतंत्र में, चाकू–जूता–मुक्का–मूसल और बहाना
हे मेरी तुम भूल–भटक कर भ्रम फैलाये, गलत दिशा में दौड़ रहा है बुरा जमाना।''

वास्तव लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन करके तानाशाही वृत्ति के लोग अपने हित में व्यवस्था को परिवर्तित करते जा रहे हैं। व्यवस्था के नाम पर चल रही धक्काशाली सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर है। वे लोकतंत्र झंडे की तरह उठाया जाना देखकर दिग्भ्रमित है। कविवर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी इस पर लिखते हैं–

लोकतंत्र को जूते की तरह, लाठी पर लटकाये, भागे जा रहें है सभी, सीना फुलाये।''

भवानी प्रसाद मिश्र जी अपनी कविताओं में वर्तमान परिपेक्ष्य में लोग जिन लोकतांत्रिक भवनाओं में संलग्न है पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहते है कि –

''कुछ लोग प्रजातंत्र मर गया कहकर उदास है। जैसे जिन्दा था कभी वह बेचारा।''

इस प्रकार हम पाते है कि हिन्दी साहित्य की चाहे कोई भी विधा हो कहानी, नाटक, उपन्यास, सभी लोकतंत्र को विविध रूपों में चित्रित किया है। कहीं व्यंग्य है, तो कहीं चिंता; कहीं सुधार की कामना हैं, तो कहीं उस पर रोष, आज समाज और देश के पक्ष में लोकतंत्र को बचाने की चुनौती साहित्य की ही है इसलिए हमारे साहित्यकार भी इस दिशा में प्रयासरत हैं।

●●●

मैं नहीं जानता कल का भारत कैसा होगा, मैं सिर्फ अपनी आशा और अपेक्षा ही व्यक्त कर सकता हूँ। मैं भौतिक धरातल पर भारत का विकास चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ धर्म या जाति भाषा या प्रांत, आदि के संकुचित वृत्ति वाले झगड़े समाप्त हो और एक ऐसे जाति–विहीन, वर्ग विहीन समाज का निर्माण हो जहाँ पर व्यक्ति को अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार विकास का अवसर मिले।

पं० जवाहर लाल नेहरु (आजाद मेमोरियल लेक्चर, फर० 1959 का अंश)

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विस्तार प्रकोष्ठ द्वारा '**हमारा लोकतंत्र**' विषय पर आयोजित विचार प्रस्तुति के चयनित अंश

जनता ही संप्रभु

कु॰ हेमा नारंग
बी.ए. III Year

आजादी की कभी शाम न होने देंगे, शहीदों की कुर्बानी बदनाम न होने देंगे।
बची है एक बूँद भी जब तक लहू की, तब तक भारत माँ का आँचल नीलाम न होने देंगे॥

अब्राहम लिंकन के अनुसार, ''**लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन है।**'' लोकतांत्रिक राष्ट्र में नागरिकों को वोट देने और उनकी सरकार का चुनाव करने का अधिकार होता है। कार्लमार्क्स ने कहा था, ''लोकतंत्र समाजवाद का रास्ता है।'' लाल बहादुर शास्त्री जी ने भी कहा था – ''लोगों को सच्चा लोकतंत्र या स्वराज कभी भी असत्य और हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता है।''

भारत का लोकतंत्र केवल अपने नागरिकों को 0वोट देने का अधिकार प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक समानता के प्रति भी काम कर रहा है। वुडरो विल्सन ने कहा था – **मैं प्रजातंत्र में इसलिए विश्वास करता हूँ क्योंकि यह प्रत्येक मनुष्य की शक्ति को उन्मुक्त करता है।**'' भारतीय लोकतंत्र अपने नागरिकों को जाति, रंग, पंथ, धर्म और लिंग आदि पर ध्यान न देकर अपनी पसंद से वोट देने का अधिकार देता है। लोकतंत्र की सुनो पुकार, मत खोना अपना अधिकार। भारतीय लोकतंत्र के पाँच लोकतांत्रिक सिद्धान्त है संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्र और लोकतांत्रिक गणराज्य।

हालाँकि भारत में लोकतंत्र की सराहना की जा रही है पर अभी भी इसे मीलों का सफर तय करना है। देश की विशाल सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता अपने लोकतंत्र के लिए एक बड़ा चुनौती है। लोगों के बीच यह मतभेद गंभीर चिंता का विषय है। **लोकतंत्र में जनता ही राजा है, वही सच्ची संप्रभु है, उसे शक्तिहीन व अधिकारहीन प्रजा के स्तर तक गिराना खतरे से खाली नहीं। राजा-प्रजा की सोच रखने वाले हमारे नेताओं को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए।** सरकार को सही मायने में लोकतंत्र को सुनिश्चित करने के लिए गरीबी, निरक्षरता, सांप्रदायिकता, लिंग भेदभाव ओर जातिवाद को समाप्त करने पर काम करना चाहिए।

गद्दी हटाओ, जमीन पर लाओ। तुम लोकतंत्र हो तानाशाही को मिटाओ।
सारा भारत सोता है नीचे उन इक्के-दुक्के को भी धूल चटाओ।
हाथ क्यों फैलाते हो हक अपना धाक से लाओ।
कुर्सी धारी सब करेंगे सेवा, हे! भारत आवाज लगाओ।
तुम लोकतंत्र हो, तानाशाही को मिटाओ।

जैसी जनता वैसा राजा, प्रजातंत्र का यही तकाजा

कु॰ आफरीन
बी.ए. VI Sem

भारतीय सभ्यता सबसे प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है और भारत एक सफल और बड़ा लोकतांत्रिक देश है जो विभिन्न मुगल राजाओं व अंग्रेजों का गुलाम रहा है। असंख्य कोशिशों के बाद अन्ततः भारत 1947 में आजाद होकर एक बड़ा लोकतांत्रिक देश बन गया। भारतीय लोकतंत्र में समस्त जनता को व्यस्क मताधिकार प्राप्त है जिसमें जाति व धर्म का तो कोई महत्व ही नही है किंतु चुनाव के समय पर सभी पार्टिया व नेता समानता व धर्मनिरपेक्षता का नारा मात्र लगाते हैं। वे तो धर्मसूचक शब्दों का प्रयोग कर भोली भाली जनता को बहकाते हैं, जनता भी उनके बहकावे में आ जाती है।

आज 29 राज्यों के करोड़ों लोग लम्बी-लम्बी कतारों में खड़े होकर देश का भविष्य चुनते हैं। आज हर कोई लोकतंत्र को हाथ का खिलौना समझता है। इस बात को हम दंगे फसाद के रूप में भी देख सकते हैं। शपथ पत्र में न जाने कैसी-कैसी कसमें खाते ये नेता, मैं ऐसा करुगाँ, मैं वैसा करुगाँ, जब करते है ऐसे घिनौने काम तब कहाँ जाती है वो झूठी कसमें वो झूठी शान। अभी भी समय है हम सही चुनाव करके अपने लोकतंत्र की सफलता में योगदान दें। आज के युवाओं को सोच बदलकर एक नया कदम लोकतंत्र की सफलता की ओर बढ़ाना है।

सोच बदलेगी तो समाज बदलेगा, समाज बदलेगा तो देश बदलेगा, लोकतंत्र बदलेगा।

विपक्ष : एक मार्गदर्शक

कु॰ कविता
बी.ए. V सेम.

ऐ मेरे वतन आबाद रहे तू, मैं जहाँ रहूँ, जहाँ में याद रहे तू,
ऐ मेरे वतन आबाद रहे तू, तू ही मेरी मंजिल है, पहचान तुझी से,
पहुँचू मैं जहाँ भी मेरी बुनियाद रहे तू, ऐ मेरे वतन आबाद रहे तू।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पक्ष-विपक्ष दो वर्ग होते हैं। पक्ष से अभिप्राय शासक दल से होता है तथा जो दल शासक दल के मुकाबले अल्पमत में होते है वे विपक्ष कहलाते हैं। लोकतंत्र में इन दोनों वर्गों का विशेष महत्व है। आधुनिक युग में सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र का महत्व बहुत बढ़ गया है। यह प्रणाली ही जनहित में स्वच्छ, सरल तथा उचित शासन प्रदान करती है क्योंकि इसमें मूलत: शासन का अधिकार व्यक्ति, वंश या परम्परा को नहीं बल्कि जनता को होता है। गिडिंग्स ने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है -''लोकतंत्र मात्र सरकार का ही एक स्वरूप नहीं है, बल्कि वह राज्य तथा समाज का भी एक रुप या स्थिति है अथवा लोकतंत्र इन तीनों का सम्मिश्रण है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत में लोकतंत्र का आगमन हुआ। 26 जनवरी 1950 में हमारा राष्ट्र एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न गणराज्य बन गया। सन् 1947 से लेकर आज तक हमारे देश भारत में लोकतात्रिक शासन व्यवस्था ही है। लोकतंत्र में तानाशाही न होकर सामान्य समाज की मान्यताओं का विशेष महत्व होता है। शासन करने वाला एक व्यक्ति न होकर समस्त जनता होती है। जो अपनी शासन व्यवस्था के लिए अपने कुछ प्रतिनिधि निर्वाचित करके भेजती है। इन निर्वाचित प्रतिनिधियों में जिस दल का प्रतिनिधित्व होता है। वह सरकार का गठन करके समस्त देश की शासन व्यवस्था को संभालती है। विपक्ष अनेक प्रकार से सरकार का मार्गदर्शन करता है, तथा जनहित के कार्यो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विपक्ष सरकार के उन सभी कदमों का घोर विरोध करती है जो न्याय, निष्पक्षता और सत्य से प्रेरित नहीं होते हैं। यदि सरकार अपने दोषों को छिपाए तो छिपा नहीं सकती क्योंकि विपक्ष उन सभी से पर्दा हटाता रहता है।

लोकतन्त्र : मत का अधिकार

कु॰ जेबा
बी.ए. IV सेम.

भारत दुनिया का सबसे बढ़ा लोकतंत्र है। जिसे सदियों से विभिन्न राजाओं सम्राटों द्वारा शासित एवं यूरोपियों द्वारा उपनिवेश बनाया गया। 15 अगस्त 1947 में अंग्रेजो के औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के बाद भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया। लोकतंत्र को सरकार का सबसे अच्छा रूप कहा जाता है। यह देश के नागरिकों को वोट डालने और अपनी इच्छा से अपने नेताओं का चयन करने की अनुमति देता है। लोकतंत्र सप्रंभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतान्त्रिक गणराज्य सहित पाँच सिद्धान्तों पर चलता है।

भारतीय लोकतंत्र का स्वरूप संघीय है। जिसके अन्तर्गत केन्द्र तथा राज्यों के मध्य शक्तियों का विभाजन किया गया है। भारत के कई राज्यों में निश्चित अंतराल पर चुनाव आयोजित कराए जाते हैं, जिनमें पार्टियाँ जीतकर केन्द्र तथा राज्य में सरकार बनाने के लिए प्रतिस्पर्द्धा करती है। संसद के चुनाव हर 5 साल में एक बार आयोजित कराए जाते हैं। भारत में लोकतंत्र का अर्थ केवल वोट देने का अधिकार नही है वरन् सामाजिक और आर्थिक समानता को भी निश्चित करना है। किन्तु इसमें कतिपय दोष आ गए हैं। जैसे - यह सार्वजनिक धन व समय के दुरुपयोग को बढावा देता है। यह भ्रष्टाचार को उकसाता है।

जब ससंद की सीमा के अन्दर, रुपये लहराये जाते हैं।
जब सत्ता की बलिवेदी पर, सिद्धान्त चढ़ाए जाते हैं।
जब दूध की नन्हीं चाहत में, एक छोटा बच्चा रोता है
तब लोकतंत्र क्या सोता है?

अत: हमारा कर्तव्य है कि लोकतंत्र को सफल बनाने हेतु हम दोषों को दूर करने का प्रयत्न करे और भारत को पुन: सर्वोच्च के पद पर आसीन करें।

लोकतन्त्र जादू की छड़ी नहीं...

कु॰ नेहा नारंग
बी.एससी. VI सेम.

कत्ल कर दो चाहे कलमकारों को, जला डालो आसमाँ के सितारों को
ये सितारे एक दिन सूरज बन कर, जला डालेगे, लोकतंत्र के हत्यारों को।

लोकतंत्र सारी सामाजिक विभिन्नताओं, अंतरो और असमानताओं के बीच सामंजस्य बैठाकर उनका सर्वमान्य समाधान देने की कोशिश करता है। लोकतंत्र के लिए आतंकवाद बड़ा खतरा है लेकिन हथियार से किसी समस्या का समाधान नही। लोकतांत्रिक शासन अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर है क्योंकि यह

- नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है।
- व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।
- इससे फैसलों में भी आसानी हो जाती है।
- टकरावों को टालने-सँभालने का तरीका बताता है।
- इससे गलतियों को सुधारने की गुजाइश होती है।

नफरत बुरी है ना पालो इसे, दिलो में खलिश है निकालो इसे
ना तेरा ना मेरा ना इसका ना उसका, यह सबका वतन है बचा लो इसे

कई बार हम लोकतंत्र को हर मर्ज की दवा मान लेते है और उससे हर चीज की उम्मीद करने लगते हैं। लोकतंत्र के प्रति अपनी दिलचस्पी और दीवानगी के चलते अक्सर हम यह कह बैठते हैं कि लोकतंत्र सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान कर सकता है और जब हमारी कुछ उम्मीदें पूरी नहीं होती तो हम लोकतंत्र की अवधारणा को ही दोष देने लगते हैं। इतना ही नही, लोकतंत्र का उन अनेक चीजों से ज्यादा सरोकार नहीं होता जिनको हम बहुत मूल्यवान मानते हैं लोकतंत्र हमारी सभी सामाजिक बुराईयों को मिटा देने वाली जादू की छड़ी भी नही है। लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब अपनी आकांक्षाओं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हम संविधान सम्मत तौर-तरीके अपनायें।

●●●

भारतीय संविधान ने स्त्री-पुरुष दोनों को समान मानते हुए धारा 51 - क में यह स्पष्ट किया है कि ''ऐसी प्रथाओं का त्याग करना, जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है, प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा।

भारतीय प्रजातन्त्र में महिलाओं की भूमिका

कु0 मनीषा राठौर
एम.ए. IV सेम.

भारत में एक बार फिर आम चुनाव सामने है और राजनैतिक जोड़-तोड़ के दौर शुरु हो चुके हैं। इसी गहमागहमी में ये जानना भी दिलचस्प है कि हर दल का चुनाव मैदान में महिलाओं को अहम् भागीदारी देने का दावा है। भारतीय राजनीति में महिला भागीदारी का सवाल बौद्धिक बहसों और सेमिनारों में गूंजता ही रहता है। कहने को तो मायावती, जयललिता, सोनिया गांधी जैसी नेता भारतीय राजनीति के आकाश के चमकते नक्षत्र है लेकिन सवाल ये है कि इस चमक का दायरा कितना व्यापक और कितना स्थायी है। भारतीय राजनीति में वर्षों से ही पुरुष राज करते है। हालांकि भारत उन देशों में से एक है जिसने दशकों पहले ही अपनी बागडोर इंदिरा गाँधी के हाथों में दे दी थी। लेकिन आज भी हर स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। पार्टियों में महिला कार्यकर्ता से आज भी अधिकांशत: केवल महिला सम्बन्धी विषयों पर काम कराया जाता है।

- सितम्बर 1996 में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण को लेकर एक बिल का प्रस्ताव रखा गया, लेकिन कई कोशिशों के बावजूद इसे अमल में नही लाया जा सका। इस दौरान सरकार बदली लेकिन हर बार इस बिल को पीछे धकेल दिया गया।
- 1992 में भारत की लोक सभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 44 प्रतिशत था, समय के साथ-साथ वह संख्या ऊपर की और बढ़ी लेकिन उतनी ही बार नीचे की ओर लुढक गई।
- 1991 में लोकसभा में 8.04 प्रतिशत महिलाएँ थी और 2004 में यह संख्या थोड़ी बढ़कर 8.3 प्रतिशत हो गई। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि कभी भी लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व नौ से दस प्रतिशत से ऊपर नहीं जा सका।
- भारत में सबसे ज्यादा उन्नति कर रहे राज्य-कर्नाटक महाराष्ट्र, और तमिलनाडू में बहुत कम महिला राजनीतिज्ञ सामने आई है।

संसद में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत विश्व में 111 वे स्थान पर

संसद में महिला प्रतिनिधियों की संख्या के आधार पर राष्ट्रों का रैंक तय करने वाली, एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा तैयार की गई सूची में 189 देशों में भारत का 111 वाँ स्थान है। संसदीय संघ ने अपने वार्षिक विश्लेषण में कहा है कि विश्व में अधिक संख्या में महिलाओं को संसद के लिए चुना गया है। भारत के निचले सदन लोकसभा में 62 महिलाओं की मौजूदगी के साथ भारत को 111 वें स्थान पर रखा गया है जो कुल 545 सासंदों का 11.4% है।

वर्तमान भारतीय राजनीति की सशक्त महिलाएं -

सोनिया गाँधी का नाम भारत समेत कई देशों की ताकतवर महिलाओं में शामिल है सोनिया गाँधी 1997 से आज तक देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस की अध्यक्ष है।

भारतीय जनता पार्टी में पुरुषों के मुकाबले **सुषमा स्वराज** ने विदेश मंत्री बन महिलाओं की ताकत को बढ़ाया है।

भारत को सियासत के जाने माने चेहरों में से एक नाम कश्मीर की पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती का है।

पश्चिम बंगाल की वर्तमान मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख **ममता बनर्जी** ने कई सालों से पश्चिम बंगाल को संभाल रखा है।

शीला दीक्षित का दिल्ली के विकास में योगदान सराहनीय रहा।

प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने जुलाई 2007 में भारत की पहली महिला राष्ट्रपति बन कर साबित कर दिया था कि महिलाएं नीति निर्णायक मुद्दों पर भी आगे रह सकती हैं।

कांग्रेस पार्टी की **मीरा कुमार** भारतीय संसद में लोक सभा की पहली अध्यक्ष बनी।

बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख **मायावती** उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री रह चुकी हैं।

जयललिता तमिलनाडु के राजनीतिक इतिहास में तीन बार मुख्यमंत्री बनने वाली पहली भारतीय महिला थी।

राजस्थान की मुख्यमंत्री **वसुंधरा राजे** का संबंध राजघराने से है।

शरद् पवार की बेटी **सुप्रिया सुले** भारतीय राजनीति की एक सशक्त नेता बन सकती है।

वैसे तो **प्रियंका गाँधी** पूर्ण रुप से राजनीति में सक्रिय नही हैं, फिर भी पार्टी की जिम्मेदारी उनके ऊपर है।

वृंदा करात कम्यूनिस्ट पार्टी में एक मात्र महिला नेता है।

समाजवादी पार्टी में **डिपंल यादव** को एक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

पंजाब के उप मुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल की पत्नी **हरसिमरत कौर** अपनी बेबाकी की वजह से जानी जाती है।

धर्म बनाम राजनीति

कु॰ आफरीन
बी.ए. VI सेम.

ये जात-पात और छुआछूत, धर्म मज़हब बन गया नीति है। यही आज की राजनीति है,
मैं पासवान हूँ, तू है यादव। मैं ऊचाँ हूँ, तू है नीचा, यही आज की राजनीति है।
हिन्दू-मुस्लिम को आपस में बाँटना, भाई-2 को दुश्मन बनाना नीति है, यही तो आज की राजनीति है।

हमारी राजनीति लोकतांत्रिक अवधारणा पर आधारित है जिसमें देश के व्यक्ति मिलकर अपनी सरकार का चुनाव करते हैं। यूं तो हमारा संविधान धर्म निरपेक्षता की बात करता है, किंतु यदि देखा जाए तो धर्म ही राजनीति का मुख्य स्तम्भ हो गया है। जब-जब राजनीति की बात की जाती है, तब-2 धर्म उसके साथ जुड़ जाता है। आज नेता हो या अभिनेता सभी धर्म-निरपेक्षता की बात तो करते हैं लेकिन वे इस पर खरे नहीं उतरते हैं, ये सब जानते हैं।

भावात्मक मुद्दों को उठाकर जनता के साथ धर्म की राजनीति खेली जा रही है। आज राजनीति को धर्म का व्यापार कहना अनुचित न होगा। आज तो धर्म ही राजनीति है और राजनीति ही धर्म है। धर्म और राजनीति दोनों ही ऐसे विषय है जिन्हें शायद अलग नहीं किया जा सकता किंतु चिंतन इस बात पर होना चाहिए कि राजनीति की दिशा और दशा क्या है? क्योंकि ये दोनों ही ऐसे विषय है जो प्रत्येक वर्ग के जीवन को प्रभावित करते है। यदि हम संयुक्त एकीकृत भारत चाहते है तो हमें धार्मिक सम्प्रभुत्ता का अंत करना होगा।

●●●

Those who say religion has nothing to do with Politics, do not know what religion is?
-Mahatma Gandhi

भारतीय संविधान की मूलप्रति के सज्जाकार : नंदलाल बोस

डा0 अलका आर्य
एसो0 प्रो0 चित्रकला

भारतीय कला के पुनरुत्थान काल के प्रमुख कलाकारों में नन्दलाल बोस एक प्रतिभा सम्पन्न कलाकार के रुप में जाने जाते हैं। कलाकार होने के साथ-साथ यह एक श्रेष्ठ चिन्तक और विचारक भी थे। इनकी बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित हो रविन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि ''अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के पश्चात जो सबसे विख्यात कला-शिल्पी भारत को विरासत के रुप में मिला, उसमें नंदलाल बोस से बढ़कर उस पीढ़ी में और कोई न था।'' रविन्द्र नाथ के सानिध्य और सहयोग से नंदलाल को बल मिला और वह कला जगत में अपनी जड़ों को मजबूत बनाने में सफल रहे।

जब वह छोटे थे तो उनकी माता उनके खिलौनों को नये-2 रुपों में ढालती रहती थी। उन्हीं की प्रेरणा से इनकी रुचि मिट्टी की मूर्तियाँ और खिलौने बनाने तथा अन्य साज-सज्जा के कार्यो में उत्पन्न हो गई। इन्होंने सन् 1905 से 1910 के मध्य गवर्नमेंट कालेज आफ आर्ट कलकत्ता में शिक्षा ग्रहण की। इसी दौरान वे अजंता के भित्ति चित्रों से बहुत प्रभावित हुए। राष्ट्र प्रेम और भक्ति भावना से ओत प्रोत नंदलाल कलाकारों और लेखकों के उस अंतर्राष्ट्रीय समूह का हिस्सा बन गए, जो पारम्परिक भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करना चाहते थे। सन् 1922 में उन्हें शांति निकेतन स्थित कला भवन का प्रमुख चुना गया तथा अवनीन्द्र नाथ तथा रविन्द्रनाथ जैसे महान कला गुरुओं का स्नेह एवं आश्रय पाकर वह देश भर में लोकप्रिय हो गये।

गुरु नंदलाल की चित्रकला में तब एक नये मोड़ की शुरुआत हुई, जब वे महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये। राष्ट्रीयता की भावना, जो गांधी जी के विचारों से उनके मन में आवेगमय हुई थी, समयान्तर से वह चित्र रुप में प्रकट होने लगी। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी का अभूतपूर्व योगदान स्वदेशी भावना से ओत प्रोत था। उनके तौर तरीके और साधन-संसाधन सभी भारतीय मानस और माटी से जुड़े थे। इस राष्ट्रीय आंदोलन में कलाकारों का सहयोग मिल सके, इसके लिये उन्होंने नंदलाल बोस को एक अनोखा मंच ही नहीं, बल्कि लोक मंत्र भी प्रदान किया। गांधी जी के आग्रह पर वे असहयोग आन्दोलन और नमक आंदोलन में सक्रिय हुए। सन् 1938 में कांग्रेस में 51 वे राष्ट्रीय अधिवेशन में गांधी जी ने नंदलाल बोस को लखनऊ में शिल्प प्रदर्शनी आयोजित करने हेतु आमंत्रित किया, जिसे नंदलाल ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। असीम प्रेरणा और उत्साह के साथ आरंभ यह अधिवेशन, एक कला अनुष्ठान और फिर विराट कला तीर्थ में परिणत हो गया। नंदलाल बोस ने इस अधिवेशन में भारतीय कला मंडप को भारतीयता और स्वदेशी की परिकल्पना के साथ प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया और वे उसमें पूर्णत: सफल भी रहे। **नन्दलाल की कला प्रतिभा और निष्ठा को देखते हुए तत्कालीन भारतीय संविधान की मूल प्रति की सुसज्जित करने हेतु उनका चयन किया गया। इस महत्वपूर्ण और गौरवमयी कार्य को उन्होंने पूर्ण मनोयोग के साथ सम्पन्न किया।** भारतीय रुपाकारों से सुसज्जित 22 चित्रों की श्रृंखला को सृजित करने में नंदलाल को लगभग चार वर्ष का समय लगा। भारतीय संविधान की मूल प्रति की सुसज्जित एवं कलात्मक प्रति में आज भी नंदलाल बोस की विलक्षण कला का दर्शन किया जा सकता है।

विलक्षण कला प्रतिभा और कला अध्यापन के अतिरिक्त इन्होंने अपनी श्रेष्ठ लेखन क्षमता का परिचय देते हुए तीन पुस्तकें (रुपावलि, शिल्प कला और शिल्पचर्चा) भी लिखी। इन्होंने राष्ट्रीय पुरुस्कारों जैसे 'भारत रत्न' और 'पद्मश्री' के प्रतीक चिन्ह भी सृजित किये। आचार्य नंदलाल बोस को उनकी कला सम्बंधी सेवाओं और उपलब्धियों के लिये सन् 1957 में पद्मविभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। नंदलाल बोस ऐसे पहले चित्रकार थे जिनके कला कर्म पर सर्वप्रथम एक रंगीन वृत्तचित्र (Documentary) तैयार किया गया। अपनी कला साधना और सतत् परिश्रम से परम्परागत भारतीय कला को मोड़ देने वाले आचार्य नंदलाल बोस एक सफल चित्रकार ही नहीं वरन् कलाकारों की अनेक सृजनशील पीढ़ियों के लिये प्रेरणा के आगार भी थे। उनकी अथक साधना की शक्ति से प्रवाहित कला सृजन की अविकल धारा आज भी प्रवहमान है।

नोट: आचार्य नंदलाल बोस द्वारा सृजित भारतीय संविधान की मूल प्रति के कुछ रेखांकनों को इस पत्रिका की अंतर्सज्जा हेतु प्रयुक्त किया गया है।

आर्थिक लोकतंत्र की अनूठी यात्रा

कु0 अवनी सैनी
बी.ए. V सेम.

देश आर्थिक लोकतंत्र की अनूठी चिरप्रतीक्षित यात्रा पर निकल पड़ा है। इसकी शुरुआत 8 नवम्बर, 2016 को हुई थी। वह नोटबंदी का ऐलान था। उसका प्रभाव पूरे देश में हुआ। इससे अर्थव्यवस्था में नगदी का चलन कम हुआ। काले धन पर लगाम लगी। आर्थिक सुधार के लक्षण चौतरफा प्रकट हुये। नोटबंदी से एक ही साथ काले धन, जाली नोट, हवाला कारोबारी और आतंकवादियों के धन स्त्रोत पर जहां मारक चोट पहुँची, वही डिजिटल भुगतान और साफ-सुधरी अर्थव्यवस्था के बंद दरवाजे खुल गए। नोटबंदी से छः लाख करोड़ रु. के काले धन को समाप्त कर दिया गया है। नोटबंदी से- बैंकों की कर्ज देने की क्षमता 18 लाख करोड़ रु. हो गई है, डिजिटल लेन-देन की संख्या बढ़कर 8 करोड़ हो गई है। 3 लाख करोड़ नए बचत खाते खुले है। सोने का आयात बीस फीसद घटा है। ये सभी रोजगार को बढ़ाने में सहायक होंगे। एक नागरिक काले धन के खिलाफ लड़ाई को अपने हित और देश के हित में समझता है। अगर सभी व्यक्ति और राजनेता अपने मन को बदलें और रचनात्मक राजनीति की राह लें तभी आर्थिक लोकतंत्र की यात्रा अपनी मंजिल पर जल्दी पहुँच सकेगी।

'मेक इन इंडिया' भारत सरकार द्वारा शुरु की गयी एक ऐसी नई पहल है जिससे 'आर्थिक लोकतंत्र' को मजबूत बनाया जा सकता है। मेक इन इंड़िया का शुभारंभ 25 सितम्बर 2014 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हुआ था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य है कि 'लोगों की रोजमर्रा में उपयोग किया जाने वाले सामान का निर्माण इण्डिया में ही हो। इस योजना का उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले 25 जगहों पर बदलाव लाना है। योजना के तहत इसमें रोजगार बढ़ेगा जिससे देश में बेरोजगारी की समस्या दूर होगी साथ ही इन क्षेत्रों में कौशल विकास होगा। जिससे देश-विदेश में सभी बड़े निवेशकों का ध्यान हमारी ओर केन्द्रित होगा और हमारे देश का आर्थिक लोकतंत्र भी तीव्र गति से विकसित होगा।

''ज्ञान का है जहाँ अलौकिक प्रकाश, जहाँ की मिट्टी में अमरता का आशीर्वाद,
क्यूं झुके वो देश करने में विकास, चलो मिलकर करे 'मेक इन इण्डिया' का आगाज''।।

यह योजना भारत के 'आर्थिक लोकतंत्र' को विकसित बनाने में एक बहुत ही बेहतरीन पहल साबित हुई है। भारत सरकार अपनी पूरी कोशिश कर रही है 'मेक इन इण्डिया' को सही मार्ग पर लाने की लेकिन हमें भी ऐसी कोशिश करनी चाहिए। हमें स्वदेशी को अपनाने की सोच रखनी चाहिए। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो अब अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने की राह पर चल पड़ा है।

संविधान सभा द्वारा संविधान की स्वीकृति से एक दिन पहले 25 नवम्बर, 1949 को भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पी बाबा साहेब अम्बेडकर के भाषण में भारतीय जनतांत्रिक समाज की स्थापना के संबंध में अपनी चिंताओं को व्यक्त किया था। उन्होंने कहा था - ''26 जनवरी, 1950 को हम विरोधाभासों के एक जीवन में प्रवेश करेंगे। राजनीतिक दृष्टि से तो हममे समानता होगी, पर हमारा आर्थिक व सामाजिक जीवन असमानता से भरा होगा। राजनीति में हम इस सिद्धांत को मानेंगे कि हर व्यक्ति का एक वोट होगा और हर वोट का मूल्य समान होगा। लेकिन अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन में हम कब तक समानता को अस्वीकार करते रहेंगे ? यदि यह अस्वीकार लंबे अर्से तक चला तो हमारा राजनीतिक जनतंत्र खतरे में पड़ जायेगा।

(संविधान सभा में बाबा साहेब अम्बेडकर के अंतिम भाषण का अंश, 25 नवम्बर 1949)

हिंदी काव्यधारा में राष्ट्रवाद की भावना

डा० सीमा राय
प्रवक्ता हिन्दी

''विश्व तुम्हारा भारत मैं हूँ या था चिन्तारत हूँ मैं।
मैं ही हूँ वह जन-मन-भाया, आर्य जाति ने जिसे बसाया,
नाम भारत से जिसने पाया, सचमुच ही क्या भारत हूँ मैं,
हूँ या था चिन्तारत हूँ मैं।''

भारत के अतीत गौरव गान की दृष्टि से राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की ''स्वदेस संगीत'' में उनके राष्ट्रीय विचारों की अनूठी व्यंजना मिलती है, जिसकी प्रत्येक पंक्ति में राष्ट्रीयता की श्रेष्ठतम और सुन्दरतम अभिव्यक्ति हुई। त्याग, बलिदान और उत्तेजना ऐसी कविताओं की आत्मा है जिसमें उत्साह और आशा का विश्व-सन्देश देने वाली कविताओं का सृजन बहुत हुआ है। किसी भी साहित्यिक प्रवृत्ति के उन्नयन में तत्कालीन परिस्थितियों का विशेष योगदान रहता है। हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना के लिए भारतेन्दु काल का योगदान स्मरणीय रहेगा। भारतेन्दु युग में हिन्दी साहित्य की अमर धारा श्रृंगार कालीन परम्पराओं और रुढ़ियों के बन्धन से मुक्त हो कर राष्ट्रीय और समाज सुधार आदि की नयी दिशा की ओर उन्मुख हुई। राष्ट्रीयता की हुंकार और गर्जना का गगनभेदी जय घोष भारतेन्दु जी की भारत जय कविता से उठा था-

''चलहु वीर उठि तुरत सर्वे जय ध्वजहि उठाऔ। लेह म्यान सों खड्ग खींचि रन-रंग जमाऔं॥
परिकर वसि कटिं उठी धनुसि पै धीर सर साधौ। केसरिया बानौ सजि-सजि रन कंकन बाँधौं॥''

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता हित-रक्षक के रुप में कवि भूषण की रचनाओं का योगदान सदैव रहेगा। नि:सन्देह वे राष्ट्रीयता का स्वर उठाने वाले प्रथम कवि के रुप में स्वीकारे जा सकते हैं। राष्ट्रीय भावना का जन्म और विकास मूलभूत परिस्थितियों में हुआ। आधुनिक राष्ट्रीय भावना का सूत्रपात 'परतन्त्रता से मुक्ति' की लालसा के साथ हुआ। हिन्दी काव्यधारा में राष्ट्रीयता का एक ऐसा विशाल प्रवाह आगे बढ़ा जिसमें समय और परिस्थितियों द्वारा मार्ग में खड़ी की गयी सभी बाधाओं को पार कर मार्ग को प्रशस्त किया और राष्ट्र कवियो में प्रयाण गीत गाने शुरु किये-

''जब रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने, धरा धसेगी प्रलय मचेगी, व्योम लगेगा थर्राने।''

राष्ट्रीयता की क्यारी में बलिदानों के बीज बोकर कवियों ने अपनी लेखनी से राष्ट्रभावना के उद्‌गार व्यक्त कर स्वतन्त्रता-उद्यान को सींचा। छायावाद के जनक जय शंकर प्रसाद ने भी राष्ट्रीय स्वर को नई ऊचाँई तक पहुँचाया। वे कह उठे .....

''अरुण यह मधुमय देश हमारा, जहाँ-पहुँच अंजान क्षितिज को मिलता एक सहारा''

प्रत्येक कवि ने, चाहे वह 'उग्र नीति' में सक्रिय रहा हो अथवा 'नर्म दल' के प्रभाव में राष्ट्रीय भावना के स्फुरण में अपना योगदान दिया।

भारतेन्दु युग राष्ट्रीय काव्यधारा का उषाकाल था तो द्विवेदी युग में सूर्य की बढ़ती तेजस्विता के साथ-साथ उसे शक्ति और गति प्राप्त हुई, जिसकी अनुकूलता के कारण छायावादी पोखरों को भी विराट धारा में डूबने और उभरने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। यथार्थवादी धरातल पर गतिशील रहने के कारण राष्ट्रवादी काव्यधारा ने प्रगतिवादी और प्रयोगवादी भाव-तरंगे उठाकर सोते राष्ट्र को जगाने और संगठित करने में अनेक व्यवधानों को पार करते हुए देशभक्ति की गंगा प्रवाहित की।

''समय पर किया शत्रु का नाश, देश ने पाया आहा प्राण! शेष वीरों ने छेड़ी तान, धन्य बलिदान धन्य बलिदान!''

एम. ए. राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता की चयनित प्रस्तुतियों के संपादित अंश

लोकतंत्र : सफल या विफल

कु0 शाहिमा, एम.ए. II सेम

लम्बे समय तक चले स्वतन्त्रता आन्दोलन के बाद 70 साल पहले स्वतन्त्रता के साथ एक नये युग की शुरुआत हुई। भारत ने लोकतंत्र को अपनाते हुए सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय को सुरक्षित रखने का स्वप्न देखा। भारत ने लोकप्रिय सम्प्रभुता को अपनाया, जिसका अभिप्राय जनता के जरिऐ चुने गये प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाने वाला शासन है। इतिहास में यह पहली बार हुआ कि भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित की गई। आज भारत न सिर्फ विश्व का सबसे बड़ा व सबसे अधिक प्रभावी लोकतंत्र प्रणाली को अपनाने वाले देश है। भारत में लोकतन्त्र को एक मशीन की तरह आसानी से चलना चाहिए, लेकिन कुछ हानिकारक तत्व इस काम में बाधा डालते हैं। इसका नतीजा ये होता है कि भारत के संवैधानिक लक्ष्य और लोकतांत्रिक आकांक्षाएं पूरी नहीं हो पाती।

भारत के संविधान की प्रस्तावना में भारत को एक लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने, सभी नागरिकों को समानता, स्वतन्त्रता और न्याय का वादा सिर्फ एक वादा ही है। अनपढ़ भारतीयों की विशाल संख्या अकसर भय और गलत बयान बाजी का शिकार हो जाती है। हमारे यहाँ पूंजीवादी लोकतन्त्र है जहाँ अमीर आदमी गरीब का शोषण करता है। भारतीय राजनीति बहुदलीय प्रणाली होते हुए भी मौकापरस्ती और भ्रष्टाचार का खेल बनकर रह गई है। बंद, हड़ताल और आंतकवादी गतिविधियों ने लोकतांत्रिक आदर्शों पर गहरा आघात किया है। कहा जा सकता है कि जो स्थितियां लोकतन्त्र को किसी भी देश में सफल बनाती हैं वे भारत में गौण हैं।

लोकतन्त्र : एक सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था

कु0 नजमा, एम.ए. IV सेम

लोकतन्त्र ही एकमात्र ऐसी शासन (व्यवस्था) पद्धति है जिसमें वास्तविक अर्थो में जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन होता है। लोकतन्त्र में राज्य की शक्ति का स्रोत स्वयं जनता को ही माना जाता है। जनता की इच्छा को ठुकराकर कोई भी सरकार अधिक समय तक नहीं चल सकती। लोकतन्त्र सरकार की एक प्रणाली है जो कि हमारी जनता को अपना वोट देने और अपने मन पसन्द सरकार का गठन करने की अनुमति प्रदान करती है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र, भारतीय लोकतन्त्र अपने नागरिकों को जाति, धर्म, रंग, लिंग आदि को नजर अंदाज करते हुए अपनी पसंद से वोट देने की अनुमति देता हैं। आजादी के बाद सामाजिक शोषण का शिकार हुई जातियों और देश की महिलाओं के लिए इस व्यवस्था के तहत संविधान ने शोषण से मुक्ति और न्यायपूर्ण व्यवस्था का प्रावधान किया। लोकतन्त्र में हिंसा के स्थान पर तर्क व न्याय बुद्धि की प्रधानता होती हैं। लोकतन्त्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति भागीदार होता है। इसलिए लोकतन्त्र एक सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था है।

व्यक्ति के सर्वगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे अपने ढंग से जीवन बिताने की सुविधा प्राप्त हो और यथासंभव चारों ओर परिस्थिति अनुकूल हो। उसे विश्वास होना चाहिए कि राज्य अथवा दूसरे नागरिकों की ओर से उसके निजी जीवन में अनुचित हस्तक्षेप न किया जाऐ। इसके साथ ही एक प्रश्न यह उठता है कि अधिकारों की मांग किस आधार पर की जाती है। इस मांग के औचित्य की कसौटी क्या है? इस सिद्धान्त के अनुयायी अधिकारों की एकमात्र कसौटी उपयोगिता की मानते हैं। अधिकार समाज की देन हैं और राज्य संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त करते हैं। स्पष्ट है कि ऐसे स्वस्थ लोकमत के विकास के लिए सबसे अधिक अनुकूल परिस्थिति लोकतन्त्र से ही मिल सकती हैं और इसलिए जिन मानव अधिकारों द्वारा स्वतन्त्रता का जन्म तथा विस्तार होना हैं उनकी प्राप्ति तथा रक्षा भी लोकतन्त्र में ही सुलभ है। आज सभी लोकतन्त्रीय देशों में सामाजिक न्याय की व्यवस्था करना राज्य का अनिवार्य कर्तव्य माना जाता है ताकि सभी व्यक्तियों को उन्नति और विकास का समान अवसर प्राप्त हो।

एम. ए. राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित विचार प्रस्तुति की चयनित प्रस्तुतियों के संपादित अंश

धर्म और राजनीति

कु0 शाहिमा, एम.ए. II सेम

राजनीति और धर्म से हम स्पष्ट रूप से परिचित है। राजनीति और धर्म का चोली दामन का साथ है। ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आदिकाल से लेकर वर्तमान में हमें राजनीति व धर्म दोनों नजर आते हैं अर्थात धर्म की राजनीति। यह सत्य है कि राजनेता अक्सर धर्म की राजनीति कर अपने वोट बैंक में इजाफा करते हैं। धर्म के नाम पर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं। राजनीति में धर्म का मुद्दा तब उठाया जाता है जब चुनाव का समय होता है। लेकिन आज युग बदल रहा है लोगों की सोच बदल रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक का प्रयोग कर सही गलत की पहचान करता है। आज का युवा जानता है सच क्या है और झूठ क्या। यही कारण है कि राजनीति में अब धर्म को लाने से पहले सोचा जाता है।

वर्तमान में राजनीति में युवाओं की भागीदारी हुई है और आज का युवा बड़े उम्मीद व जोश लेकर राजनीति में उतरा है। मेरे विचार मेरी सोच ''राजनीति में धर्म को मुद्दा बनाकर राजनीति करना बिल्कुल गलत है क्योंकि व्यक्ति धर्म से मानसिक रूप से जुड़ा होता है। धर्म की राजनीति व्यक्ति में इंसानियत का खून करती है। भारत में सांप्रदायिक झगड़े इसका उदाहरण है। परन्तु सत्य यह है कि एक आम नागरिक कभी भी लड़ाई नहीं चाहता है वह तो अपना साधारण जीवन जीने से ही खुश है। व्यक्ति इन्सानियत खोना नही चाहता क्योंकि यह उसका नैतिक गुण है।

भारतीय प्रजातन्त्र में महिलाओं की भूमिका

कु0 सपना, एम.ए. II सेम

भारतीय प्रजातंत्र में महिलाओं की प्रतिभागिता एक अहम विषय है। विश्व महिला सम्मेलनों एवं अन्य मंचों द्वारा महिला एवं पुरुषों की समान भागीदारी के लिये चर्चायें की जाती हैं। अनेकों संकल्प लिये जाते हैं, नये कानून आते हैं, किन्तु आज की ज्यादातर महिलाएं संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद अशिक्षित तथा बिना जायदाद के रुढ़िवादी भारतीय समाज में रहती है। लोकतन्त्र को मजबूत करने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह तभी सम्भव है जब वह अपने वोट डालने के अधिकार का प्रयोग करें। हर महिला को जागरुक होकर मताधिकार का उपयोग करना होगा।

सामाजिक न्याय की कसौटी पर भारतीय लोकतन्त्र

कु0 नजमा, एम.ए. IV सेम

भारतीय लोकतन्त्र अपने आप में एक विस्तृत अर्थ समेटे हुए है, जिसमें सामाजिक न्याय की कसौटी स्वत: विद्यमान है। सामाजिक न्याय समाज में एक ऐसी व्यवस्था उत्पन्न करने का मानदण्ड है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में समान रुप से भागीदार बन सकता है और किसी भी मनुष्य के साथ जाति, लिंग, धर्म इत्यादि सम्बन्धी भेदभाव न किया जाए। सामाजिक न्याय के लिए आर्थिक असमानता भी बहुत अधिक हद तक जिम्मेदार है, अरस्तु ने तो असमानताओं को सभी प्रकार की क्रान्तियों का मूल माना है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद औपनिवेशिक शासन के प्रभाव के रुप में आर्थिक पिछड़ापन भी सामाजिक न्याय के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती के रुप में उभरा है, तथा गरीबी, पिछड़ेपन की यह विविधता भारत जैसे लोकतान्त्रिक देश के लिए सबसे बड़ी समस्या हैं। सामाजिक न्याय को देखते हुए स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अनेक संवैधानिक प्रावधान किए गए, राज्य के नीति निर्देशक तत्व तथा मौलिक अधिकारों में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि देश के लोगों को राजनैतिक और सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक समानता भी प्राप्त हो।

हाथ बढ़ायें, धरा को रहने योग्य बनायें

कु0 कहकशा मलिक
बी.एससी. III सेम.

पृथ्वी हमारी भूमि है जिस पर हम अपना जीवन बसर कर रहे हैं। यदि पृथ्वी न होती, यह जीवन असंभव था। हमारी भूमि पर हमें गर्व है। खूबसूरत पहाड़, इमारते, सड़के-कॉलेज आदि। लेकिन हमारी खुबसूरत पृथ्वी को दिन-प्रतिदिन नुकसान पहुँचाया जाता है जिससे हमें अपनी पृथ्वी की सुरक्षा करने की आवश्यकता है। पृथ्वी को हानि पहुँचाने वाले तत्वों की कमी नहीं, और न ही ये एक या दो है, बल्कि हमारी पृथ्वी को नुकसान पहुँचाने वाली करोड़ों चीजें हैं।

- **पेड़-पौधों का काटना** - आँखों को ताजगी, शरीर और दिमाग को ऊर्जा दिलाने वाले पौधे प्रतिदिन काटे जाते हैं, जबकि हम सब जानते हैं कि पेड़-पौधों को काटना एक अपराध है।
- **परिवहनों का धुँआ**- सड़कों पर चलने वाले अनगिनत परिवहन धुँआ निकालते हैं। यह धुँआ हमारे वायुमण्डल में पहुँचकर उसे प्रदूषित करता है। यह प्रदूषण हमारी चारो ओर की वायु में फैल जाता है जिससे अनेक बीमारियाँ तक फैलती हैं। अत: परिवहन वायुप्रदूषण फैलाते हैं।
- **कूड़ा-कचरा**- हमारे घरों से निकलने वाला कूड़ा-कचरा और गंदा पानी भी हम लोग नदी या इधर-उधर फेक देते हैं। हम जब तक न तो कुछ सोचते और न ही कदम उठाते जब तक हमारे सिर पर मुसीबत न आ जाए। आप जानते हैं जब पॉलीथिन या प्लास्टिक से बने डिब्बों आदि सामान हम फेंक देते है तो ये सामान मिट्टी में नहीं मिलते बल्कि मिट्टी में प्रदूषण पैदा करते हैं। यही कारण हैं कि फसलें पैदा होने में कई रुकावट आ जाती है।
- **जल स्त्रोत** - यदि हम गंदा पानी या कूड़ा नदी में या अन्य जल के स्थानों में फैंकते हैं तो पानी जो नदियों, नहरों आदि में है वह प्रदूषित हो जाता है। नदियों में रहने वाले जलचरों को इससे नुकसान पहुँचता हैं। उदाहरणत: हमारी गंगा नदी जो भारत की सबसे लंबी नदी है। उसका जल प्रदूषित हो चुका था जो किसी और ने नही बल्कि हमने ही किया था। यह जल इतना गंदा हो गया था कि इसे पीना जहर के समान था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी एक सभा में कहा कि ''जो सरकार नहीं कर सकती वह संस्कार कर सकते हैं और यदि सरकार और संस्कार मिल जाए तो जीवन स्वर्ग बन जाए''। ये शब्द सुनने में तो छोटे है लेकिन यदि एक बार इन पर विचार किया जाए तो ये बहुत बड़ी बात है क्योंकि सरकार योजना बना सकती है, नियम बना सकती है लेकिन उस सब का पालन करना हमारी जिम्मेदारी है। पृथ्वी को हम सिर्फ तभी रहने योग्य बना सकते हैं यदि हम प्रदूषण की रोकथाम के बारे में विचार करें और उसे दूर करने के कदम उठाएं। आज हम, कल हमारी पीढ़ी भी इस पृथ्वी पर रहेगी। इसलिए पृथ्वी को हमें हरा-भरा करने और प्रदूषण मुक्त करने की आवश्यकता है।

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी

कु0 बोहती सैनी
एम.ए. IV सेम

भारत एक प्रंजातात्रिक देश है, जिसमें अन्य देशों की अपेक्षा अधिक युवा बसते हैं। यह एक ऐसा वर्ग है जो शारीरिक एवं मानसिक रुप से सबसे ज्यादा ताकतवर है और जो देश तथा अपने परिवार के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न करते हैं। आज भारत देश में 75% युवा साक्षर है। आज भारत का हर युवा अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण कर रहा है। उन्हें पर्याप्त रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। परन्तु दुख की बात यह है कि आज का युवा भले ही कितना ही पढ़ लिख गया हो, परन्तु अपने सरकार व देश और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को दिन-प्रतिदिन भूलता जा रहा है।

भारत का युवा वर्ग तैयार है एक नई युवा क्रान्ति के लिए। लेकिन अफसोस की बात है कि कुछ युवा वर्ग भारत में अपने योगदान देने की बजाय विदेशों में जाकर बस जाते हैं। भारत की राजनीति में आज वृद्ध लोगों का ही बोलबाला है और चंद गिने चुने युवा ही राजनीति में हैं। इसका एक कारण यह है कि भारत में राजनीति का माहौल दिन प्रति दिन बिगड़ रहा है और सच्चे राजनीतिक लोगों की जगह सत्तालोलुप और धन लोलुप लोगों ने ले ली है। राजनीति में देश की भावना की जगह परिवारवाद, जातिवाद और संप्रदायवाद ने ले ली है। आए दिन जिस तरह से नेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से सामने आ रहे हैं देश के युवा वर्ग में राजनीति के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

अब भारत की राजनीति में सुभाषचन्द्र बोस, शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक जैसे नेता नहीं हैं जो अपने होश और जोश से युवा वर्ग के मन में एक नई क्रान्ति का संचार कर सके। यही वजह है कि भारत के युवा अब इस देश को अपना न समझकर दूसरे देशों में आशियाना खोज रहे हैं। वे यहाँ की राजनीतिक सत्ता और उसमें फैले हुए भ्रष्टाचार से दूर होना चाहते हैं इसलिए वे कोई भी कदम उठाने से पहले बार-बार सोचते है।

युवाओं की भूमिका

- युवा ही परिवर्तन, निर्माण, रचना संघर्ष तथा साधना का मार्ग प्रशस्त करता है। जब युवा करवट लेता है तभी नए रास्ते खुलते हैं।
- युवाओं का भटकाव व उनके द्वारा हिंसा के मार्ग को अपनाना गंभीर चिंता का विषय है। भटके हुए युवकों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना है।
- युवा शक्ति को जागृत करने के लिए सरकार को जागृत होना पड़ेगा तथा ऐसी सुनियोजित युवा नीति की घोषणा करनी होगी जो देश के समस्त युवाओं का प्रतिनिधित्व करें।
- युवा नीति में युवाओं का मौलिक कर्तव्य व अधिकार स्पष्ट हो ताकि युवा नीति में चुनौती, पराक्रम और साहस के अवसरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- युवा मतदाता बिना किसी बहकावें में आए और जाति, धर्म, संप्रदाय आदि से ऊपर उठ कर ऐसे नेताओं को चुन सकते हैं जो जन-सेवा व लोकनिर्माण के रास्ते पर चलने वाले हों।

आज भारत का हर नागरिक भली-भाँति अपना अच्छा बुरा समझता है। युवाओं को संप्रदायतावाद तथा राजनीति से परे अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा। युवाओं को इस मामले में एकदम सोच समझकर आगे बढ़ना होगा और ऐसी किसी भी भावना में न बहकर सोच समझकर निर्णय लेना होगा। भारत का युवा वर्ग वास्तव में समझदार है क्योंकि वह राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मान रहा है। यह वाकई में भारत जैसे देश के लिये एक अच्छी और सकारात्मक बात है।

डिजिटलीकरण एवं भारत

कु॰ इलम
बी.एससी. IV सेम.

अब बदल रहा है भारत, कर रहा है विकास
जल्द ही झुकाएगा कदमों पे जहाँ को, ऐसा है मुझको विश्वास

डिजीटलीकरण से आशय है किसी भी रूप, तस्वीर, आवाज, कागजी काम आदि में मौजूद ऐनालॉग सूचना का उपयुक्त इलैक्ट्रानिक उपकरणों जैसे स्कैनर आदि के द्वारा डिजीटल रुप में रुपांतरण ताकि सूचना को नेटवर्कों के माध्यम से प्रेषित, संग्रहित किया जा सके। डिजीटलीकरण का भारत में अहम योगदान रहा है;

रेल चली थी जब भारत में कहते थे दानव आया। गैस रसोई वाली आयी, खाने से दिल कतराया॥
जब कॅम्प्यूटर आये तो हम सब खूब रोष में चिल्लाये थे। लगी नौकरी दाँव हमारी पढ़े लिखे सब घबराये थे।

ये तो हम जानते ही है कि डिजीटलीकरण ने हमारी ज़िदगी को आसान से भी आसान कर दिया है। स्मार्टफोन्स को ही देख लीजिए इनके बिना आज हम अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकते हैं। डिजीटीलीकरण के लिए हमारी वर्तमान सरकार कई अहम कदम उठा रही है, डिजीटल भारत अभियान के तहत सरकार किसानों को आईटी क्षेत्र से लाभ दिलाने की पूर्णतया कोशिश कर रही है। हाल ही मे एक साक्षात्कार में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा था–

अगर नही है बैंक में खाता सबसे पहले खुलवाओ।
डेबिट कार्ड मिलेगा उससे जो चाहो वो ले आओ।
सस्ता सा इक फोन खरीदो, इंटनेट उपयोग करो
रुपेकार्ड या ईवॉलिट या पेटीएम डाउनलोड करो॥

पेटीएम, ईवालिट आदि के द्वारा आप कभी भी कही भी पैसों का लेन–देन कर सकते हैं। इससे बैंकिंग में सुविधा तो हुई है इसके साथ ही साथ ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के कारण रिश्वत दरो में कमी आ रही है। जिससे भ्रष्टाचार को कम करने में हमें मदद मिल रही है। डिजीटलीकरण के कारण ही अब तक 1 अरब 13 करोड़ भारतीयों के आधार कार्ड बन चुके हैं जिससे सरकार ने 49,000 करोड़ रुपये सब्सिडी के बचाए है जिनका उपयोग देश के हित के लिए किया जा रहा है।

इसकी सहायता से स्वास्थ्य सेवा में कई नई तकनीक अपनायी जा रही है। जो तकनीक दूसरे देशों में उपलब्ध है उन्हे भारत में लाने में वक्त नहीं लग रहा। अब भारत के शिक्षित और बेरोज़गार युवा अपना बिजनेस स्टार्टअप के द्वारा शुरु कर सकते हैं। इससे नौकरी के साथ कमाई तो बढ़ेगी ही आर्थिक व्यवस्था भी सुधरेगी। परन्तु जहाँ एक और डिजीटलीकरण भारत को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है वहीं क्या हमने इसके रास्ते में आने वाली चुनौतियों पर गौर किया है? नहीं।

सरकार 2.5 लाख पंचायती और लगभग 6 लाख गाँवों को ब्राडबैंड डिजीटल पेमेंट प्रोग्राम से जोड़ना चाहती है। परन्तु क्या हम जानते है कि आज भी हमारे देश में कुछ ऐसे गाँव, ऐसे लोग है जो न तो शिक्षित है और न ही उनके पास पर्याप्त संसाधन है। तो जरा सोचिए कैसे वे इस सब सुविधाओं का लाभ उठा पाऐंगे। डिजीटलीकरण के साथ–साथ इन दिशाओं में भी कदम उठाने चाहिए।

हर क्षेत्र में हो भारत आगे, क्योंकि पढ़ेगा तभी तो बढेगा इंडिया,
चलो मिलकर बनाये इस देश को, डिजिटल इंडिया।

परीक्षा पर चर्चा

माननीय प्रधानमंत्री जी ने दिनाँक 29-01-2019 को ''परीक्षा पर चर्चा'' कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को सम्बोधित किया जिसमें उन्होंने देश के युवाओं को परीक्षा के तनाव को दूर करने हेतु सुझाव दिए तथा छात्रों का मार्गदर्शन किया। हमारे महाविद्यालय में छात्राओं ने उनके विचारों को वैब लिंक के माध्यम से ऑनलाइन सुना। छात्राओं की प्रतिक्रिया को निम्न अंशों के रूप में संकलित किया गया है।

- **कु0 मनीषा राठौर,** एम.ए. IV सेम राजनीति विज्ञान :- प्रधानमंत्री जी ने इन पक्तियों के माध्यम से बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया कि '**कुछ खिलौनों के टूटने से बचपन नहीं मरा करता**' अर्थात एक बार असफलता मिलने पर सफलता के लिए प्रयास नहीं छोड़ने चाहिए।
- **कु0 अल्पना,** बी.ए. IV सेम. :- जीवन में जब चुनौतियाँ आती हैं तो वह भीतर की उत्तम से उत्तम विद्या प्रकट करने का अवसर होता है। यदि हम चुनौतियों को स्वीकार नहीं करेंगे तो जिन्दगी में ठहराव आ जायेगा और ठहराव जिन्दगी नहीं हो सकती उन्होंने कहा कि '**निशान चूक माफ नहीं, माफ निचू निशान**' अर्थात् निशान चूक जाय तो माफ हो सकते है लेकिन अगर निशाना नीचा रखते है तो उसके लिए कोई माफी नहीं मिल सकती, लक्ष्य हमेशा बड़ा होना चाहिए।
- **कु0 रितिका,** एम.ए. IV सेम. (राजनीति विज्ञान):- **जिन्दगी एक गाड़ी की तरह है हमें इस गाड़ी को रोकना नहीं** बल्कि निरन्तर चलते हुए अपने पथ पर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। जीवन में अनेक समस्याएं आती हैं, हमें इनका डटकर सामना करना चाहिए। प्रधानमंत्री जी ने अभिभावकों से अनुरोध किया कि हर स्तर पर बच्चों का पालन पोषण ढंग से करेंगे तो हमारा राष्ट्र निरन्तर विकसित एवं प्रगतिशील होगा।
- **कु0 बोहती सैनी,** एम.ए. IV सेम. (राजनीति विज्ञान):- जीवन में आशा और अपेक्षा बहुत आवश्यक है, निराशा में डूबा हुआ व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, इसलिए जीवन में आशा और अपेक्षा जरुरी होती है। अभिभावक परीक्षा के दिनों में बच्चों का डर निकाले और उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करें, लक्ष्य बड़ा होना चाहिए। **बड़ा लक्ष्य बच्चों को समर्थ बनाता है।**
- **कु0 नाजिश,** बी.ए. IV सेम.:- माता-पिता बच्चों पर ज्यादा दबाव न डाले। उन्हें यह देखना चाहिए कि बच्चे की रुचि किस ओर है, बच्चे अपना एक लक्ष्य निर्धारित करें, उसके विषय में माता-पिता से विचार विमर्श करें, और उसको पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प लें, **सफलता का मूल मंत्र है 'समय का सदुपयोग'।**
- **कु0 कल्पना,** एम.ए. IV सेम. (राजनीति विज्ञान):- माता-पिता बच्चों की प्रत्येक प्रतिक्रिया पर नज़र रखें जिससे वह आगे चलकर अच्छा इन्सान बन सके, समय-समय पर **बच्चों के कार्य की प्रशंसा करनी चाहिए** और उन्हें बढ़ावा देना चाहिए।
- **कु0 पूजा,** बी.ए. IV सेम. :- शिक्षा का जीवन में बड़ा महत्व है, जीवन में हमें परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है, हमें कभी घबराना नहीं चाहिए। जरुरी नहीं है कि सभी लोगों को सफलता तुरन्त मिल जाय किन्तु प्रयासरत रहना चाहिए। असफलता से मायूस हुए बिना मजबूती से आगे बढ़ना चाहिए। प्रधानमंत्री जी ने '**सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा**' देने की बात की।
- **कु0 साहिन,** एम.ए. IV सेम. (राजनीति विज्ञान):- एक सिक्के के दो पहलू होते हैं ऐसे ही तकनीकी के भी दो पहलू है। टेक्नालॉजी के द्वारा आप देश के बारे में जान सकते हैं। टेक्नाजॉली के द्वारा माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी राह दिखा सकते हैं।
- **कु0 पूजा व्यास,** बी.ए. IV सेम. :- हमें अपने रिकार्ड से कम्पीटीशन करना चाहिए और हमेशा अपने रिकार्ड को ब्रेक करना चाहिए। इससे हमें निराशा तथा तनाव से मुक्ति मिलेगी, अभिभावकों को कभी भी अपने बच्चों की तुलना नहीं करनी चाहिए। समय की कीमत समझकर उसका सदुपयोग करने वाले लोग ही सफल होते हैं। **परीक्षा का उत्सव की तरह आनंद लेना चाहिए।**
- **कु0 आरती व्यास,** बी.ए. II सेम :- जीवन में आगे बढ़ने के लिए **जागृति एवं आत्मविश्वास का होना**

आवश्यक है। 24 घन्टे ऊर्जावान रहे, समय का सदुपयोग करें। जिस विषय या क्षेत्र में आपकी रुचि है उसी पर ध्यान देना चाहिए। लगन के साथ उस क्षेत्र में काम करने पर सफलता प्राप्त होती है।

- **Miss Astha Saini**, IV Sem:- Exam stress can affect any one. Students face a tremendous pressure and competition. Learning should not be reduced to exams only. **Parents should not expect their children to fulfil their unfulfilled dreams.** He also laid stress on the menace of depression and how it can destroy our lives.
- **Miss Aditi Saini**, IV Sem:- The statements given by our PM that every child has his or her own potential is very true. Parents should **not treat the report card of their wards as visiting cards.** Parents should contently encourage their children to be a factor of motivation and encouragement.
- **Miss Vrishty Saini** :- Our PM is very far sighted in saying that parents should be positive for their children. He suggested the students to learn time management because everyone has the same 24 hrs in a day and it completely depends upon us how we use our time. He suggested to prioritize from time to time. He guided the students to pay attention to one's qualities. He said that **"when something challenges you, you must take that challenge as an opportunity to use your unknown and hidden talent for the better outcome.**

संयोजक एवं संकलन कर्ता - **डा॰ किरन बाला, डा॰ आस्माँ सिद्दीकी**

मैं हूँ एक चित्रकार

डा0 भारती शर्मा, सीनियर असि. प्रो. अंग्रेजी

मैं हूँ एक चित्रकार,
अपनी तमन्नाओं की शिल्पकार
साथी तेरे साथ मेरा नाम
मेरे होने की निशानी है।
तू ही इत्र, तू ही फिक्र तू ही तो मेरा जिक्र है।
कितनी भी बवंडर हो समुंदर में
तू तो दरिया है
तेरा फन है उससे होकर गुजरना
लहरों से दोस्ती, भंवरों से कलंदरी
समुंदर के हर तुफान से धुरधंरी
सारी कायनात तुझ पर फिदा है
हैरान हूँ! कौन तेरा खुदा है।
मिट्टी तेरी रगों की महसूस कर, आबाद रह!
बना दे मौका-ए-दस्तूर,
बाखुदा दमकेगा तेरे ही माथे पर कोहिनूर,
न आयेगा नाखुद इंसान को रवा बनाने,
खुद की ताबीर लिख इस लियाक़त से
जो याद करें तुझे ही जमाने,
जो याद करे तुझे ही जमाने।

बेटी जन्म

सुश्री अंजलि प्रसाद, असि. प्रो. समाजशास्त्र

हाय विडंबना कैसी है
मुझमें भी तो तेरे आंगन की मिट्टी है,
बन जाऊंगी जो चाहोगे,
पर मुझको भी तो मौका दो-
मैं भी छड़ी बुढ़ापे की बन जाऊंगी,
एक बार बड़ी तो होने दो।
अभी निराशा जो छायी है,
बाद में आशा बन जाऊंगी
एक बार बड़ी तो होने दो।
मैं एक बोझ नही-
एक सोच तो बन जाऊंगी,
अपना स्वप्न मुझे भी देखने दो-
एक बार बड़ी तो होने दो।
जो चाहोगे बन जाऊंगी
बस आगे बढ़ने की राह दिखानी होगी,
जो बेटे की चाह हो तो बेटी भी बन जाएगी।
एक बार बड़ी तो होने दो।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

कु0 साक्षी
बी.ए. V सेम

''ओ स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ, स्वागत करती हूँ तेरा।
तुझे देखकर आज हो रहा, दूना प्रमुदित मन मेरा।''

ब्रिटिश शासन काल में अनेक वस्तुगत और आत्मगत शक्तियों की क्रिया-प्रतिक्रियाओं से और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दवाब से भारत में राष्ट्रवाद का उदय हुआ। इस राष्ट्रवाद का अध्ययन अनेक दृष्टिकोण से महत्व पूर्ण है। राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया अत्यंत जटिल और बहुमुखी रही है। राष्ट्रीयता के प्रचार और उत्थान में समकालीन हिन्दी साहित्यकारों तथा गाँधी जी का महत्वपूर्ण सहयोग है। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दो बार अध्यक्ष रहे थे। हमारी राष्ट्रीयता उच्च वर्ग से जन साधारण की ओर उन्मुख होती हुई गाँधीयुगीन घटनाओं और महात्मा गाँधी के विराट व्यक्तित्व तथा कृतित्व का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव अंकित करती हैं।

''राष्ट्रीयता की तुम पहेलिका, जगती के तुम अचरज हों''॥

हिन्दी के ओजस्वी कवि रामधारी सिंह दिनकर की काव्य रचनाओं में राष्ट्र प्रेम, भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम आदि विषयों का सजीव चित्रण हुआ है। दिनकर एक क्रान्ति दृष्टा कवि हैं। उनकी राष्ट्रीयता में क्रान्ति का स्वर और प्रगतिशील भावी राष्ट्र के स्वप्नों को साकार कर सकने का अदम्य उत्साह है।

''हुंकारों से महलों की नींव उखड जाती, सांसों के बल ताज हवा में उडता है।
जनता की रोके राह समय में ताब कहाँ, वह जिधर चाहती काल उधर ही मुंडता है।''

दिनकर की तरह ही प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय जी ने भी हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना में अपना विशेष योगदान दिया है, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत किया है।

कर्म वो कभी न हम त्यागें, धर्म में अनुरागें जागे, मुक्ति को छोड़ न हम भागे, मुक्ति के लिए सदा जागे।

प्रेमचन्द जैसे उपन्यासकारों तथा मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों ने हिन्दी को वह अमूल्य साहित्य प्रदान किया जो विश्व में राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करता है। हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग का प्रारम्भ सन् 1750 से होता है। युगों को पार करती हुई राष्ट्रीय धारा आधुनिक युग के कगारों को छूने लगी तो साहित्यकारों के क्षितिज पर भारतेन्दु का उदय हुआ। सरलता, सजीवता, राष्ट्रीयता आदि विशिष्ट गुण भारतेन्दु युग की काव्य सम्पदा में उपलब्ध हैं। भारतेन्दुयुगीन काव्य में राष्ट्रीय जागृति का जन्म हो चुका था तथा कवियों में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल होने लगी थी। सम्पूर्ण देश में हो रही हलचल तथा जनजागरण की भावना का प्रतिबिम्ब द्विवेदी युग के काव्य में भी दिखायी देता है। राजनीतिक चेतना के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरुप राष्ट्रीय चेतना की भावना भी विकसित होने लगी।

राष्ट्रीय चेतना जाग्रति का आलेखन प्रसाद जी ने भी किया है। 'कंकाल' में उन्होंने समाज की रुढ़िबद्धता में पिसते हुए व्यक्ति की वेदना का करुणापूर्व चित्र खींचकर समाज की कठोर नैतिक मान्यताओं को ढीला करने समाज व्यवस्था सुधारने तथा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के जो निष्कर्ष निकाले हैं वे गाँधी दर्शन सम्मत हैं। जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'जयवर्द्धन' में सत्य, अहिंसा और प्रेमभाव के उच्चादर्शो के साथ राष्ट्रीयता पर भी विचार किया गया है। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' में अहिंसक राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव परिलक्षित होता है। 'भूले-बिसरे चित्र' में भी जनान्दोलन को उपन्यास का आधार बनाया है। गुरुदत्त ने अपने उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' तथा 'पथिक' में गाँधी जी के सत्याग्रह - संग्राम का सजीव निरुपण किया है।

यशदत्त शर्मा के उपन्यास भारत सेवक में स्वाधीनता संग्राम के कर्मठ सत्याग्रही का मार्मिक चित्रण हुआ है। लेखक ने नव स्वतन्त्रता प्राप्त राष्ट्र के सभी वर्गो को साथ लेकर राष्ट्र को उन्नत बनाने की कल्पना की है।

महात्मा गाँधी एक महान पत्रकार थे वस्तुत: गाँधी जी के पत्रकार जीवन का मूल-सिद्धान्त लोक कल्याण और राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार करता था। वे यह मानते थे कि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन केवल धन कमाने के लिए नहीं बल्कि सेवा करने के लिए होना चाहिए। अपने इन सिद्धांतों को पूरा करने के लिए बापू ने स्वयं पत्रकार का जीवन अपनाया तथा आधी सदी तक निरन्तर लोक चेतना तथा राष्ट्रीय चेतना को प्रबुद्ध करने के लिए निर्भयता पूर्वक अपनी प्रभावशील लेखनी चलाते रहे। उनका यह प्रबल मत है कि राष्ट्रीय जाग्रति की हलचल में ही हमारा साहित्य फूला-फला है। राष्ट्रनेता गाँधी जी की लेखनी और कर्म का प्रभाव साहित्य के साथ-साथ पत्र-पत्रकारिता पर भी हुआ है।

''राष्ट्रीयता का तत्व सिखाता निश्चय हमको गाँधीवाद,
सामूहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविवाद''

लोकतन्त्र

कु0 आफरीन
बी.ए. VI सेम.

लोकतंत्र, प्रजातंत्र, लोकहित, लोकमत का शासन आदि नामों से इसे संबोधित किया जाता है। लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीतिक संदर्भ में किया जाता है। मतदान को लोकतंत्र के अधिकांश प्रकारों का चरित्रगत लक्षण माना जाता है। अधिकांशत: लोग मात्र वोट देने के अधिकार को ही लोकतंत्र मान लिया करते हैं। जबकि लोकतंत्र एक ऐसा विचार या व्यवस्था है जो समाज के लोगों के बीच आर्थिक व सामाजिक असमानताओं को कम करने का प्रयास है, अल्पसंख्यकों और वंचितों को उचित अधिकार उपलब्ध कराने का प्रयास है।

धर्म निरपेक्षता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता जैसे शब्द लोकतंत्र की अवधारणा को व्यक्त करते हैं। लोकतंत्र एक उत्तरदायी शासन प्रणाली है क्योंकि यह जनता का शासन है, तो सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। मंत्रियों पर संसद का दबाव रहता है तथा विपक्षी दल भी सरकार को गलत नीतियों का विरोध कर अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। ''लोकतंत्र मूलत: एक नैतिक व्यवस्था है जो जनता की बिना किसी रक्तपात के शासक वर्ग को सत्तासीन व सत्ताहीन करने का अधिकार देता है''

मौजूदगी लोकतंत्र की भी, अजब कमाल करती है, जहाँ जनता ही गुनाह, जनता ही इंसाफ करती है।

लोकतंत्र शिक्षा का एक सर्वोत्तम साधन है। अधिकांश जनता जागरुक व शिक्षित नहीं होती और न ही उन्हें अधिकारों का ज्ञान होता है। चुनाव के समय मीडिया द्वारा विभिन्न समस्याओं विविध पक्षों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे शासन की अनेक बातों का ज्ञान जनता को होता है तथा इस प्रकार के राजनीतिक शिक्षण की प्राप्ति में लोकतंत्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

लोकतंत्र चूंकि लोकमत का शासन है इसलिए इसमें जनता को अपने विचार अभिव्यक्त करने का राजनीतिक अधिकार प्राप्त होता है। जिसमें सूचनाओं का आदान-प्रदान भी शामिल है। किंतु इस पर गोपनीयता की दृष्टि से कुछ सीमाएँ अवश्य लगाई जाती है। समानता स्वतंत्रता, बंधुता, लोकतंत्र की आधारशीला है तथा ये तीनों इसकी चारित्रिक विशेषताएँ भी है जो इसे अन्य सभी व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ बनाती हैं और ये तीनों लोकतंत्र में पायी भी जाती हैं। किंतु, फिर भी इसमें कुछ कमियाँ व खामियाँ विद्यमान हैं जैसे भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, वंशवाद, धनबल, बाहुबल का बढ़ता प्रभाव आदि। उपरोक्त कमियों को राजनीतिक शिक्षा, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष प्रेस एवं जनसहभागिता द्वारा दूर किया जा सकता है। लोकतंत्र एक अच्छी व्यवस्था है तथा यह और अच्छी हो सकती है वहाँ, जहाँ की जनता शिक्षित हो तथा नेतागण निहित स्वार्थो के लिए राजनीति को अपना पेशा न समझते हों। लोकतांत्रिक व्यवस्था ठीक माचिस की तरह है जिससे हम रोशनी करते है लेकिन उससे यदि हम गरीबों की झोपड़ी जलाने लगे तो यह बुरी भी हो सकती है।

लोकतन्त्र की चुनौतियाँ

कु0 अल्पना
बी.ए. VI सेम.

समानो मन्त्रः समिति समानो, समानं व्रतं: सह चित्त मेषाम।
समानं मंत्राभिः मन्त्रये वः, समानेन वो हतिषा जुहोनि

'लोगों का लक्ष्य और मन समान हो, तथा वे समान मन्त्र से, समान यज्ञों के पदार्थो से ईश्वर का मनन करें।' ऋग्वेद और अर्थवेद के इन सुक्तियों में कुछ हद तक लोकतन्त्र में समानता की बात की गयी है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहलिकंन की परिभाषा के अनुसार, लोकतन्त्र जनता का जनता के लिए और जनता द्वारा शासन प्रामाणिक माना जाता है। लोकतन्त्र में जनता ही सत्ताधारी होती है। उसकी अनुमति से शासन होता है तथा उसकी प्रगति ही शासन का एकमात्र लक्ष्य माना जाता है। भारत में लोकतन्त्र के सामने कई बड़ी चुनौतियां और रुकावटे है। हम विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के निवासी हैं। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद भी हमारे देश में लोकतांत्रिक प्रणाली सहज ढंग से काम नहीं कर रही है। हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली में सामाजिक असमानता, व्यापक आर्थिक असमानताएं, क्षेत्रीय अंसतुलन, सामाजिक हिंसा, बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, भाषाई झगड़े, जनसंख्या विस्फोट आदि चुनौतियां है, जिन्हें दूर किये बिना लोकतंत्र पूरी तरह सफल नहीं हो सकता है। अलग-अलग देशों के लोकतन्त्र के सामने अलग-अलग तरह की चुनौतियाँ होती है। दुनिया के एक चौथाई हिस्से में अभी भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था नहीं हैं। इन इलाकों में लोकतंत्र के लिए बहुत ही मुश्किल चुनौतियां है। इन देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था की तरफ जाने और लोकतांत्रिक सरकार गठित करने के लिए जरुरी बुनियादी आधार बनाने की चुनौती है। इनमें मौजूदा गैर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को गिराने, सत्ता पर सेना के नियत्रंण को समाप्त करने और एक सम्प्रभु तथा कारगर शासन व्यवस्था को स्थापित करने की चुनौती है। अधिकांश स्थापित लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के सामने अपने विस्तार की चुनौतियां है। इसमें लोकतांत्रिक शासन के बुनियादी सिद्धान्तों को सभी इलाकों, सभी सामाजिक समूहों और विभिन्न संस्थाओं में लागू करना शामिल है। स्थानीय सरकारों को अधिक अधिकार सम्पन्न बनाना, संघ की सभी इकाइयों के लिए संघ के सिद्धान्तों को व्यवहारिक स्तर पर लागू करना, महिलाओं और अल्पसंख्यक समूहों की उचित भागीदारी सुनिश्चित करना आदि चुनौतियाँ है। इसके अतिरिक्त लोकतंत्र को मजबूत करने की भी चुनौतियाँ है। हर लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने किसी न किसी रुप में ये चुनौती है। इसमें लोकतान्त्रिक संस्थाओं और व्यवहारों को मजबूत बनाना शामिल है। यह काम इस तरह से होना चाहिए कि लोग लोकतंत्र से जुड़ी अपनी उम्मीदों को पूरा कर सकें। लेकिन अलग-अलग समाजों में आम आदमी की लोकतंत्र से अलग-अलग अपेक्षाए होती हैं। इसलिए यह चुनौतियां दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग ही अर्थ और अलग स्वरुप ले लेती हैं। संक्षेप में इसका मतलब संस्थाओं की कार्यपद्धति को सुधारना और मजबूत करना होता है ताकि लोगों की भागीदारी और नियंत्रण में बृद्धि हो। इसके लिए फैसला लेने की प्रक्रिया पर अमीर और प्रभावशाली लोगों के नियंत्रण और प्रभाव को कम करने की जरुरत होती है। यद्यपि इनमें चुनौतियाँ कम नहीं हैं लेकिन चुनौतियों को स्वीकार करके उनके समाधान की दिशा में निरन्तर प्रयासरत रहने पर ही वास्तविक अर्थ में लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है।

सामाजिक समरसता के लिए 'जातिभेद' को समाप्त करना अनिवार्य मानते हुए संविधान की धारा-17 द्वारा यह स्पष्ट किया गया है। अस्पृश्यता का किसी भी रूप में पालन निषिद्ध है और 'अस्पृश्यता' से उपजी किसी भी निर्योग्यता को लागू करना विधिनुसार दंडनीय अपराध होगा।

आर्थिक लोकतंत्र का आगाज

कु० हेमा नारंग
बी.ए. VI सेम.

आर्थिक लोकतंत्र एक सामाजिक आर्थिक दर्शन है, जो कॉर्पोरेट प्रबंधकों और कॉर्पोरेट शेयरधारकों से निर्णय लेने वाली शक्ति को सार्वजनिक हितधारकों के एक बड़े समूह में बदलने का प्रस्ताव करता है। आर्थिक लोकतंत्र के समर्थक आमतौर पर तर्क देते हैं कि आधुनिक पूँजीवाद समय-समय पर आर्थिक संकट में परिणामस्वरुप प्रभावी माँग की कमी के कारण होता है क्योंकि समाज अपने आउटपुट उत्पादन को खरीदने के लिए पर्याप्त आय अर्जित करने में असमर्थ है। आम संसाधनों का कॉर्पोरेट एकाधिकार आमतौर पर कृत्रिम कमी पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक-आर्थिक असंतुलन होते हैं जो श्रमिकों को आर्थिक अवसर तक पहुँचने से प्रतिबंधित करते है।

14 जनवरी 2018 को महाराष्ट्र के थाणे में 'आर्थिक लोकतंत्र कॉन्क्लेव' 2018 आयोजित हुआ। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इसका उद्घाटन किया। इस सम्मेलन का आयोजन 'रामभाऊ महाल्गी प्रबोधिनी' द्वारा युवा उद्यमियों और स्वनियोजित व्यक्तियों के लिए एक मंच तैयार कर उन्हें प्रोत्साहित करने, नेटवर्किंग और परामर्श प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। युवा उद्यमियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने उनसे आह्वान किया कि मुंबई और उसके आस-पास का क्षेत्र उद्यम का क्षेत्र है। उन्होंने युवा उद्यमियों से इसका लाभ उठाने को कहा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि सरकार **सबका साथ-सबका विकास** कार्यक्रम के तहत कई योजनाएँ चला रही है, जिसका लाभ लोगों तक पहुँच रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और निवेश के शीर्ष पसंदीदा स्थलों में से एक है। यहाँ आर्थिक सुधार की गति सही दिशा में आगे बढ़ती रहेगी। उन्होंने कहा, भारत ने इस मिथक को तोड़ा है कि लोकतंत्र और तेज आर्थिक विकास एक साथ नहीं चल सकते। भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की ओर से संयुक्त रूप से यहाँ आयोजित 'एडवांसिंग एशिया' शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा, मेरा एजेंडा सुधार से परिवर्तन तक है, जिसे पूरा होना अभी बाकी है। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी सरकार की ओर से उठाए गए कदमों के कारण यहाँ उद्यमिता का भी विकास हो रहा है। गत कुछ वर्षो में सरकार द्वारा आर्थिक लोकतंत्र के विचार को मजबूती देने के लिए कई कदम उठाए गए। इनमें से प्रमुख हैं-

नोटबंदी:- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 8 नवम्बर 2016 को भारत के 500 और 1000 रुपये के नोटों के विमुद्रीकरण किया गया, जिसका उद्देश्य काले धन पर नियंत्रण ही नहीं बल्कि जाली नोटों से छुटकारा पाना भी था।

वस्तु एवं सेवा कर :- वस्तु एवं सेवा कर भारत में 1 जुलाई 2017 से लागू एक महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है जिसे सरकार व कई अर्थशास्त्रियों द्वारा स्वतंत्रता के पश्चात् सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बताया है। इससे केन्द्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भिन्न-भिन्न दरों पर लगाए जा रहे विभिन्न करों को हटाकर पूरे देश के लिए एक ही अप्रत्यक्ष कर प्रणाली लागू की जाएगी, जिससे भारत को एकीकृत साझा बाजार बनाने में मदद मिलेगी। भारतीय संविधान में इस कर व्यवस्था को लागू करने के लिए संशोधन किया गया है।

डिजिटल इंडिया :- डिजिटल इंडिया भारत सरकार की एक पहल है जिसके तहत सकारी विभागों को देश की जनता से जोड़ना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बिना कागज के इस्तेमाल के सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रॉनिक रुप से जनता तक पहुँच सके। इस योजना का एक उद्देश्य ग्रामीण इलाकों को हाई स्पीड इंटरनेट के माध्यम से जोड़ना भी है। डिजिटल इंडिया के तीन मुख्य घटक हैं- 1- डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना, 2- डिजिटल साक्षरता। 3- इलेक्ट्रॉनिक रुप से सेवाओं को जनता तक पहुँचाना

मेक इन इंडिया :- मेक इन इंडिया देशी और विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में ही वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए बनाया गया है। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितम्बर 2014 को किया था।

यह लोकतंत्र है

डा० अर्चना मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

यह लोकतंत्र है
दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र
और हम सब एक संप्रभु राष्ट्र के वासी।
अपने कीमती वोट के बलबूते
हम सरकार बनाते हैं, देश चलाते हैं।

लोकतंत्र के सबसे बड़े यज्ञ में
अपने अमूल्य वोट की समिधा डाल
नारे लगा, पोस्टर-बैनर लहरा, वोट डालकर
हमने सरकार बना दी है।
अब तो सरकार ही-
सड़कें बनायेगी, सफाई करेगी,
गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी से लड़ेगी,
महँगाई के खिलाफ जंग छेड़ेगी,
बाढ़-राहत, दुर्घटनाओं का मुआवजा बाँटेगी
गुंडो-बदमाशों से बचायेगी
आतंकियों से हिफाजत करेगी।
देश का विश्व में नाम ऊँचा कर,
विकास के शिखर तक पहुँचायेगी।
हमने तो अपना वोट डाल दिया, सरकार बना दी
अब सारी जिम्मेदारी सरकार की,
सब कुछ सरकार ही करेगी,
देश चलता रहेगा, लोकतंत्र बढ़ता रहेगा।

पर जरा सोचिये-कौन है यह सरकार?
एक अमूर्त चेहरा, जिसमें शामिल हैं-
मैं...., तुम...., हम सभी...., जो चुनते हैं सरकार।
तो हम सब क्या करेंगे??
कहीं भी, कुछ भी, हो निर्लिप्त रहेगें, बैठे-बैठे आलोचना करेंगे,
या कुछ सक्रिय हुए तो-यहाँ-वहाँ कूड़ा फैलायेंगे,
रिश्वत, कालाबाजारी का बाजार गर्म करेंगे,
फिर भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चलायेंगे
सनसनीखेज वारदातों का वीडियो बनायेगें।
अफवाह को दोगुना-चारगुना फैलायेगें।
आखिर देश के जिम्मेदार नागरिक हैं हम
सरकार बनादी है, देश चलता रहेगा, लोकतंत्र बढ़ता रहेगा।

एक कदम और आगे बढ़े तो-
धर्म की दुकान सजा-
नफरत का कारोबार बढ़ायेंगे
मंदिर-मस्जिद के नाम पर बहसें चलायेगें।
भड़काऊ बयानबाजी से
लोगो को बाँटने तोड़ने का काम करेंगे।
कानून व्यवस्थाओं के नाम पर
लोगो को पीट-पीट कर मार डालेंगे।
क्या इतना काफी नहीं है.... ??
एक धर्म निरपेक्ष देश के जागरुक नागरिक हैं हम
और लोकतंत्र के पहरूए....,
सरकार तो हमने बना ही दी है, अपना काम करती रहेगी,
लोकतंत्र चलता रहेगा, देश बढ़ता रहेगा।

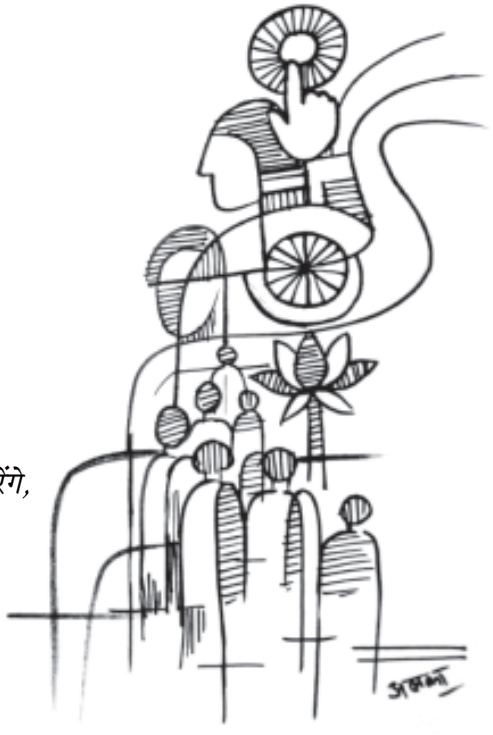

महाविद्यालय शिक्षक परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):– श्रीमती अंशू गोयल, डा० उमा, डा० संगीता सिंह, डा० अस्माँ सिद्दीकी, डा० किरन बाला, डा० अनुपमा गर्ग, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० अलका आर्य, डा० भारती शर्मा, श्रीमती शैली सिंघल, डा० कामना जैन, डा० अर्चना चौहान, सुश्री अंजली प्रसाद

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें):– डा० शिखा शर्मा, कु० अनुभा, श्रीमती प्रीति, डा० पारुल चड्ढा, कु० साजिया, डा० अंजू शर्मा, कु० दीपा पंवार, श्रीमती मीनाक्षी कश्यप, डा० शालिनी वर्मा, श्रीमती पल्लवी सिंह, श्रीमती दिप्ती नागपाल, डा० सीमा राय, डा० ज्योतिका

तृतीय पंक्ति (बायें से दायें):– श्रीमती नेहा शर्मा, कु० मेहनाज, कु० परवीन, कु० हिमांशी, कु० सीमा, कु० चन्दा

महाविद्यालय शिक्षणेत्तर परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):– श्री शिव मंगल, श्री अजय अविनाश, श्री निशान्त पंडित, श्री अनुज कुमार सिंघल, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), श्रीमती प्रीति शर्मा, श्रीमती नीतू तायल, कु० प्रियंका, श्रीमती सुषमा कटारिया, सुश्री सुषमा

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें):– श्री सन्दीप भटनागर, श्री राजपाल सिंह, श्री रामराज शर्मा, श्री पंकज कुमार सिंघल, श्री तेलूराम, श्री विनोद कुमार कटारिया, श्रीमती शुभलेष, श्रीमती नीलम देवी, श्रीमती शर्मा देवी

तृतीय पंक्ति (बायें से दायें):– श्री मुकेश कुमार, श्री राजेश कुमार, श्री गगन रस्तोगी, श्री रविन्द्र कुमार, श्री उमेश कुमार, श्री सूरज बिड़ला

पत्रिका समिति

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):– डा० अलका आर्य, डा० अनुपमा गर्ग, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० अस्माँ सिद्दीकी
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें):– कु० कौसर जहाँ, कु० अदीबा

अनुशासन समिति

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):– कु० अदीबा, कु० वंशिका शर्मा, कु० सिमरन राठौर, कु० स्वपनिल यादव, कु० प्रज्ञा, कु० हेमा नारंग, कु० मनु सैनी, कु० नर–ए–दरक्शा
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें):– श्रीमती पल्लवी, सुश्री अंजली प्रसाद, डा० अर्चना चौहान, डा० कामना जैन, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० उमा रानी, श्रीमती शैली सिंघल
तृतीय पंक्ति (बायें से दायें):– कु० आयशा, कु० नगमा, कु० अतिका, कु० कौसर जहाँ, कु० चेतना
चतुर्थ पंक्ति (बायें से दायें):– कु० तबस्सुम, कु० तरन्नुम, कु० अनीता, कु० अपर्णा, कु० अल्पना

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

विश्व स्वास्थ्य दिवस (एक दिवसीय शिविर)

विवेकानन्द ज्ञान परीक्षा

कौमी एकता दिवस (एक दिवसीय शिविर)

विश्व एड्स दिवस

गाँधी जयंती (एक दिवसीय शिविर)

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

स्वच्छा भारत इन्टर्नशिप

अतिथि व्याख्यान

नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति

श्रमदान

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

किचिन गार्डन का उद्घाटन

जरूरत मंदो को आवश्यक सामग्री का वितरण

नुक्कड़ नाटिका

योग शिविर

पोस्टर प्रतियोगिता

कौमी एकता रैली

पुरस्कार वितरण

अधिग्रहित ग्राम में रैली

Group Photo k 4 pages k baad

संयोजन: सुश्री सीमा रानी
स्त्रोत: रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

संयोजनः सुश्री सीमा रानी
स्त्रोतः रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

संयोजनः सुश्री सीमा रानी
स्त्रोतः रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

बापू के नाम पत्र

डा० कामना जैन
सीनियर असि॰ प्रो॰, राजनीति विज्ञान

परम आदरणीय बापू को,

शत्-शत् नमन।

स्वतंत्रता प्राप्ति एवं आपको इस लौकिक जगत से गए हुए सात दशक हो गए हैं, किंतु आपका जीवन व विचार आज भी उतने ही प्रेरणादायी हैं जितने आपके जीवन काल में थे।

प्रिय बापू, हमारे पैदा होने से वर्षों पहले आपका चमत्कारिक व्यक्तित्व पूर्ण हो चुका था। आपकी तस्वीर बचपन में जब दिखायी गयी तो परिचय में बताया गया कि ये राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं, जिन्हें सब प्यार से ''बापू'' कहते हैं। बालमन ने प्रश्न किया कि इस साधारण से धोती पहने, लाठी लिए व्यक्ति में ऐसा क्या है जो इन्हें राष्ट्रपिता कहा जाता है? कहीं कभी गाँधी पर चर्चा हुई तो पाया कि एक तरफ जहाँ लोग भक्त बनकर आपको पूजा करते हैं वहीं दूसरी तरफ आलोचकों की कतारें भी हैं। जब उम्र व उत्कंठा ज्यादा हुई तो विभिन्न साहित्यों के माध्यम से आपके गहन व्यक्तित्व, आपकी कर्मठता, सादगी भरी जीवन शैली ने मुझे अत्यंत प्रेरित किया और आपके प्रति मेरी श्रद्धा का विस्तार होता गया। जैसे माता-पिता स्वयं सारे कष्ट लेकर अपने बच्चे को अच्छा जीवन देने का प्रयास करते हैं वैसे ही आपने भी यदि देश की जनता भूखी है तो उपवास कर स्वयं भी अन्न त्याग दिया, तन ढकने को वस्त्र नहीं तो अपनी धोती के भी दो फाड़ कर दिए। स्वतंत्रता के बाद जब पंजाब-बंगाल आदि में दंगे नहीं थम रहे थे तो खराब स्वास्थ्य होने पर भी आमरण अनशन पर बैठ गए और कह दिया ''देखता हूँ मृत्यु अथवा शांति में से कौन मेरे पास पहले आती है?'' और अंत में बापू तुम्हारी ही विजय हुई। जो काम लार्ड माउण्ट बेटन अपने 50 हजार सैनिकों के साथ पंजाब के दंगे शांत कराने में नहीं कर सका, वह तुमने कर दिया। दंगाई तुम्हारे चरणों में हथियार डालकर चले गए। तुम्हारे व्यक्तित्व से तो पूरा विश्व प्रेरित है, तभी तो तुम्हारे जन्म दिवस 02 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस के रुप में मनाया जाता है।

सादा जीवन उच्च विचार से प्रेरित आपका जीवन व विचार तो समुद्र में रत्नों की खान के समान है, जितना मंथन करो एक नया रत्न निकलेगा, चाहे पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण विषय हो, जातिगत भेद-भाव मिटाने की बात हो, महिलाओं की स्थिति में सुधार का प्रश्न हो, आर्थिक हितों के संरक्षण की बात हो या फिर अपने विरोधियों से व्यवहार का प्रश्न हो आदि आदि, आपका चिंतन व उपाय अलौकिक रहे हैं।

वैदेशिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, आप कहीं भी उच्चस्तरीय जीवन व्यतीत कर सकते थे, किन्तु आपने मार्ग चुना समाज सेवा का। अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति होने के कारण आपने-मानव सेवा ही सच्ची सेवा है यह मानकर आम आदमी के कष्टों को मिटाने में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। ''आदम खुदा नहीं, पर खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं'' यह मानकर आपने कभी व्यक्ति-व्यक्ति में भेदभाव नहीं किया।

वैसे तो आपसे जुड़ी प्रत्येक बात अत्यंत प्रेरित करती है, किंतु सर्वाधिक प्रेरणादायी बात यदि सोचूँ तो मुझे लगता है कि आपने जो उपदेश दूसरों को दिए उस पर पहले स्वयं अमल किया। अनशन, अहिंसा, सत्याग्रह, अस्पर्शयता का अंत, आदि का स्वत: अनुपालन कर अपने जीवन से ही संदेश दिया, आप कहते थे- ''आमार जीवन ही आमार बानी (अर्थात् मेरा जीवन ही मेरी वाणी है)। कोई काम छोटा-बड़ा नहीं, यह कहकर आप अपने कार्य स्वयं ही किया करते थे। गलतियाँ इन्सान से होती है, यह सोचकर यदि किसी नवीन प्रयोगात्मक विचार को अपनाते हुए कोई त्रुटि हुई तो आपने उसका दायित्व अन्यों पर डालने की अपेक्षा स्वयं पर लिया। आप सच्चे अर्थों में जननायक हो। अत्यंत धार्मिक वैष्णव परिवार से सम्बन्धित होने तथा स्वयं हिंदू धर्म में अटूट आस्था होने के बाद भी आपमें सर्व धर्म समभाव था इसीलिये विभिन्न धर्मों को एक वृक्ष की शाखाएँ बताकर सभी धर्मों की शिक्षा व लक्ष्य को एकाकार किया।

शरणार्थी को संरक्षण प्रदान करने में आपने राजा शिवि, सत्य का अनुपालन करने में राजा हरिश्चन्द्र, दानी राजा हर्षवर्धन, अहिंसा मार्ग को अंगीकार करने वाले सम्राट अशोक की महान भारतीय ऐतिहासिक परम्परा को आगे बढ़ाया है। कहते हैं कि जो डाल फलों से लदी होती है, वह उतना ही झुकी होती है, ऐसे ही महान प्रेरक आप हो 'बापू'। आपके जीवन की कर्मठता व गहराई को केवल वही समझ सकता है, जो आपके जीवन से न केवल प्रेरित हो वरन् उसका एक अंश भी लेकर उसे अपनाने का प्रयास करे। आलोचना करना तो सबसे आसान काम है। जिसे महान आदर्श व्यक्तित्व की छाप आपने छोड़ी है, हम तो उसकी परछाई मात्र भी नहीं हैं। इस तकनीकी युग में जहाँ संक्षिप्त शब्दों व संकेतों द्वारा अपने भाव व विचार प्रकट कर दिए जाते हैं, वहाँ पत्र लेखन एक कठिन कार्य लगता है। किंतु आपके प्रति मन में अगाध श्रद्धा ने मुझे विवश किया कि अवसर मिला है तो आपको बताऊँ कि आपके विचार मुझे कितना प्रेरित करते हैं।

गाँधी के सपनों का देश .....?

डा० अलका आर्य
एसो० प्रो० चित्रकला

हिंसा, उपद्रव चहुँओर.....
सिसकती मानवता का आक्रोश,
जन-जन में उमड़ता क्लेष,
चीखता अंतर्मन का रोष .....।
तोड़कर सीमाएं अपनी,
अनियंत्रित हो जाता परिवेश,
ऐसे ही तिल-तिल कर जलता,
देखो -
गाँधी के सपनों का देश .....॥
धर्म की राजनीति का ज्वार ....
हवा में घुलता भ्रष्टाचार,
देखकर .....
निर्दोषों पर अत्याचार,
हुआ मन में उनके गहन संताप.....,
किंतु वो मौन खड़े .....।
बेबस थे वो.....
फिर भी...
आँखों से उनकी
खून के आँसू निकल पड़े .....।

दुर्दशा ....।

डा० अलका आर्य
एसो० प्रो० चित्रकर्ला

यह मेरे देश की
कैसी दुर्दशा ..... ?
गौतम - नानक की,
धरती पर .....
जर्जर होती,
फिर मानवता .....।
मेरे सपनों के भारत में.....,
हुंकार लगाती-कायरता ॥
हे मेरे राम -
यह सुबह-शाम
बढ़ती हिंसा ...
और-
फैलता साम्प्रदायिक तनाव,
कहीं भीषण आगजनी,
तो .....
कहीं अनियंत्रित पथराव .....।
इस राष्ट्रद्रोह की आँधी में -
कैसे बोले -
अब हम ....
वन्दे मातरम्, - वन्दे मातरम् .... ? ?

अर्न्तविश्व विद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता '**वर्तमान दौर में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता**' विषय के पक्ष एवं विपक्ष में विजेता प्रतिभागियों के विचारों के संपादित अंश

हिंसा में विनाश के बीज होते हैं जबकि अहिंसा में सृजनात्मकता के

कु॰ जेबा
बी.ए. IV सेम.

अहिंसा का पथ है मेरा, स्वावलम्बन का मत है मेरा। गाँधी की दूत हूँ मैं, माँ भारती की सपूत हूँ मैं।

आज गाँधी जी कितने प्रासांगिक हैं? यह सवाल बार-बार उठाया जाता है। जब नैतिकता का पतन होता है जब मानवता शर्मसार होती है जब लाखों बेरोजगार युवा मायूस घूमते हैं, जब पेट भरने वाला किसान आत्महत्या करता है, जब धर्म निरपेक्षता के स्थान पर धर्म के आधार पर जनता को बाँटा जाता है। हर उस क्षण गाँधी की प्रासांगिकता है। आप 1908 में लिखी गाँधी की मात्र हिंद स्वराज को ही पढ़ ले, तो गाँधी की दूरदर्शिता का पता चल जाता है कि उन्होंने इन सब समस्याओं को वर्षों पूर्व ही समझ लिया था। **हिंसा का विकल्प हिंसा नही हो सकता।** आँख के बदले आँख की नीति पूरे संसार को अंधा कर देगी।

दो विश्व युद्धों द्वारा जन धन की हानि, शीतयुद्ध का भयावह वातावरण, आतंकवाद द्वारा उपजी क्रूरता आदि बढ़ती हुई हृदय विदारक घटनाओं के कारण आज मानव आंतक के साए में जीने को मजबूर है। हिंसा के द्वारा समय विशेष के लिए तो अपनी बात मनवायी जा सकती है किंतु स्थायी परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते। तलवार के जोर से यदि कुछ प्राप्त भी हो जाए तो उससे बड़ी तलवार से वह छीना भी जा सकता है। आज के युग के हथियारों की मारक क्षमता ने सम्पूर्ण विश्व को मौत के कुएँ के सामने ला खड़ा किया है। **युद्ध व हिंसा मानवजाति के सिवाय किसी चीज को समाप्त नहीं करती।** हिंसा में विनाश के बीज होते हैं जबकि अहिंसा में सृजनात्मकता के। आज धार्मिक अलगाववाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार बेईमानी, पर्यावरण समस्या, बेजरोगारी आदि जिन भी समस्याओं के नाम लीजिए गाँधीदर्शन में सबके समाधान समाहित है। आपका मेक इन इंडिया, स्वदेशी अपनाओं, स्किल इडिया, किताबी शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक प्रशिक्षण, स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, गाँधी के विचारों से ही प्रेरित है।

पर्दा-प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह के विरोध करने के साथ-साथ **स्त्रियों को घर की चार दीवारों से बाहर निकाल स्वतत्रंता आंदोलन से जोड़ने का श्रीगणेश गाँधी ने ही किया।** हाँ नारीवादी इस बात का विरोध करते हैं कि गाँधी ने स्त्रियों को परिवार व बच्चों की जिम्मेदारियाँ पूरी करने के बाद केवल खाली समय में आर्थिक उपार्जन का निर्देश दिया था, तो क्या गलत किया? आज गाँधी को ना मानने का परिणाम देखिये, परिवार संस्था ही खतरे में आ गई है बच्चे संस्कार विहीन एवं नैतिकता से दूर हो चले हैं। बाल अपराध बढ़ते जा रहे हैं, क्योंकि आज के भौतिक प्रधान युग में पैसा ही सब कुछ है। बुनियादी शिक्षा अथवा नई तालीम के नाम से प्रसिद्ध गाँधी शिक्षा दर्शन द्वारा चरित्र निर्माण, स्वावलम्बन एवं सर्वांगीण विकास सभी के विकास पर जोर डाला गया है। आज लोकतंत्र को सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था कहा जाता है ओर इसलिए गाँधी ने वास्तविक लोकतंत्र को अपनाते हुए ग्राम स्वराज एवं सत्ता के विकेन्द्रीकरण को अपनाया। राजनीतिक लाब लश्कर विज्ञान दुनिया को नहीं बचा सकते, जब सबके हृदयों में करूणा जागृत होगी तभी दुनिया का बचाव होगा। आज शान्ति के अग्रदूत गाँधी के विचारों की महती आवश्यकता है। हम सभ्य प्राणी है। मत्स्य न्याय, शक्ति ही सत्य जैसे जंगली राज को हम सदियों पीछे छोड़ आए हैं। **समाधान बंदूक की गोलियों में नही वरन् बोलियों में होता है।** अन्यथा हम ही शिकारी हम ही शिकार वाली कहावत चरितार्थ हो जाएगी। गाँधी के विषय में किसी ने सच ही कहा है -

मैं गाँधी हूँ लेकिन सत्ता का भूखा नहीं। देश का वफादार हूँ, परतंत्रता मुझे मंजूर नहीं
चाहे जो कहना है कह दो, मैंने कहकर नहीं, करके दिखलाया है।
आसान है गलती निकालना, तकलीफों के लिए दोष दे जाना,
मैंने अंग्रेजों को बाहर फेंका था, तुम कूड़ा तो फेंककर दिखलाओ।
हमने स्वतंत्र भारत दिया था, तुम स्वच्छ भारत तो दे जाओ,
भले ही मत कहो इसे गाँधीवाद, इसे स्वच्छ भारत का आवरण चढ़ाओ।

गाँधी जी के विचार वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान में अप्रभावी

कु0 आफरीन
बी.ए. IV सेम.

गाँधीवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसकी नींव अंहिसा, मानवता व आदर्शो पर टिकी है या यूँ कहा जाए कि समस्त समस्याओं का समाधान शांतिपूर्वक किया जाना ही गाँधीवाद है।

पंचशील सिद्धांत, निर्गुटता की नीति, शिमला समझौता, लाहौर बस यात्रा, प्रधानमंत्री शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के वजीरे आलम को आमंत्रण आदि-आदि, सभी कुछ तो गाँधी विचारधारा से प्रेरित हैं। परंतु बदले में हमें क्या मिला हिन्दी-चीनी भाई-2 के नाम पर चीन पीठ में छूरा भौंक गया, पाकिस्तान के साथ चार युद्ध कभी मुंबई, कभी पठानकोट, कभी उरी और पुलवामा आतंक। यू तो हमारे पास जांबाज सिपाही व आधुनिक हथियार थे जिनके बल पर पाक के साथ हम हर लड़ाई जीतते चले गए।

अंहिसा परमो धर्मः तो क्या अंहिसा को अपनाकर अत्याचार सहते रहे? कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरे गाल को तो आगे किया जा सकता है, पर यदि कोई एक आँख फोड़े तो क्या दूसरी भी फोड़ने के लिए आगे की जा सकती है? यदि भारत ने पहले ही आंतकवादी घटना में पाक स्थित आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद कर सबक सिखा दिया होता तो आतंकवादियों के हौसले बुलन्द नहीं होते

कभी दांडी की यात्रा तो कभी असहयोग का नारा,
यूँ भावनाओं में बहकर कैसे होगा जयकारा,
गाँधीवाद के द्वारा समाधान नहीं होगा,
हत्यारों को माफी दे अब तो काम नहीं होगा,
प्यार की बातें बहुत हो चुकी याचना नही अब रण होगा।

विश्व भवति एक नीडं अर्थात पूरा विश्व एक घोंसले के समान है। ऐसे में आप ही बताइए कि वैश्वीकरण के युग में गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा भी कहीं टिकती है क्या? बड़े-2 औद्योगिक संस्थानों, फैक्ट्रियों आदि के द्वारा उत्पादन बढ़ाकर ना केवल अपने देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया जा सकता है बल्कि विश्व अर्थ व्यवस्था का रूख भी अपनी ओर मोड़ा जा सकता है। यह तो सभी को विदित है कि 18 वीं सदी के औद्योगिक युग से लेकर वर्तमान तक जिस देश के पास, आर्थिक शक्ति रही है वैश्विक महाशक्ति भी वही बना है। ऐसे गलाकाट प्रतियोगिता के दौर में गाँधी की लघु कुटीर उद्योग एवं ट्रस्टीशिप की अवधारणा भी कहीं नहीं टिकती। गाँधी जी कहते थे सर्वधर्म सम्भाव किंतु आज हालात तो कुछ और ही बयां करते हैं। हाल ही में न्यूजीलैंड में जो हुआ वो हम सबके सामने है।

गाँधी जी के नारीवादी दृष्टिकोण की बात की जाए तो यह भी रुढ़िवादिता का ही परिचय देती है। उनका कहना था कि स्त्रियों के पास बच्चों के पालन-पोषण व घर के कामों के बाद, यदि समय बचे तो वह स्वतंत्रता आंदोलन व आर्थिक उपार्जन जैसे कार्यो में भाग ले। स्त्री का कार्य क्षेत्र घर की चार दिवारी तक सीमित कर लैंगिक समानता कभी भी प्राप्त नहीं की जा सकती।

अंततः यह कहना गलत नहीं होगा कि गाँधी जी के विचार पवित्र व महान है व उन्होंने स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किंतु वर्तमान में जब हम इन पर विचार करते है तो ये अप्रभावी ही नजर आते हैं। आज के अतिवादी युग में गाँधी जी के विचार अप्रासंगिक है।

दिया जो ज्ञान तुमने था वो अब हो चुका है मौन,
हुई है मतलबी दुनिया तुम्हें अब मानता है कौन?

रिचा चौधरी
बी.ए. I सेम.

'वसुधैव कुटुम्बकम' के हमारे स्नेहमय मूलमंत्र के अनुसार विश्व के सभी मनुष्य एक ही विधाता के पुत्र हैं और इसी कारण यह संपूर्ण विश्व एक विशाल परिवार के समान है। यह विचार केवल आज का नहीं है। संसार के अनेक प्रमुख धर्मों में इस व्यापक और परम उदार विचार का समावेश है। मानवता मनुष्य का धर्म होती है। सभी मनुष्यों में स्नेह का मूल पाठ मानव धर्म सिखाता है। जाति, संप्रदाय, वर्ण, धर्म, देश आदि के विभिन्न भेदभाव के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है। मानव धर्म आदर्श और इसकी मनोभूति अत्यंत ऊँची है और इसके पालन में मानव जीवन की वास्तविकता निहित है। मानव धर्म की वास्तविकता और उपादेयता इसी में है कि मनुष्यत्व के विकास के साथ ही विश्व भर में लोग सुख, शान्ति और प्रेम के साथ रहें। प्राणिमात्र में एक ही जगतनियंता प्रभु का प्रतिबिंब दिखलाई देता है, यह समझकर मनुष्य की ओर आदर से देखें, तब ही अंर्तराष्ट्रीय भावनाओं का, चाहे वे राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हो, सर्वांगीण विकास संभव है। मानव धर्म का आध्यात्मिकता और नैतिकता से महत्वपूर्ण संबंध है। ईश्वरीय सत्ता में यदि उसका विश्वास नहीं है, इसके अतिरिक्त सहृदयता, सात्विकता, सरलता आदि सद्गुण उसमें नहीं है, तो इस स्थिति में यह स्वीकार करना होगा कि अभी उसने मानव धर्म का स्वरव्यंजन भी नहीं सीखा है।

जो मनुष्य अपना कल्याण करना चाहता है उन्हें भव-भवान्तरों से स्वयं को पृथक रख कर सद्ज्ञान की प्राप्ति व उसके अनुकूल आचरण करने का दृढ़ निश्चय करना ही होगा। यही जीवन उन्नति का एकमात्र सरल मार्ग है। इसकी प्राप्ति आर्य समाज के इस नियम में भी होती है जिसमें कहा गया है कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। संसार में दुखों से रहित व सुख शान्ति का प्रचार महर्षि दयानन्द जी ने किया और इसके लिए ही अपने प्राणों की आहुति दी। उनके जीवन का मुख्य सन्देश ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में विद्यमान है। उसका अध्ययन कर सत्य को ग्रहण करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य है। प्रकृति की सबसे अद्वितीय, विशिष्ट एवं अनमोल कृति मानव है, किन्तु आज के विश्व समुदाय में वह अलग-अलग एवं पृथक-पृथक धर्मों के माध्यम से प्रकृति का अनेक नामकरण करके इसकी उपासना करती है। यह बात सर्वविदित है और इसमें कोई बुराई भी नहीं है कि हम उस प्रकृति को आराध्य मानते हैं जिनसे हमें बनाया और हमें तरह-तरह के संसाधनों से सुसज्जित किया।

कु॰ सबिया सुल्तान
बी.ए. V सेम.

कहते है कि दुनिया में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो इन्सान को गिरा सके, इन्सान हमेशा इन्सान के द्वारा ही गिराया जाता है। इस सम्पूर्ण संसार में अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के व्यक्ति हैं। आज के इस आधुनिक युग में संस्कारों का चीरहरण हो रहा हैं, संस्कृति का विनाश हो रहा है, दया, धर्म, इंसानियत का नामोनिशान मिट चुका है। व्यक्ति स्वार्थी बनता जा रहा है। सर्वत्र श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का पतन दिख रहा है।

संसार में ईश्वर ने करोड़ो जीव-जन्तु बनाए, लेकिन मानव ईश्वर की सबसे अहम् कृति है। लेकिन ईश्वर की यह श्रेष्ठ कृति आज पथभ्रष्ट हो रही है। आज मानव दानव बनता जा रहा है। संवेदनाएं दम तोड़ रही है। मानव आज लापरवाही से जंगलों में आग लगा रहा है, उस आग में हजारों जीव जन्तु जलकर राख हो रहे हैं। आज मानव मशीन बन गया है निजी स्वार्थों के आगे अंधा हो चुका है। संस्कारों का जनाजा निकाला जा रहा है। मर्यादाएं भंग हो रही हैं। आज लोग भूखे प्यासे मर रहे हैं।

मानवता सबसे बड़ा धर्म है। मानवता के ही बदौलत हम सुख, शांति और समृद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। मानवता को सभी धर्म व प्रांत समान रूप से महत्व देते हैं। वास्तव में उसी जीवन का मोल है, जो पीड़ित मानवता की सेवा के लिए समर्पित है। मानवता सिर्फ मानव तक सीमित नहीं है। मनुष्यता एक इन्सान के द्वारा दूसरे इन्सान पर किए गए वह अच्छे कर्म होते हैं जिससे दूसरे इन्सान को खुशी मिलती है। जीवन सिर्फ दो वक्त का खाना खाने के लिए नहीं हुआ है, बल्कि मनुष्य का जन्म इसीलिए हुआ है कि वह दुनिया में कुछ ऐसा कर जाए कि हजारों सालों तक दुनिया उसे याद रखे।

अब तक बहुत सारे ऐसे लोग हुए है जिन्होंने ऐसे कर्म किए है और मानवता के ऐसे कई उदाहरण दिए है कि हजारों सालों बाद भी आज उन्हें याद किया जाता है। महादानी कर्ण जिसने दान में अपना सुरक्षा कवच भी दान कर दिया था। इससे हमें यही सीख मिलती है कि हमें दूसरों की मदद् के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म 'मानवता' ही है।

गाँधी जी का आर्थिक चिंतन

कु0 अवनि सैनी
बी.ए. V सेम.

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1864 को एक व्यवसायी परिवार में हुआ था। मोहन दास करम चन्द गाँधी को उनके महान योगदान और त्याग के लिए लोग उन्हें महात्मा के नाम से जानते हैं। उन्होंने समाज के पिछड़े तबके को स्वावलंबी बनाने के लिए जो विचार दिए उनकी आज पूरी दुनिया में चर्चा होती है। गाँधी जी पूँजीवाद के विरोधी थे। उनका कहना था कि ''इस पृथ्वी पर मानव की आवश्यकता के लिए प्रचुर मात्रा में संसाधन उपलब्ध हैं, परन्तु मानव की लालसा के अनुरूप संसाधन नहीं हैं। गाँधी जी का मकसद भारत के हर एक घर को उत्पादन की एक इकाई में बदलना था। जिससे भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बन सकता है। इसके साथ ही साथ गाँधी जी ने ग्रामीण रोजगार पर भी बल दिया वे मानते थे कि **''गाँव में कुटीर उद्योगों और लघु उद्यागों का विकास किया जाए''** गाँव के लोगों को रोजगार की तलाश में शहर न जाना पड़े। गाँधी जी ने स्वदेशी के रूप में हस्त उद्योग, ग्रामोद्योग को बढ़ावा दिया। उन्होंने छोटे और श्रम प्रधान उद्योगों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाया।

गाँधी जी बड़ी बड़ी मशीनों के विरोधी थे। गाँधी जी की आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन की मात्रा समाज की जरुरत के हिसाब से तय होती है। इसमें व्यक्तिगत इच्छाओं और लालच का कोई स्थान नहीं है। गाँधी जी कहते है– ''उत्पादन का उद्देश्य समाज की आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिए न कि लाभ कमाना''। इस प्रकार, गाँधी जी ने भारत में फैली बेरोजगारी और भुखमरी को दूर करने के कई उपाये सुझाए और उन पर कार्य भी किया।

गाँधी जी ने हर तरह के श्रम को समान महत्व देने की बात की। गाँधी जी के आर्थिक विचारों में 'मानवता' सर्वोपरि स्थान ग्रहण करती है। सकल घरेलू उत्पाद तथा विकास संबंधी अन्य सूचकांक तभी मायने रखते है जब उनसे जन–कल्याण का लक्ष्य पूरा हो सके।

मैं ऐसे संविधान की रचना करवाने का प्रयत्न करुंगा जो भारत को हर तरह की गुलामी और परावलम्बन से मुक्त करें।
(महात्मा गांधी, यंग इंडिया, 10 सितम्बर 1931)

बसुंधरा पुकारती केवल इंसान को

कु॰ सोनल राना
बी.ए. VI सेम.

उसूलो की कमी नही है जमाने में पर राजनीति के लिए बहुत समय है,
सारे उसूलों को फिजूल में बहाने के लिए।

धर्म और राजनीति सिक्के के दो पहलू है जहाँ जिसको ऊपर रखकर देखना चाहोगे तो दूसरा दब जाएगा और यह तो सर्वविदित है कि जो दबता है उसका अस्तित्व हमेशा खतरे में रहता है। धर्म और राजनीति दोनों एक दूसरे के ऊपर निर्भर करते हैं। लेकिन आज के दौर का तो दृश्य ही कुछ और है। जहाँ धर्म और राजनीति बस इन कुछ पंक्तियों तक ही सीमित रह गये हैं-

तोड़ दो इमारते जला दो दुकान, तेरा-मेरा तो नहीं होगा,
किसी का तो होगा हिन्दुस्तान, तलवार मशाले झंडे नारे,
बदल-2 कर काम लो सारे, मेरा तेरा तो होता ही नहीं,
बुजुर्ग-बच्चा होगा किसी का परेशान।

ऐसी दु:खद परिस्थिति बन चुकी है कि अगर आज कहीं किसी को मदद की जरुरत होती है तो पहले उसका धर्म देखा जाता है कि हिन्दू या मुस्लिम कौन है? उसके बाद सोचा जाता है कि हम इसकी मद्द करेंगे या नहीं? क्यों कोई इसांनियत और मानवता के बारे में नहीं सोचता है? इसांनियत का तो कोई धर्म नहीं होता।

अयोध्या श्री राम की जन्मभूमि जो कि इतनी पावन है कि वहाँ हवाओं में भी प्रेम और सहानुभूति बहती है। लेकिन आज न तो वह प्रेम वहां रहा न ही भाईचारा। अयोध्या का नाम सुनते ही मन में एक ही नाम आता है बाबरीं मस्जिद का यह मसला जो कि देश का सबसे पुराना विवादित मसला है। लेकिन जब इसे मसले ने सियासी रंग बदला तो मंदिर-मस्जिद की चौखट से निकलकर विवाद अदालत की दहलीज पर जा पहुँचा और इस मसले का परिणाम हम सबके सामने है। देश में इतने दंगे-फसाद हुए जिनमें निर्दोष लोगों को भी पिसना पड़ा।

शक्ल अपनी ही शाह, शीशा तो खोटा खरा न देखा।
था कंठ अपना ही बेसुरा, हमने तो कोई साज़ बेसुरा न देखा।
यह तो बात है अपनी सोच की, तुमने कुछ भला न देखा
हमने कुछ बुरा न देखा।

ऐसा नही है कि गौ राजनीति हमारे देश में कोई अनसुना मुद्दा रहा हो। सालों पहले गौ रक्षकों की भीड़ ने संसद पर हमला बोला था। एक गृह मंत्री को अपनी कुर्सी से हाथ भी धोना पड़ गया था। लेकिन पिछले तकरीबन 3 सालों से गौ रक्षा के नाम पर पूरे देश में 6 हमले हुए है। जिनमें कुछ लोगों को पीट-पीटकर मार डाला गया।

दूसरी और जब हम कश्मीर की और देखते है तो अत्यंत पीड़ा होती है। जहाँ धर्म के नाम पर असंख्य कश्मीरी पंडितों को बेघर कर दिया गया। कैसे धर्म और राजनीति की इस राह पर चलते-2 हम उन्नति के शिखर पर पहुँच पाऐंगे? नहीं हम सबको यह समझना होगा कि देश में धर्म के, राजनीति करने वालों की मंशा क्या है। हमें, अपनी भारतमाता अपनी जन्मभूमि के हित के लिए सोचना होगा।

रोटियाँ है सिक रही, आरक्षण की आग से, खतरा है मंडरा रहा अब, धरती के सुहाग पे।
राजनीतिक गठरियां अब, गर्म बैठी हो रही, देश ये शमशान रुपी, बीज को है बो रही।
जाति, वर्ग, धर्म की, आग सी सुलग रही, मानवता के गीत सुनाते, मानवता ही खों गयी।
वंसुधरा पुकारती है, अपनी संतानों को, न दलित न सर्वण, केवल इंसानों को।

हिमालयी कुम्भ-नन्दा राजजात सांस्कृतिक यात्रा

डा0 किरन बाला
सीनियर असि0 प्रो0 समाजशास्त्र

संस्कृति किसी भी समाज का अभिन्न अंग है। समाज को संस्कृति में मानवीय संवदेनाए निहित होती हैं। इस सन्दर्भ में उत्तराखण्ड की संस्कृति अपनी अलग पहचान रखती है, इसे देव संस्कृति की भी संज्ञा दी जाती है। इसी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है धार्मिक-संस्कृतिक यात्राएं, यहाँ के प्रत्येक वृक्ष, नदियों पर्वतों से जुड़ी कोई न कोई लोक कथा, लोककला प्रचलित है। संगीत, साहित्य, उत्सव, त्यौहार पर इनकी छाप स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ के सामाजिक, आर्थिक जीवन एवं चिन्तन में आध्यात्म के दर्शन होते हैं।

उत्तराखण्ड में चार धामों की यात्राओं एवं जातों की बहुत पुरानी परम्परा है। जिनमें से प्रमुख है नन्दा देवी राजजात यात्रा। हिमालयी कुम्भ के नाम से विश्वविख्यात यह यात्रा हिमालय के उत्तर शिखरों की ओर 12 वर्षो के अन्तराल में आयोजित होती है। नन्दा अष्टमी का पर्व प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। नन्दा देवी गढ़वाल के राजाओं की कुलदेवी तथा कत्यूरी राजाओं की इष्ट देवी मानी जाती है।

नन्दा राजजात का निश्चित इतिहास ज्ञात नहीं है तथापि लोक परम्पराओं के अनुसार यह यात्रा आठवी सदी से शुरु हुई, पूर्व में राजजात का आयोजन चाँदपुर गढ़ी के नरेश करते थे किन्तु राजधानी परिवर्तित होने के पश्चात् उनके छोटे भाई काँसुवा के राजकुँवर इस परम्परा का निर्वाह करते आ रहे हैं। नन्दा राजजात की परम्परा काफी पुरानी है। 1886 से प्रारंभ होने के प्रमाण उपलब्ध है। हाल ही में राजजात 2014 में सम्पन्न हुई थी, चमोली जनपद के नौटी गाँव से आरम्भ होकर यह यात्रा 22 पड़ावों को पार कर 280 कि०मी० की कठिन पैदल मार्ग तय करती है। सर्वप्रथम चौसिंगा मेढ़े एवं स्वर्ण जड़ित छतोली को नौटी मन्दिर में रखा जाता है। मन्दिर के प्रागंण में रातभर नन्दा के जागर गीत एवं पारम्परिक मंगल गीत गाये जाते हैं। अन्तिम दिन गाजे-बाजे तथा करुणा गीतों के साथ नन्दा देवी की विदाई से राजजात आरम्भ होती है। गाँव की महिलाएं नन्दा को नम आँखों से गाँव की सीमा तक विदाई देती हैं। यात्रा की अगुवाई कर रहे चौसिगां मेढ़े पर नन्दा के लिए आभूषण दौण-दैज आदि लाद दिये जाते हैं, यात्रा जिन-जिन क्षेत्रों से होकर गुजरती है उन गाँवों को छतोलियाँ लेकर लोग राजजात में शामिल होते हैं।

यात्रा का पहला पड़ाव ईड़ा बधाणी होता है। जिन पड़ावों से यात्रा होकर जाती है, वहाँ यात्रियों का भव्य स्वागत होता है। गाँव के सार्वजनिक चौक से गाँव के मन्दिर तक के मार्ग पर सफेद कपड़े का थान बिछाया जाता है। मन्दिर प्रांगण में अपने-अपने निशानों के साथ रातभर लोकगीत गाकर पारम्परिक लोकनृत्य किये जाते है। अगले दिन प्रातः परम्परानुसार कलेवा देकर नन्दा को महिलाएँ भाव विभोर कंठ से यह गीत गाते हुए विदाई देती है-

जा ब्बै तू कैलाश त्वै तै दयूल मी मुंगरी काखड़ी, जख म्वारी नि रीगदि, कन कै की रैली तू वै कैलाश'

अर्थात बेटी तू कैलाश जा रही है, मैं तुझे कलेवा में ककड़ी मुंगरी दूंगी, जिस कैलाश में मधुमक्खी नहीं मडराती हैं, तू उस निर्जन एकान्त कैलाश में कैसे रहेगी। नन्दा के ननिहाल (ईड़ा बधाणी) के लोग दूर पहाड़ की चोटी तक नन्दा को छोड़ने जाते हैं। पुनः ढोल दमाऊ और अंकोर से गुंजित माहौल में स्वर्णप्रतिमा युक्त छंतोली के साथ यात्रा अगले पड़ाव की ओर आगे बढ़ती है। रात्रि विश्राम के लिए यात्रा काँसुवा गाँव पहुँचती है, मुख्य पूजा इसी स्थल पर होती है। काँसुवा गाँव के महादेव स्थल तक नन्दा देवी की छंतोली को नौटियाल लोग लाते हैं, आगे का दायित्व ड्यूडी के लोगों का होता है। जब यात्रा चाँदपुर के किले तक पहुँचती है। नन्दादेवी का पश्वा छंतोली हाथ में लेकर किले की परिक्रमा करने लगता है, इसके पश्चात् यात्रा तोप, उज्जवलपुर, सेम-कोटी, धारकोट, घड़ियाल, सिमतोली गाँवों से गुजरकर आगे बढ़ती हैं। दिलखाणीधार से नन्दा देवी का मायका नौटि अन्तिम बार दिखाई देने के

कारण छतोलियाँ ससुराल जाने वाली बेटी की तरह बार-बार नौटि की ओर देखती है। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा गाये गये गीत सभी को भावुक कर देते है। इसके वाद कोटी से आये धतौड़ तक तीव्र चढ़ाई एवं घने जंगल हैं। नंदा के मायके का अन्तिम पड़ाव भगोती गाँव के लोग भी नन्दा को भेंट देकर दूर पहाड़ी तक छोड़ने जाते हैं। आँखों से ओझल होने तक निहारते रहना, घन्टों धूप-वर्षा में खड़े रहकर प्रतीक्षा करना बड़ा ही मार्मिक दृश्य होता है। भगोती गाँव की सीमा तथा नारायणगड़ के समीप क्यूर गधेरा भगवती नन्दा के मायके की आखिरी सीमा पर कई घन्टों के अनुनय-विनय के बाद यात्रा इस गधेरे के पुल को पार करती है। मायके को छोड़ने का हृदय विदारक दृश्य देखकर सभी की आँखे अश्रुपूर्ण हो जाती हैं। इसके बाद कुलसारी नन्दा के ससुराल का पहला पड़ाव है। जहाँ देवी का भूमिगत श्रीयन्त्र निकालकर पूजा के बाद पुनः भूमिगत हो जाता है। चेपड्यू, नंदकेसरी, पूर्णा सेरा, देवाल की देवी, फल्दिया गाँव के लाटू देवता से भेट करते हुए यात्रा मुदोली गाँव से ऊपर चढ़ाई पारकर लोहजंग पहुँचती है। राजजात यात्रा करीब 22 पड़ावों के गाँव, गधेरे, नदियों को पार करके अन्तिम गाँव बाण पहुँचती है, इसके पश्चात् मानवरहित बुग्याल, ग्लेशियर की रोमाचंक एवं रहस्यमयी यात्रा प्रारम्भ होती है।

वेदिनी बुग्याल, चौडिया, कैलुआ विनायक, बगुवावासा होकर यात्रा प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल रुपकुंड पहुँचती है। इसके ऊपर ज्यूरागली के 5500 मी० ऊँचे दर्रे को पार कर शिला समुद्र, तथा नीचे उतरते भोजपत्र के जंगल यात्रियों को हर पल अलग ही दुनियाँ से रुबरु कराते हैं, यह रास्ता इतना विकट है कि पहले केवल रस्सी के सहारे इस पर आगे बढ़ा जा सकता था किन्तु अब शासन द्वारा संकरा रास्ता बनवाया गया है, आक्सीजन की कमी के कारण एक-एक कदम चलना कठिन होता है। यहाँ से दूसरी ओर निकलने का रास्ता तीव्र ढलान है। जो बिना लाठी के सहारे पार करना असम्भव है। इसके बाद प्रारम्भ होता है शिलासमुद्र के चारों ओर फैला बुग्यालु क्षेत्र, मखमली घास, रंग बिरंगे फूल, हवा में घुलती सैकड़ों जंड़ी-बूटियों की खुशबू यात्रियों को दिव्य सुकून की अनुभूति प्रदान करती है। शिला समुद्र, ग्लेशियर से बहाकर लाये गये पत्थरों का समुद्र है। कानों में पड़ती गलेशियर के टूटने की आवाजें यात्रा के विराट स्वरुप का अनुभव कराती हैं। हेमकुण्ड नन्दा राजजात यात्रा का अन्तिम पड़ाव है। हेमकुण्ड में पूजा अर्चना के बाद चौसिंगा मेढ़े को भगवती नन्दा के लिए श्रृंगार, वस्त्र, अस्त्र आदि सामग्री सहित वहीं छोड़ दिया जाता है और माँ नन्दा को मर्मान्तक विदाई दी जाती है। पुरातन कथाओं के अनुसार मेढ़ा इस सामाग्री को लेकर नन्दा पर्वत की अनन्त यात्रा पर चला जाता है। मान्यता है कि इस यात्रा के सम्पन्न होने के बाद गाँवों में चारों ओर हरियाली, खुशहाली छा जाती है, और लोक जीवन धन-धान्य से भरपूर हो जाता है। आज इस धार्मिक यात्रा को साहसिक पर्यटन के रुप में देखा जाने लगा है।

यह विराट यात्रा लोगों में विश्वास पैदा कर उनमें साहस, दृढ़ता, संवेदनशीलता का संचार कर लोकजीवन को मजबूती अवश्य प्रदान करती है। निसन्देह रहस्य, रोमांच से भरी नन्दा राजजात यात्रा पर्वतवासियों के धार्मिक, सांस्कृतिक और मानवीय पक्षों को परिलक्षित निःसंदेह करती है।

वर्तमान चुनौतियाँ और ललित कला

डा0 अर्चना चौहान
असि० प्रो०, चित्रकला विभाग

स्वतंत्रता पश्चात भी भारतीय कला गतिविधि का आज भी ब्रिटिश अकादमिक प्रभाव के साथ-साथ आधुनिक कला के विभिन्न 'वादो-धनवाद, अमूर्तन वाद, अभिव्यंजनात्मक और अन्तर्वस्तुवाद से प्रेरित होना जारी है। यह कला-गतिविधि सामग्री, बनावट तथा रुपाकार से लेकर मानसिक खोज तक फैली हुई है। अभिव्यक्ति के स्तर पर समाजवादी यथार्थवाद (विशेषतया चित्रकला में) से लेकर क्लासिकल लोक व जनजातीय कला से प्रभावित प्रतीकवाद तक फैली है। भारतीय कलाकार के काम में एक ऐसी दुनिया प्रतिबिंबित है, जो ऊपरी तौर पर पूरी तरह अव्यवस्थित नजर आती है किन्तु जिसमें असीम रचनात्मक शक्ति है।

आज कलाकार अपनी निजी अभिव्यक्ति को ज्यादा महत्व देता है उसने स्वयं को कला के लिए निर्धारित 'मानको या अन्य 'प्रतिबंधो से युक्त कर लिया है। यूरोप के कला-परिदृश्य में जो कल हुआ था, वह भारत में आज होता दिख रहा है। आज की कला न तो किसी शैली (स्कूल) का परिणाम है न ही किसी विचारधारा का। इसका अभिप्रेरक मूलत: किन्हीं समान सौन्दर्य शास्त्रीय विशेषताओं को अपनाना है जिसकी प्रशंसा प्रवासी कला-पारखियों के अलावा स्थानीय कला-पारखी भी करते है क्योंकि चित्रकला तथा मूर्तिकला को अब अपने आप में साध्य नहीं माना जाता बल्कि कलाकार की निरंतर चलने वाले सृजनकार्य की 'घटना' माना जाता है अत: इनकी प्रकृति भी अधूरेपन की बन गई है- एक ऐसी स्थिति जिसे हम 'अपूर्ण' संरचनाओं, कैनवास के रिक्त स्थानों, गड्ड-मड्ड धरातलों और निरुपित आकृतिमूलकता के रुप में देख सकते है और इन्हें ही कलाकार के स्वत: स्फूर्त प्रयास के तौर पर वर्णित किया जाता है।

आज के युवा कलाकार ऐसे रुपाकारों को अपना रहे हैं, जो बहुअर्थी हो। इसका एक प्रमुख उद्देश्य तो समझ में आता है कि कला के बाजार में आई तेजी से फायदा उठाया जाए, जो व्यावसायिक कला-दीर्घाओं की बड़ी हुई संख्या तथा विदेशी खरीदारों के कारण संभव हुई है और आकर्षक बिक्री के अवसर ज्यादा बढ़े है।

कला की सजग संरक्षण-परम्परा का स्थान प्रतिस्पर्धी माँग ने ले लिया है। इसके अंतर्गत लोकप्रिय 'मीडियाकार' स्तर की ऐसी कलाकृतियों की मांग रहती है जिसके अच्छे दाम मिल जाते है। कला के मूल-भूत तत्वों के लिए न तो कलाकार का आग्रह दिखाई देता है और न ही संरक्षक का। हाँ, ऐसे चित्रकारों को सरंक्षण जरुर प्राप्त है जो सीनरी बनाते है लोकप्रिय पश्चिमी प्रवृत्तियों अथवा विशेष रुप से भारतीय लगने वाली कृतियाँ बनाते है, ताकि उनका भरण-पोषण अच्छी तरह हो सके इसके अलावा, सुप्रसिद्ध कलाकारों की नकल करने वालों का एक वर्ग पनप रहा है तथा कला की जालसाजी करना एक व्यवसाय बन चुका है। श्रेष्ठ कलाकारों को, हमेशा की तरह, कला की मूलभूत तत्वों की खोज फिर से करनी पड़ रही है और उन्हें कोई सहायता भी प्राप्त नहीं है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सभी सृजनात्मक गतिविधियों की तरह यह उचित ही है कि भारत की समकालीन कला भारतीय तथा यूरोपीय कला परम्पराओं के अनेक सूत्रों को साथ लाकर ही विकसित हुई है। यकीन के साथ हम एक ऐसे पड़ाव पर पहुँच रहे हैं, जब भारतीय कला अपने गरिमापूर्ण संकल्प को उजागर कर सकेगी। भारत की समकालीन की यह नियति है कि यह बिना शर्त महान उपलब्धियों को छुए क्योंकि यहाँ का कलाकार अपने अतीत को व्यापक स्तर पर पुनसृजित करने के लिए प्रयासरत है।

जीवन की परिभाषा हिंदी

कु॰ प्रगति सिंह
बी.ए. IV सेम.

जन-जन की भाषा है हिंदी, भारत की आशा है हिंदी।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा, वो मजबूत भाषा है हिंदी।
हिंदुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी, एकता की अनुपम परंपरा है हिंदी।
जिसके बिना हिंद थम जाए, ऐसी जीवनरेखा है हिंदी।
सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिंदी।

भारत में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भाषा का जन्म भारत में हुआ था। हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को स्वीकार किया गया। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। इसलिए हम 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस और 14 सितम्बर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाते हैं। आज भी हिंदी देश के कोने-कोने में बोली जाती है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों की यह राजभाषा है।

विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। परंतु आज अपने ही देश में हिंदी को तिरस्कृत होना पड़ रहा है। विदेशी मानसिकता के रोग से पीड़ित कुछ लोग आज भी अंग्रेजी के पक्षधर और हिंदी के विरोधी बने हुए हैं। ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं जो हिंदी को अच्छी तरह बोलना व लिखना जानते हैं लेकिन वे अपने मिथ्याभिमान का प्रदर्शन अंग्रेजी बोलकर करते हैं। अन्य देशों के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति जहाँ भी जाते हैं अपने ही देश की भाषा बोलते हैं, परन्तु हमारे राजनेता अन्य देशों को छोड़िए अपने ही देश में अंग्रेजी में बोलकर अपने अहं की तुष्टि करते हैं। ऐसे व्यक्ति जो हिंदी को हीनता का प्रतीक मानते हैं उन्हें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन कर संकुचित मनोवृत्ति को छोड़कर हिंदी को अपनाना चाहिए।

संसद में भी प्रश्न हिंदी में पूछा जाता है तो उसका उत्तर अंग्रेजी में मिलता है। व्यवहार में हिंदी भाषा का प्रयोग हीनता नहीं गौरव का प्रतीक है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्व: श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले भारतीय थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी में भाषण देकर सबको चौंका दिया था। आजकल संचार का युग है इसमें सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, व्हाट्सअप, ट्विटर और अन्य मीडिया में हिंदी के कई विकल्प रखे गए हैं और साथ ही हिंदी के भंडार भरे पड़े हैं।

देश के लेखकों ने हिंदी के ऊपर कई गीत और रचनाएँ लिखी हैं जिसमें एक है ''हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्ता हमारा'' ये शब्द देश की शान में लिखे गए और हमें गर्व महसूस कराते हैं। हम सभी को एकजुट होकर हिंदी के विकास को एक नये सिरे से शिखर तक ले जाना होगा।

सबकी सखी हैं मेरी हिंदी,
जैसे माथे पर सजी है सुंदर बिंदी।
देवनागरी है इसकी लिपि, संस्कृत है इसकी जननी,
हर साहित्य की है ये ज्ञाता, सुंदर सरल है इसकी भाषा।
प्रेम, अपनापन सौंदर्य है इसका, दिलाना सम्मान कर्तव्य है हम सबका
देवों के द्वारा विरचित है, ऋषियों ने विस्तृत किया जिसे,
अपने मौलिक अनुशीलन से, कवियों ने अमृत किया जिसे।
यशवंत शासकों ने दी थी, जिसको नूतन परिभाषा है
वह हिन्दोस्तां की अलबेली, जन-जन की हिन्दी भाषा है।

Contribution of Dr. A.P.J. Abdul Kalam in Science, Technology and Humanity

Ms. Vaishnavi Sharma
B.Sc. II Sem

"If you want shine like a sun, first you have to burn like Sun"

These words remind us of a well known celebrity with extraordinary personality, the Missile Man of India, Dr. A.P.J. Abdul Kalam. Modern Indian history is incomplete without mentioning the name of Dr. Avul Pakir Jainulabideen Abdul Kalam. He was an illustrious as a scientist, people's president, phenomenal teacher and above all a great human being. The Man of Passion Dr. Kalam was born on October 15, 1931 to a necessitous and little educated family in the pilgrimage centre, Rameshwaram in Tamil Nadu. He once said, **"All Birds find shelter during rain, But, Eagle avoid rain by flying above the clouds"**

Like most of the other people's life, Dr. Kalam's life also had many problems but his attitude made the difference. He had a typical childhood, he belong to a family whose financial conditions were not sound enough, his father was a boot man. Even he has to do odd jobs as a means to support his family meagre income, but never gave up his education. He began his journey of education from Schwartz Higher Sr. Sec School, then he went to st. Joseph College Tiruchirappalli for graduation in Physics in 1954. He specialized in Aeronautical Engineering from Madras Institute of Technology in 1960. Dr. Kalam was a very knowledgeable man but still had a strong desire to learn more. He use to say ***"I am still a student" "Hard work and self confidence are the best medicine to kill a disease named failure. To achieve success in life, you should have a single minded devotion towards the goal"*** He himself proved that hard work with single objective is the ultimate recipe of success. He was the remarkable man who left his indelible marks on various fields ranging from science to politics.

This constitution to science, technology and humanity cannot be elutriated ever Dr. Kalam was the very famous Indian Aerospace Engineer. He served for more than 40 years as a science administrator and scientist mainly at ISRO and DRDO. Dr. Kalam served as Chief scientific advisor to Prime Minister between July 1992 and December 1999. He started his career as a scientist by designing a small helicopter for Indian Army. He played a leading role in the Indian Missile and Nuclear Weapon program. Being a Chief Executive of Integrated guided Missile Development Program, he performed a main part in the growth of several missiles in India. The IGMDP programme led by Dr. Kalam laid the foundation stone for the success story of several missiles right from PRITHVI to AGNI 5ICBN missiles. Dr. Kalam was also the part of INCOSPAR committee. He also directed two projects in 1970 namely Project Devil and Project Valiant. Dr. Kalam launched SLV III in 1980, when India could hardly dream of Satellite Launch Vehicle.

Dr. Kalam was a visionary man who had dreams that transforms into thoughts and thoughts resulted in action. He will also be remembered for his landmark contribution in the Mission 2020. "The Technology Vision". He saw a dream of India becoming a developed nation by 2020.

The Pokhran II test was conducted by India in May 1988. He took his great decision during his tenure of secretary of DRDO and Chief Scientific Advisor to Prime Minister. Dr. Kalam was the passionate advocate of open source software and also put for work a project plan for bio implants. Dr. Kalam along with Soma Raju, a well known cardiologist came up with a well engaged tablet computer in 2012 that will take care of the health of underprivileged people of rural India. He, as the president of India addressed citizens of India with the same vision which formed his entire life i.e. ***"Do not believe in luck, Believe in hard work".*** Inspite of his great achievements and contribution in the scientific field, he wanted to be remembered as a teacher. He said "Teaching is a noble profession that shapes the character, future and caliber of an individual, he wanted people will remember him as a good teacher it will be a biggest honour for him" He travelled all over the country and also abroad addressing students at schools and colleges by his encouraging words

"If you fail, never give up, because, F.A.I.L means First Attempt in Learning.
End is no the end, if infact, E.N.D. means Effort Never Dies
If you get NO as an answer, Remember, NO means Next Opportunity"

He always ignited young mind to harness science and technology for human welfare by a proverb" Dream is not what we see in sleep, instead, Dream is a thing that doesn't let us sleep" Our favourite Bharat Ratan, a highly knowledgeable man had great contribution in the field of science, technology, humanity and education. Dr. Kalam's endeavouring personality inspires many and will continue inspiring generations to come. We salute the worthy contribution of this precious great man in field of science, technology and humanity with a pride and honour.

भावभीनी विदाई - श्री राजपाल सिंह

(कार्यकाल - 1 अगस्त 1983 - 30 जून 2019)

सरल, सहज, सौम्य, मृदुभाषी तथा विनम्र स्वभाव के धनी महाविद्यालय के पुस्तकालय में 'बुक लिफ्टर' के पद पर कार्यरत ' श्री राजपाल सिंह' जी ने अपनी योग्यता, निष्ठा और कर्मठता का परिचय देते हुए लगभग 36 वर्षों से अधिक के सफल कार्यकाल में अपनी अमूल्य सेवाएं महाविद्यालय को प्रदान कीं।

आपकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर दीर्घ आयुष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं सर्व सुख के साथ आपके उज्ज्वल भविष्य हेतु महाविद्यालय परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Role of Women in Democratic India

Miss. Kavita
B.A. VI Sem

In ancient times women had honourable position in the society. They were equal partner of men in every field of life. During the muslim rule women lost their position of honour and right of equality. They were kept within the four walls of house. During the British rule their position remained unchanged.

A great change has come in the position of women after Indian Independence. India has been democratic country. Out constitution also has given equal rights to women in all field of life. They have been given equal voting rights. They now enjoy a place of honour, in society.

In the political field, women were playing their role successfully. A few years ago late Mrs. Indira Gandhi was the first woman Prime Minister of India. She was a leader of world fame. Mrs. Vijay Laxmi Pandit occupied the chair of President of the United Nation Organization. Mrs. Vijay Raje Scindia was the first woman Vice president of BJP, Mrs. Partibha Devi Singh Patil has played the role of first woman president o India. At present there are so many women members of parliament and members of legislative assemblies. Mrs. Nirmal Sitaraman is the Defence Minister of India, and she encourages the three forces of the country. Foreign Minister of India is Mrs. Sushama Swaraj who visited many neighbouring countries for solving various issues and problems. She is very kind hearted. Mrs. Sumitra Mahajan is the current Lokh Sabha speakar. General Governor of Uttarakhand is Mrs. Baby Rani Maurya. Thus in the field of politics, many women are giving their service for our country. This is the matter of pride for our country.

Economic Thoughts of Gandhiji

Dr. Hema Narang
B.A. VI Sem.

Our Indian civilization has long and illustrious history. The past centuries have seen many attacks on our society and have been forced to lead life in subservience for hundreds of years. Our independence was achieved through Mahatma Gandhi's unique concepts of 'Satyagrah' with focus on rural economy. Decentralization and Swadeshi were the centre point of Indian economic thought.

Swadeshi :– Swadeshi was a major weapon to demoralize and discourage British Rulers, It played a major part in making India self reliant and self-confident.

Khadi :– Gandhiji's stress on Khadi was a corollary to swadeshi. Khadi required decentralization of production and consumption. Since Khadi is produced by the common man in every village, the economic power is distributed to every village and to every man.

Charakha :– Gandhiji insisted on 'Charakha' – a simple, yet effective apparatus and monetary gain to earn one's bread.

Gandhiji has highlighted on the importance, revival, the technical feasibility and economic viability of many village and cottage industries:-

1- Spinning 2- Tanning 3- Dairying 4- Gur and Khandsari 5- Compost manure
6- Hand made paper

Conclusion :– Life is to be consecrated as a sacrifice according to Gita, Everybody must work. Those who eat without working are parasites. Thus the economic foundations of Gandhian political philosophy are inspired by a moral orientation.

Freedom of Expression in Democratic India

Deepa Mahala
B.A. VI Sem.

Speech is God's gift to mankind. Through speech a human being conveys his thoughts, sentiments and feeling to others. Freedom of speech and expression is thus a natural right, which a human acquires on birth. It is, therefore, a basic right.

"Everyone has the right to freedom of opinion and expression, the right includes freedom to hold opinions without interference and to seek and receive and impart information and ideas through any media and regardless of frontier". proclaims the universal declaration of Human Right (1948).

Freedom of speech and expression is live wire of the democracy it is integral to the expansion and fullfillement of individual personality. Democracy being collective will of the people, personality of individuals shape the society into a cohesive, well knit administrative unit. Public discussion of political economic and social problems being essential to the proper functioning of a democratic government it is imperatie that free society should keep the channels of communication wide open to the free circulation of ideas and this is well achieved by the guarantee of freedom of speech and expression.

Freedom of speech and expression means the right to express one's own convictions and opinions freely by words of mouth, writing, printing pictures or any other mode. This resolve is reflected in Article 19(1)(a) which is one of the Articles found in Part III of the constitution which enumerates the Fundamental Rights Freedom of air one's view is the lifeline of any democratic institution. Man as rational being desires to do amy things but in a civil society his desires have to be controlled, regulated and reconciled with the exercise of similar desires by other individuals. The guarantee of each of the above right is, therefore, restricted by the constitution in the larger interest of the community. The right to freedom of speech and expresison is subject to limitations imposed under Article 19(2).

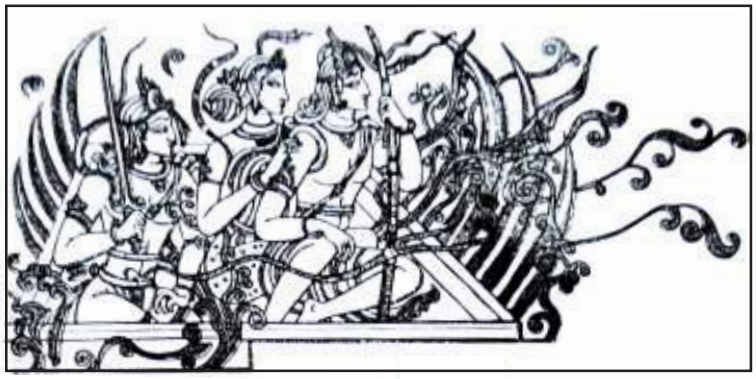

Build a gender balance world

Ms. Noor-E-Daraksha
B.Sc. IV Sem

The future is exciting let's build a gender balanced world.
Everyone has a part to play all the time, every where.
From grassroots activism to worldwide action,
We are entering an exciting period of history,
Where the world expects balance.
We notice its absence and celebrate its presence.
Balance drives a better working world.
Let's all help create a balance for better.

Year long Activity and Collaboration

The 2019 Balance for Better campaign runs all year long. It doesn't end on International Women's Day. The campaign theme provides an unified direction to guide and galvanize continuous collective action, with balance for better activity reinforced and amplified all the year.

Let's build a gender-balanced World

Balance is not a women's issue, it's a business issue. The race is on for the gender balanced boardroom, a gender – balanced government, gender – balanced media coverage, a gender – balanced employees, more gender – balance in wealth, gender – balanced sports coverage. Gender balance is essential for economics and communities to thrive.

Collectivity we can all Play a Part

Collective action and shared responsibility for driving a gender-balanced world is key for better future. International women's Day is a global day celebrating the social, economic, cultural and political achievement of women – while also marking a call to action for accelerating gender balance. The first international women's day occurred in 1911, supported by over one million people. Today, IWD belongs to all groups collectively everywhere. Gloria Steinem, world – renowned feminist, journalist and activist once explained "The story of women's struggle for equality belongs to no single feminist nor to any one organization but the collective efforts of all who care about human rights"

So put your hands out and Strike The Balance for Better Pose and make International Women's Day your day, and do what you can do to truly make a positive difference for women everywhere.

Equal Representation

Ms. Rushda Azeem
B.Sc. IV Sem

In 2019 out of the 37 county councillors in Donegal only 3 are women, that's a 8.1% representation, the highest it's ever been. At the national political level two women since 1918 have ever represented Donegal in Dail Eireann. We need change. This year's International Women's Day

Theme is "Balance for Better". It is a call-to-action for driving gender balance across the world while also asking people how will you help make a difference? In honour of this day NCCWN Donegal women's network in association with 50:50 North west. We'll be discussing equal representation, chatting to female county councillors and to women who will be running in the upcoming May local Elections.

शक्ति और समृद्धि की पर्याय नारी

कु0 काजल त्यागी
बी.ए. II सेम

नारी चेतना और समानता के नए आयाम स्थापित करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। जहाँ एक और महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों के कारण उन्हें सम्मानित किया जाता है, वहीं पुरुष भी अपने साथ महिलाओं के संयुक्त योगदान पर गर्व महसूस करने लगे हैं। आज महिलाएँ शक्ति और समृद्धि की पर्याय बन गई हैं।

कई कामयाब महिलाएं लाखों-करोड़ों की प्रेरणा व आदर्श हैं, पर क्या इस कामयाबी के पीछे उनकी जिन्दगी के संघर्ष को कोई जान पाता है? आज की महिला देश-दुनिया की खबर रखते हुए व आपस में तालमेल बैठाते हुए व समय के साथ स्वयं को अपडेट करती व अपने बच्चों को कामयाब बना रही हैं।

विभिन्न कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं में नारी को विशेष आदरणीय स्थान दिया है। जयशंकर प्रसाद ने लिखा है -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पदतल में
पीयूष स्रोत बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत फ्रांसिसी क्रान्ति के दौरान हुई। फारसी महिलाओं के एक समूह ने युद्ध के दौरान महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचारों को रोकने के उद्देश्य से एक मोर्चा निकाला तब पहली बार 1909 में पूरे अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया गया। इस दिन को वार्षिक उत्सव के रुप में मनाने के लिए कोपेनहेगेन में दो फरवरी को महिला दिवस मनाया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता-**Don't Create Limitations** में चयनित प्रतिभागियों की प्रविष्टियों के संपादित अंश

Think Beyond the Limits...

Ms. Ayushi Saini
B.A. VI Sem

I am a girl student but being a girl I dont limit myself and it is my humble advise to my friends don't create limitations. Since our birth the brain started working, the capacity of thinking grows as you grow. However it doesn't develop in the same way for all the people. The way of thinking determines the effectiveness of someone and all achievement we have made are results of our thoughts or other's thoughts.

Thinking can refer to the action of using your mind to produce ideas, decisions, memories, etc. We are surrounded by limits that mostly affects our thinking level. It doesn't matter where or how you are born because limits are there, what matter is to look for how you can break those limits and think beyond them. "If it doesn't challenge you, it doesn't change you, thinking beyond the limits"

Mostly limits are set by the nature, the society, or yourself. Natural limits can not be broken because they are set by the most powerful with super natural wisdom, a Creator. Like, you cannot extend your years of existence. As someone said "the greatest pleasure in life is doing what people say you cannot do".

You were not born with limitations, you develop them through your life experience Imagine what you could achieve if you believe you were limitless, imagine what you could do if you just ignore that voice in your head that tells you, that you can't do it. Life is hard and you'll never get for if you limit yourself in ANYTHING you do. You have the power to make your dream happen.

"I am responsible for my dreams,
I am responsible for my results,
because I am the only one who can stop me
from turning my dreams into a reality
I have the power to make my dream happen.
I have the choice to decide if I will work
hard for it or just settle.
I have the choice to see how far I can go in life
I think beyond the limits, I don't create limitations.

Go Beyond the Sky...

Ms. Vanshika Sharma
B.Sc. VI Sem.

Everyone acknowledge that there are significant difference between male and female, even if they are only physical. Other see not only the physical, but also the social, emotional and intellectual

differences between male and female. Gender roles by definition are the socially appropriate norms that dictate male and female behaviour. In early American culture it was common for a women's job to be a submissive homemaker in clear contrast to the males aggressive breadwinner role. The seventies marked the beginning of the women's movement and the end of the ideals we held on what is to be a 'man' and what is to be a 'woman'. Women are no longer like the stereotypical homemaker, always offering a hot meal for her family, but were instead burning brass and protesting inequality.

Early, in childhood, girls and boys are treated differently in families, schools and other institutions. Girls are encouraged to play with dolls and playhouse type of toys while boys will often play with trucks and army toys. Boys are planned with a rough manner and told to 'tough it out' when they get hurt. Girls are thought to be more passive and expressive with their feelings. The fact is that we are treated differently on the basis of our gender.

You've heard the saying, "The sky's the limit". It's meant to indicate that you can achieve anything; that humans have achieved beyond the bounds of planet earth and enjoy limitless success.

I prefer to believe that the sky is definitely not the limit. There's an entire unexplored cosmic universe out there that is beckoning us – a limitless universe that sets new sights and new standards for goal setting.

Be fearless, Dream big, Be limitless! Man's potential is less than, go way beyond the sky. You can achieve whatever you want to achieve. With the right character, with determined confidence, and with innovative ideas that count, you can rise from nothing to the highest levels of society. If you can think it, you can do it, It's up to you.

Use Imagination and be Limitless...

Ms. Megha Rathi
B.Sc. IV Sem.

We all know about the saying "The sky's the limit. It means to describe that we can achieve anything; that we, the humans can reach beyond the bounds of planet Earth too and can enjoy limitless success. I think it's an overstated term. I personally believe that the sky is definitely not the limit. Why we be limited by anything ? Why there are limitations in achieving goals and becoming successful ? Who can answer this. Why are there so many restrictions?

We live in 21st century, we are in robo-age then why we talk about putting limitation? We, the women, girls are here to enjoy limitless success in our life. Men and women both have equal superpower to prefer men over women. Can anyone answer about it ? Who made these so called measure that put barriers and limitations in our life?

A famous saying is - 'Our deepest fear is not that we are inadequate. Our deepest fear is that we are powerful beyond measures. It is our light, not our darkness, that most frighten us. We ask ourselves, who am I to be brilliant, gorgeous, talented or fabulous ? Actually, who are you not to be?

The mind of a human is limitless. Look at history, look at todays world, the pace of innovation and invention in all aspects of our lives, continues at an astonishing pace. High technology, robotics, artificial intelligence, space missions, medicines, communications, agriculture, infrastructure and life science are the field in which, we enjoy limitless success. As once great athlete said, "Limitations live only in our minds but if we use our imagination, our possibilities become limitless."

मुक्त करो नारी को

कु0 कौसर जहाँ
बी.ए. VI सेम.

आधुनिक काल चेतना तथा नारी उद्धार का काल रहा है। राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी आदि ने नारी को गरिमामय बनाने का सफल प्रयास किया। कविवर पन्त के शब्दों में जन-मन ने कहा -

''मुक्त करो नारी को मानव, चिर वदंनी नारी को,
युग-युग की निर्मम कारा से, जननी, सखी, प्यारी को।''

वस्तुत: स्त्री तथा पुरुष जीवन के रथ के दो पहिए हैं। नारी तथा पुरुष का एकतत्व सार्थक मानव जीवन का आदर्श है। अत: उसे बंदनी मानना भूल है। आज की नारी पुरुष के साथ बराबरी से चल रही है। महिलाएं सातवें आसमान पर झण्डा गाड़ कर कल्पना चावला बन रही है। किरण बेदी बनकर अपराधियों को पकड़ रही हैं। अरुणा राय और मेधा पाटेकर बनकर सामाजिक अन्याय से जूझ रही है। प्रतिभा पाटिल जैसे सर्वोच्च पद पर आसीन है। आज की नारी विदूषी लोकसभा की सदारत कर रही है। लता मंगेशकर बनकर भारत रत्न तक प्राप्त कर रही हैं। आज की नारी हर क्षेत्र में सम्मान प्राप्त कर रही है और पुरुष के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, इसीलिये नारी को सीमाओं में मत बाँधो।

I think more women should be involved in Politics for the good of the human race.

(Aung San Su Kyi)

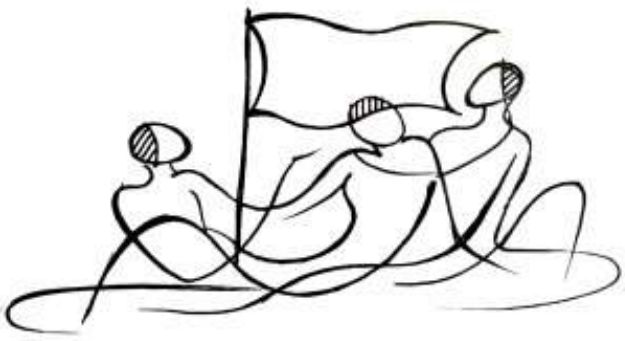

सुनहरे भविष्य की ओर

सुनहरे भविष्य के लिये मेरा कदम

कु0 हेमा नारंग
एम.ए. VI सेम

इस महाविद्यालय में पढ़ना मेरे लिए सौभाग्य की बात है, क्योंकि इसी के माध्यम से मुझमें आत्मविश्वास की वृद्धि तथा व्यक्तित्व को विकास हुआ। मुझे महाविद्यालय से बहुत कुछ सीखने को मिला है। जीवन में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा सदैव मुझे शिक्षकों से मिलती आयी है। कभी भी हार न मानने के लिए तथा सदैव कठिन परिश्रम करने के लिए शिक्षकों ने मुझे प्रेरित किया है, जिससे हर चुनौतीपूर्ण मार्ग पर डटकर सामना करने की चेतना मुझमें जाग्रत हुई है। बहुत से आयोजित क्रियाकलापों में भागीदारी करके मुझे सदैव नवीन सीखने का अवसर प्राप्त हुआ तथा कॉलेज में संचालित कैरियर काउंसलिंग सैल ने, जिसने मुझे भविष्य के लिए सोचने तथा जीवन में अपना लक्ष्य निर्धारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपना लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा सदैव शिक्षकों से मुझे मिलती आयी है। जिसके लिए मैं सदैव अपने महाविद्यालय की आभारी रहूँगी। मुझे ऐसा लगता है कि मैंने सुनहरे भविष्य की ओर कदम रख दिया है, जिसमें महाविद्यालय एक सशक्त माध्यम है।

कु0 आफरीन
बी.ए. VI सेम

यूँ, तो मेरे जीवन में बहुत से सम्मानपूर्ण क्षण आए है किंतु जब मैंने अपनी प्रथम कविता **अपनी पुस्तक की एक कहानी** पर लिखी तथा इसके लिए मुझे महाविद्यालय द्वारा विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया वह पल मेरे जीवन के सबसे यादगार पलों में से एक है।

हमारा महाविद्यालय एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है जहाँ से प्रत्येक वर्ष छात्राएँ एक नया नजरिया, नयी सोच व जोश के साथ समाज में परिवर्तन लाने के विचार के साथ निकलती है। ऐसा ही जोश और नजरिया महाविद्यालय में मुझे भी मिला। मैं जहाँ भी जाऊँगी अपनी शिक्षिकाओं की भाँति सच्ची निष्ठा और कर्तव्य के साथ कार्य करुँगी और अपने विचारों से दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास करुँगी।

Amazing Journey of the College

Ms. Deepa Mehta
B.A. VI Sem.

I can describe my journey of S.S.D.P.C Girls (P.G.) College in one word – Amazing! In these three years I learnt a lot day by day. The affection and knowledge given by my teachers is inestimable. I often read word "Guru" that means "a person who removes darkness from life", here in this college I met the teachers who were really Guru to me.

Here, the teachers not only give bookish knowledge but also teach the right way of living. Our teachers always give best way of knowledge even in limited resources. In these three years, a significant change took place in me that I learned to believe upon myself. This was possible only with help of my teachers, who discovered my hidden talent and made me optimistic.

They taught me valuable things and encourage me to read good books from library, which gave me ability and strength to face the difficulties and which will help me in my future and will remain with me for the next journey of my life.

Let me Fly High.....

Ms. Shama
B.A. VI Sem.

Don't stop me, Let me fly, high,
what I spent in this college, the moment is mine
I can't forget, The Honourable teachers,
This college is an opportunity, to touch the sky,

I, Shama from B.A. VI Sem., feels very glad to share my views. Words can't express my feelings. These three years is a golden period of my life, which I can't forget. This college always encourages me to do different from others.

My teachers taught me how can I improve myself and how can I enhance my personality. Before I came here, I had no confidence even I never participated in any competition. 'Mare Papa' my first poem was printed in college magazine and after that I got an opportunity that I was selected a prefect and the treasurer of college student union. This college is a strength for me to achieve my goal.

Memorable and Inspirable college

Ms. Kavita
B.A. VI Sem.

"Remember, that life will never come again,
Life is valuable and unique,
so think different, Do excellent.

I Kavita, student of B.A. VI Sem., feels proud that I took admission in this college because this college gave me courage and hope to do my best. All the teachers of this college are friendly and deserve the highest respect. This college organize many types of competition that gave confidence, inspiration, hope and happiness. My three years in this college were very memorable and inspirable for me. I enjoyed several unique memorable moment in this college, when I won first price in essay writing competition on topic 'Digitalization in India'.

"Give me the wings of hopes. Let me Fly in the sky,
light the lamps of hopes, Let me climb on the high rocks"

I want to be an IAS officer in my life I learnt a lot from this college which will help to achieve my goal.

Preparing for Future challenges

Ms. Amani
B.Sc. VI Sem.

You can always find the sun within yourself if you will only search

The reason you go through something is for you to learn an important lesson and so was my three years of journey from S.D. college, which was actually an integral part of my growth.

After my high school, I wasn't confident enough for myself because I thought wherever a power leads to is all about destiny. But what I learned and realized is that man can achieve only for what he strives. This wasn't a two days change but I was improving consistently within these three years. The most important part is to develop skills within yourself. From small skill enhancement activities to the seminars and workshops usually developed my personality, creativity, broad thinking and self-confidence. The appreciation for my hard work and love that I received from this college, really motivated me for what I'm today and I will become tomorrow. I don't know what future holds for me but no matter where I will reach,. I won't stop growing, believing and striving hard to push myself to my goals. I am glad to be a part of this college. I did not say that I succeeded but I know there will come a thousand more opportunities now or then to learn, grow and make it. I know the road ahead is not going to be easy but I have prepared myself for challenges.

Talking about my future plan, let's not go so far. I'm presently preparing for Masters in Chemistry, and along with it, I would love to work for my Arts. I want to become a future calligrapher, photographer and lecturer. Also I want to run my online business for Arts and Crafts. Just waiting for the opportunities to come! I hope for the best from God.....

Dreams Becoming True

Ms. Simran Rathore
B.Sc. VI Sem.

Education is not just about going to school, college and getting a degree, it about widening your knowledge and absorbing the truth about life.

I truly believe in this quote and this depends on us that we just want a degree or with that some kind of knowledge too. According to me, whatever your future goals are, there is not a direct way to achieve it, there are so may steps in it. And this college is a very big step towards my better future.

I am pursuing B.Sc. from S.S.D.P.C (P.G.) Girls College, Roorkee and after then want to join Civil Services. Getting into civil service is a gruelling task. The motivation to succeed must be very strong indeed; for it is not an easy task by any measure to scale the stages of getting selected in Indian Government Service. This college arranges so may career counselling from time to time which makes my mind to choose right path. Because this is a very crucial time period for my career and needs a right guidance. And all the teachers are always there to help us, to motivate us.

Teachers makes a lasting impact in the lives of their students, Apart from syllabus they also talk to us, help us, where we got puzzled and always encourage us.

Education and knowledge is not just about completing syllabus, it's everywhere, in everything, this is what my college makes me believe. Even recently, college had arranged a programme in which they had invited IAS Nikita Khandelwal, Joint Magistrate Roorkee, To me it's like dream comes true. She is an idol for all IAS aspirants and is great to hear her and this can only possible due to this college for which I am very thankful.

Person with good mind, kind nature and intelligent thinking is great. And I feel blessed that I got to learn such beautiful aspects. Civil services needs this kind of persons only. They make me believe in myself that I can do this and I will do this.

Thanks to College Fraternity for my Best Days Here ...

Ms. Tanu Giri
B.Sc. VI Sem

Hello, Everyone. I am very happy to be a part of S.S.D.P.C Girls Degree college, I feel good in sharing a experience of three years with you. The Environment of college is very good and teachers are very helpful every time. Different types of activities are held in college to motivate students in achieving their goals in life.

Career guidance seminars are held from time to time where students come to know about different career opportunities. I also came to know about various careers in different field and I am sure it will help me to achieve my future goals.

Sports program are also held in college which is beneficial for the students who want to make their career in sports. At last, I would like to give thanks to our Principal who always motivate us, to our teachers who stand always behind us in every situations.

Marvellous Three Years !

Ms. Noor-e-Darksha
B.Sc. VI Sem

As I took the first step into college life, it was just like entering into land of ecstasy to me. The tiring school day were over and it was a new phase, the best phase of my life. In college, I made a lot of friends. walked through the corridors. set in classrooms, attended lectures, participated in various activities and enjoyed every bit there. I got the opportunity to be prefect and vice president of college student union. These things nurtured in me skills of leadership, teamwork, discipline. Now as I walked out of my college. I have learned to identify my mistakes and rectify them. I am a better person now, much more confident, filled with energy, ready to face new challenges of my life.

अपराजिता : 'जल संरक्षण' विशेषांक (2019-20)

महाविद्यालय की समस्त छात्राओं व शिक्षण एवं शिक्षणेतर स्टॉफ से अपराजिता **जल संरक्षण** विशेषांक सत्र 2019-20 हेतु लेख/रचनायें/कविता आमंत्रित हैं। इस संबंध में छात्राओं हेतु निर्देश निम्नवत् हैं-

1. रचनायें मौलिक/स्वरचित होनी चाहिए। प्रत्येक रचना के अंत में मौलिकता संबंधी प्रमाण-पत्र निम्न प्रारुप में लिखा होना चाहिए- 'मैं ..... कक्षा .... की छात्रा, पुत्री..... प्रमाणित करती हूँ कि ..... शीर्षक की रचना मेरी मौलिक/स्वरचित रचना है, अन्यथा सिद्ध होने पर परिणाम के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी रहूँगी।

छात्रा के हस्ताक्षर

2. रचना स्पष्ट रुप से हस्तलिखित या टंकित होनी चाहिए।
   टंकित रचनायें निम्नानुसार प्रेषित की जा सकती हैं:-
   हिन्दी - AA Text, Font Size - 14 अंग्रेजी - Times New Roman, Font Size - 11
   E-mail ID - ssd.degree@gmail.com
3. रचनायें हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत किसी भी भाषा में लिखी जा सकती हैं।
4. प्रत्येक रचना के साथ अपना पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ भी संलग्न करें।
5. प्रकाशन योग्य रचनाओं के चयन में सम्पादक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
6. रचनायें अधिकतम 30-12-2019 तक पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्यों में से किसी के भी पास जमा कराई जा सकती है।

सम्पादक

महाविद्यालय परिवार

डा० अर्चना मिश्रा – प्राचार्या

शिक्षिका वर्ग

कला संकाय

1. **डा० अर्चना मिश्रा,** एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
2. **डा० अनुपमा गर्ग,** एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी
3. **डा० अलका आर्य,** एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला
4. **डा० भारती शर्मा,** सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी
5. **डा० कामना जैन,** सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
6. **डा0 किरन बाला,** सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
7. **डा० अर्चना चौहान,** असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला
8. **सुश्री अंजलि प्रसाद,** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
9. **डा० सीमा रॉय,** प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
10. **सुश्री महनाज फातिमा,** प्रवक्ता अंग्रेजी (प्रबन्ध तंत्र)
11. **डा0 अन्जु शर्मा,** प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
12. **डा0 शिखा शर्मा,** प्रवक्ता संस्कृत (प्रबन्ध तंत्र)
13. **श्रीमती नेहा शर्मा,** प्रवक्ता अर्थशास्त्र (प्रबन्ध तंत्र)
14. **डा० मधुलिका मिश्रा,** प्रवक्ता राज. विज्ञान (प्रबन्ध तंत्र)

विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित)

1. **डा0 असमा सिद्दीकी,** प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
2. **डा0 उमा रानी,** प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
3. **श्रीमती पल्लवी सिंह,** प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
4. **डा0 संगीता सिंह,** प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
5. **श्रीमती शैली सिंघल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस
6. **श्रीमती दीप्ति नागपाल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर सांइस
7. **डा0 पारुल चड्डा**, प्रवक्ता, गणित
8. **सुश्री नमिता जायसवाल** प्रवक्ता, गणित
9. **डा0 ज्योतिका**, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
10. **श्रीमती प्रीति वर्मा,** प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
11. **सुश्री हिमांश,** प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी
12. **श्रीमति अंशू गोयल,** प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
13. **सुश्री अनुभा,** प्रवक्ता, गणित
14. **सुश्री शाजिया,** प्रवक्ता, जीव विज्ञान
15. **सुश्री दीपा पँवार,** प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी

एम० ए० (स्ववित्त पोषित)

1. **डा० शालिनी वर्मा,** प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
2. **श्रीमती मीनाक्षी कश्यप,** प्रवक्ता चित्रकला
3. **सुश्री परवीन,** प्रवक्ता राज. विज्ञान
4. **सुश्री सीमा रानी,** प्रवक्ता चित्रकला
5. **सुश्री चन्दा,** प्रवक्ता चित्रकला
6. **डा० स्वर्णलता मिश्रा,** अतिथि प्रवक्ता, चित्रकला

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

कला संकाय

श्री अनुज कुमार सिंघल, वरिष्ठ कार्यालय लिपिक
श्री नवाब सिंह, परिचर
श्री राजपाल सिंह, बुक लिफ्टर
श्री रामराज शर्मा, पुस्तकालय परिचर
श्री रविन्द्र कुमार, कला परिचर
श्री पंकज कुमार, परिचर
श्री तीरथपाल, परिचर
श्रीमती सुबलेश, परिचर
श्री आशीष बिड़ला, परिचर
श्री उमेश कुमार, परिचर
श्री राजेश कुमार, परिचर

विज्ञान संकाय एवं एम०ए० (स्ववित्त पोषित)

श्रीमति प्रीति शर्मा, पुस्तकालय प्रभारी
श्री निशान्त पंडित, लिपिक
सुश्री सुषमा देवी, पुस्तकालय लिपिक
श्री अजय अविनाश, कार्यालय सहायक
श्री विनोद कुमार, प्रयोगशाला सहायक
श्री शिवमंगल वर्मा, प्रयोगशाला सहायक
श्री संदीप भटनागर, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमती नीतू तायल, प्रयोगशाला सहायक
कु0 प्रिंयका, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमति सुषमा कटारिया, प्रयोगशाला सहायक
श्री गगन रस्तोगी, परिचर
श्रीमती नीलम, सफाई कर्मचारी
श्री तेलूराम, परिचर
श्री मुकेश, परिचर
श्री सत्यप्रकाश गौड़, परिचर
श्रीमती शर्मा देवी, सफाई कर्मचारी